सहस्रनाम

गुणवंत । सूर्यकुमार । बिजोदेवराजजयवंत ॥ २२ ॥ गुणचंद्रत्रीजो । चोथोपद्म
कुमार । एच्यारेबंधव । गुणवंतसुखकार ॥ २३ ॥ एच्यारेपरण्या । राजकुमरीसुकु
माल । धर्मनेपरस्तावे । जातनजाणेकाल ॥ २४ ॥ रायचूलनंदजी । सुतनेसुंप्यो
राज । पछेदिक्षालेइने । ध्यानधर्योसुविशाल ॥ २५ ॥ ध्यानशुक्लतजेमुनी । उपन्यो
केवलज्ञान । भवियणप्रतिबोधे । पांम्यापदनीर्वाण ॥ २६ ॥ निर्ग्रंथगुरुप्रणमी
ने । ढालकहीमनरंग । व्रतदशलक्षणीनी । कथासंक्षेपेंउमंग ॥ २७ ॥ इतिद
शलक्षणीलघुकथासमाप्तः ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ अथसोडशकारणव्रतक
थालपुलिख्यते ॥ रागसवाझोधरनि ॥ वीरजिनेश्वरचरणनमि । गौतमप्र
णमीसु । सोलहकारणव्रतसार । तेनीरासकरीसु ॥ १ ॥ जंबूद्वीपेभरतक्षेत्र । मा
गधदेश । राजग्रहीजेनयरीसार । हेमराजधनेश ॥ २ ॥ विजयासुंदरीनाम । प्रो
हितजीमसर्म्म । प्रीयदत्तातसनारिसार । पुत्रिगुणहिन ॥ ३ ॥ कंकालभैरवरोग
सहित । अतिरूपविहीण । दानभोगसुखरहितसार । दिशेअतिदिन ॥ ४ ॥ आ
हारलेवामुनीवरएक । आव्यातपवंतणी । आहारलेइमुनीवनचाल्या । नीर्मल

५५ गुणग्यानी ॥५॥ गोरवे बेठी ते आपणो ॥ मुनि परते मुकी ॥ राजा ये चीरलूइ करी ॥ त
६६ रागाली दिधि ॥६॥ निंद्या घणी स्व आप करी ॥ मुनी पासे लेइ जावे ॥ अंबारीये
तप कीयो ॥ आण आण आराधे ॥७॥ इणी कुले ता रोज म्मजवो ॥ पूर्ववी देह ॥ सो
लह कारण व्रत करे ॥ तीर्थंकर होसे ॥८॥ वचन सुणी पाय नमी ॥ स्वामी कहो
ने विचार ॥ भाद्रवा माघ ने चैत्र माझ ॥ करो त्रण वार ॥९॥ एकांतर एक मास करो
॥ शियल पालीजे ॥१०॥ परहरी घर वेपार सब ॥ मन शुद्ध करीजे ॥ दृढ समकीत
थीर पालिये ॥ संका न विकीजै ॥११॥ दर्शन ग्यान चारित्र ॥ तेनो विनय करीजै ॥ शी
ल व्रत दृढ पालिये ॥ सब दोषन टालो ॥१२॥ ग्यान निरंतर सार पढो ॥ बहु अंग वि
चार ॥ तव नव रोग शरीर मांहि ॥ वैराग्य धरीजे ॥१३॥ आहार दान तप बार भेद ॥ श
क्ति नु पालीजै ॥ मुनिवर साधु समाधि करी ॥ उपगार करीजे ॥१४॥ दश विधि वैया
वृत्त करो ॥ नेम पालीजै ॥ अर्हंत देव भक्ति करो ॥ सब दूजा छांडो ॥१५॥ आचार
ज गुरु भक्ति करो ॥ भाव प्रतिपालो ॥ शास्त्र घणा मुनी जैन तणा ॥ तेनी भगति करीजे
॥१६॥ परवचन आंणी भगति करो ॥ निश्चे आणीजे ॥ छह आवश्यक ते हत णो ॥

अल्पबुधीयी रचना करी ॥ क्षेमा करो सज्जन चीत धरी ॥ जो सुणे भावे नरनार ॥ ते
ह घरे होय मंगल च्यार ॥२४॥ इति श्री भट्टारक श्री धर्मचंद्रानुचर पंडीत गं
गादास विरचीते व्रतकथा समाप्तः ॥छ॥५॥ ॥छ॥ ॥ अथ दशलक्षणी
व्रत कथा लघु लिख्यते ॥ श्री जिनपद प्रणमीने ॥ व्रत कथा कहु सार ॥ दशल
क्षणी केरी ॥ सुणो भवियण सुखकार ॥१॥ धातकी खंड मांहि ॥ नगरी वसे गुणधा
र ॥ प्रीयंकर राजा ॥ राणी प्रीयंकर सार ॥२॥ तश्यां कुख उपनी ॥ मृगांकलेखा गुण
गेहा ॥ बुधाननी पुत्री ॥ कमलसेना नामे तेह ॥३॥ गुणशेखर श्रेष्टी ॥ बेटी छे गुण
धाम ॥ जिनधर्म करंती ॥ मदनवेगा तश नाम ॥४॥ कोटवाल वसे तिहां ॥ लक्षण द
गुणवंत ॥ तेहनी एक बेटी ॥ रोहिणी नाम वखांन ॥५॥ चारा कुमरी ॥ सदियर जइ
सुखखाण ॥ समकित व्रत पाले ॥ माने श्री जिन आंण ॥६॥ एक दीन ते कुमरी ॥ रम
वा वन मुझार ॥ तिहां दिठा मुनिवर ॥ अशोक वृक्ष तले सार ॥७॥ आनंदी कुमरी ॥
नमोस्तु कियो मन रंग ॥ सुणी धरम वखानी ॥ पूछे कुमरी उछरंग ॥८॥ कहो स्वामी
अमने ॥ अस्त्रिलिंग होय छेद ॥ मुनि कहे सुणो बाली ॥ कहु दशलक्षणी भेद ॥

धधं ९ भाद्रवपदमासे ॥ शुक्लपंचमिजाण ॥ सिद्धासनउपरी ॥ थापो श्रीजिनभाण
६५ ॥ १० ॥ पछे यंत्र आणावो ॥ हेमरूपानो चंग ॥ दशपाखडी लखीये ॥ कहु सुणो मन
रंग ॥ ११ ॥ पेहलो जे लक्षण ॥ उत्तम क्षमा दिजेह ॥ बिजो मार्दवनो ॥ त्रिजो आर्जव ए
ह ॥ १२ ॥ सत्यलक्षण चोथो ॥ सौच संयम छठो सार ॥ सातमो तप जाणो ॥ त्याग आठ
मो सुखकार ॥ १३ ॥ आकिंचन नवमो ॥ ब्रह्मचर्य भवतार ॥ दशलक्षणकेरी ॥ द
शपाखडि लखो सार ॥ १४ ॥ जिन आगल कीजे ॥ पूजा अष्टप्रकार ॥ पछे यंत्र पूजी
जे ॥ दशलक्षणी गुणधार ॥ १५ ॥ एकांतर कीजे ॥ दन दशनो परमाण ॥ शियल मन
शुद्ध पालो ॥ जिन सुखखाण ॥ १६ ॥ परआरंभ छंडो ॥ रागद्वेष कोहर ॥ दशावर
स करो व्रत ॥ जिम पामो सुखपूर ॥ १७ ॥ पछे उजवणो करी ॥ अंतसमाधिधीर ॥ ब्र
तने परभावे ॥ चारुं मरी मनधीर ॥ १८ ॥ तिहांथकी ते चविने ॥ छेदि स्त्रीलिं
ग ॥ महाशुक्रस्वर्गे ॥ देवा जवा मनरंग ॥ १९ ॥ तिहां सुख भोगवीने ॥ देवदेवी म
नोहार ॥ तिहांथकी ते चवीने ॥ माळवदेशमझार ॥ २० ॥ उज्जेणी नगरी ॥ भूपलभ
द्र तिहां राय ॥ लक्ष्मीमति राणी ॥ धर्म करे मनलाय ॥ २१ ॥ तेह खेचरपमा ॥ तेहेव

थाय ॥ सजन कुटंब मलीया सहु ॥ सासूचरणां नमीया बहु ॥ ९६ ॥ सकल पु
रजन आवी मल्या ॥ श्रीजिन नामे पातक टल्या ॥ धवलगेह कीधा रूवडा ॥ जाणे
सुंदर रतने जड्या ॥ ९७ ॥ सोहे मान खणमालीया ॥ जलमल नीमुकी जालीयां ॥
सुंदर रचना पोहलापाट ॥ चीत्रसाल दीठे लाभ वाट ॥ ९८ ॥ करे भोगविधी वीश्व
नाथला ॥ श्रीजिनपद पूजे निर्मला ॥ सुखे रहे ते सहु परीवार ॥ दान शील तप भाव
अपार ॥ ९९ ॥ ईम करतां व्रत पूरो हवो ॥ उदीयापण मांड्यो अतीनवो ॥ स्थापचे
श्रीजिनप्रसाद ॥ मेरुसीखर शुं मांड्यो वाद ॥ १०० ॥ सीखरबंध सुंदर दीसंत ॥ ध्वा
जादंड गगने लहकंत ॥ मध्ये घंटा घमघम करे ॥ सुणतां सहुना मन हरे ॥ १०१
॥ मारस्तंभ वेदी चतुरंग ॥ गोपुर तोरण अतिहि उत्तंग ॥ कनककलश सीहासन करी
॥ मध्ये श्रीजिनप्रतिमा धरी ॥ १०२ ॥ तेडी सद्गुरु अतिगुणमाल ॥ करी प्रतीष्टा पं
चवी शाळ ॥ संघ चतुरविध तेडी सार ॥ दानमान दीधां सुखकार ॥ १०३ ॥ झाल्लरता
लकलसशृंगार ॥ पीगाणी अतिछे मनोहार ॥ नवनव वीधि उपकरण करया ॥
सुंदर श्रीजिनभुवने धर्या ॥ १०४ ॥ अन्नऊषधवजदान जदीया ॥ नवपुस्तक

ध२ नावे आपीया । जनयदान दीधा जती चंग । इह विधि उद्यापण उतंग ॥ १०५ ॥
६४ वाजे ढोल ताल नो झणकार । जिनसासन वरतो जयकार । यथाशक्ति नवीय
ण तमो करो । तिहथी घोर नवा बुधि तरो ॥ १०६ ॥ दान भाव बुधी नीत करो । मुनि
देखी बहु भाव जु धरो । येणि काल सुख पामे सोय । स्वर्ग पोहो साते सक्ज कोय ॥
१०७ ॥ कोय कन वे वे मधे वली । कोय कपाच नव मनरवी । कर्म खपीने मुक्ति
जसे । आवागमन थी रहीत जयसे ॥ १०८ ॥ सुख संपति तिने लहेसे ने घणु । इह वो
फल रवीवार जन तणु । इम जाणी कीजे रवीवार । जेहथी पामो सुख अपार ॥ १०९ ॥
। देशावराड विशेषी णगार । कारंजा मधे गुणाधार । वज्रनाथ मंदीर सुखकंद ॥
नम कुसम नामे नवरचंद्र ॥ ११० ॥ मूलसंघ मति वंत महंत । धर्मचंद्र सुरवरअ
तिसंत । तस कमल दल भ्रतिर सक्रंप । धर्मभूषण पद सेवे नृप ॥ १११ ॥ वीशाल
कीर्ति विमल गुण जाण । जिनसासन पंकज प्रगट्यो भाण । ततपद कमल दल
मित्र । धर्मचंद्र घृत धर्म पवित्र ॥ ११२ ॥ तिह नो पंडीत गंगादास । कथा नवी याण
करी उलास । ग्रक सोळासे ते पन्नर साल । भदव्य खाड वीज रवीवार ॥ ११३ ॥

रलहे । इम जाणी सज्ज पुन्य जकरो । मन वंचीत फळ पुन्ये वरो ॥ ७७ ॥ दुहा ॥ पुन्ये म
न वंछीत फले । पुन्ये स्वर्ग निवास । पुन्य सूर सेवा करे । लक्ष्मी होवे घर दास ॥ ७८ ॥ पु
न्ये रीपु पीडे नाही । पुन्ये वंचीत भोग । पुन्यथकी पीड्या टले । पुन्ये सुत संयोग ॥ ७९ ॥
। मात तात इम चींतवे । बहु धन आयो हाथ । मात क्षेत्र मां खरचिये । तो आवे निज
साथ ॥ ८० ॥ चोपाई ॥ इम चींती प्रसाद जकरयो । मधे श्री जिनबींब जधरयो । बिंब
प्रतिष्टा कीधी सार । खरचे द्रव्य नेला ने पार ॥ ८१ ॥ तेडीया चोवीध संघ सुचंग । मान मा ३)
न दीधा मन रंग । नव कोई द्रष्ट विचारे चीत । येदाळीद्र ने केहथी वीत ॥ ८२ ॥ नृपती
आगळ चूगली करी । मात तात नक आण पाधरी । पुछे नृपति साचो कहो । कवण
तुम्ह कुण स्थान करहो ॥ ८३ ॥ नवगणधर नि संवीत थई । सज्जवा नृप आगल
कही । हरख्यो नृपति धरी आणंद । धनधन स्वामी पार्श्वजिणंद ॥ ८४ ॥ धनधन व्रत र
वीवार जन तणो । देखी राय आचंभो घणो । नृपे गणधर ने तेणी वार । दिधी कुमरी
रूप अपार ॥ ८५ ॥ मोटा मंडप घाल्या बाहार । चंद्रोपक दीधा विस्तार । पंच शब्द वाजे
बहु नाद । गाये कामीनी कोकील साद ॥ ८६ ॥ चोरी कनक कनणी चीतरी । इंद्र सभा जि

४२ मरचनाकरी ॥ तरीयातोरणझलहलकरे ॥ स्वर्गदेवजोवाउन्नरे ॥ ८१ ॥ राजांये
६२ दिधो कन्यादान ॥ नाचेपात्र करे बहुगान ॥ वरकंन्यापरणपातेणीवार ॥ बंदीज
नकरे जयजयकार ॥ ८८ ॥ राजादांन करे मनरळी ॥ रतनजडीत सोनासांकळी
॥ कानेकुंडलकंठेहार ॥ आप्या सुंदरशोलसीणगार ॥ ८९ ॥ कंचनथालका
चोलाघणा ॥ बहुविधिनाजनरूपातणा ॥ रथहाथीपालाखसवार ॥ नेजाआयु
धनेदलतार ॥ ९० ॥ दासीदासददामादीध ॥ नलीपरेनावकुंवीबहुकीध ॥ रंगध
रीसाकेतारहे ॥ रायतणुसन्मानजलहे ॥ ९१ ॥ सुखमांहीदीवसगयाबहुवही
॥ चीतवातनृपतिआगलकही ॥ आमोजासुनगरआपणे ॥ सुणीवातराजाईम
तणे ॥ ९२ ॥ रहोतसेअसलनगरमुझार ॥ आणोसजकुटंबपरीवार ॥ कहेकुमर
नृपचीतधरी ॥ येकवचनअम्हकेराकरो ॥ ९३ ॥ हरखीनृपदीयोबहुदांन ॥ चतु
रंगसेन्यामनमान ॥ मातावाद्यनोघोषजकीयो ॥ कोसएकनृपसाथेगयो ॥ ९४
॥ सारीसीखपुत्रीनेकही ॥ तेटीराजाचाल्योसही ॥ सेन्यासहीतघरेउलास ॥ आ
व्याबाणारसीपुरमाहे ॥ ९५ ॥ मातपीतानेनमीयापाय ॥ आनिआनंदनगरमां

ईमजांणीनिंद्यापरीहरो ॥ श्रीजिनवांणीनीश्रद्धाकरो ॥ ९५ ॥ दुहा ॥ पापफले
लक्ष्मीगई ॥ दीनहीनदुखीयाहोय ॥ कर्मतणीकटलागति ॥ जीवविचारीजोय
॥ १ ॥ जेसूतानिजमंदीरे ॥ नवखणउपरजेह ॥ तापडीतनवजानता ॥ भूईपरलोटे
तेह ॥ २ ॥ नवनवावस्त्रजेपेहरता ॥ अपारशोभंतसीणगार ॥ तेएककोपीनजर
अया ॥ हींडेद्वारोद्वार ॥ ३ ॥ पंचामृतनभोजनभलु ॥ करतानिजमनरंग ॥ तेदुखक
रीपेटजभरे ॥ कर्मतणोपरसंग ॥ ४ ॥ ईमजांणीमिथ्यातजो ॥ धरोएकजिनधर्म ॥ गं
गदासकहेजेहथी ॥ पामोसिवसुखशर्म ॥ ५ ॥ पुत्रसातमनचिंतवे ॥ नरजोवन
नववेश ॥ सहुदेशसंपतगली ॥ विपतपडेपरदेश ॥ ६ ॥ ईमचिंतविसहुआवी
या ॥ मातपीतानेपास ॥ अमेजाउपरदेशडे ॥ तमोरहोनिजवास ॥ ७ ॥ मातपितावि
हुदुखधरे ॥ कांयेनवीसीझेकाज ॥ हाहादेवदयारहित ॥ येसुकीधुआज ॥ ८
॥ ईमविलापकरेघणा ॥ तवगणधरमसार ॥ कर्मकहेतमनाचीये ईहसं
सारमुझार ॥ ९८ ॥ चौपाई ॥ कर्मतणीगतिकहीनजाय ॥ कर्मेपीड्याराणारा
य ॥ कर्मेरामचंद्रवनगया ॥ कर्मेपांडवसहुहारीया ॥ ९९ ॥ माटेमायविचारीजो

११ य॥ कर्मयकीवलियोनहीकोय॥ ईमसमझावीचाल्याम्रात॥ नगरीअयोध्या
४३ आयारमात॥ ५०॥ तीहांश्रेष्टिजिनदत्तजवसे॥ देखीसज्जनमनमनहसे॥ जईने
घ्रतेहनेसही॥ कथासहुतेआगलकही॥ ५१॥ दयावंतश्रेष्टितेचंग॥ सहुबंध
वरारमाममनरंग॥ कामकाजतेहनेघेरकरे॥ दुखेसुखेनिजपेटभरे॥ ५२॥ एम
मंधरहीत्रोईणगाम॥ सुणेनवीयणअवरनीराम॥ मातपीताहोतानिजगाम
॥ अवधीवंतमुनीआव्यानाम॥ ५३॥ मतीसागरघरगुणसुंदरीतदा॥ तीनपुत्रहुणा
देईवांद्यामुदा॥ पूछेमुनिनेदुखनोमर्म॥ उदयआगतिआव्याकणकर्म॥ ५४॥ के
मीकीधेपुर्वीपाप॥ केसाधूनेकर्योसंताप॥ केमीअणगलजलवावर्यो॥ केमी
रात्रीभोजनकर्यो ५५॥ केमीदानदेताराखीयो॥ केमीजूठवचनभाखीयो॥
केमीशीलखंड्योनीर्मलो॥ केमीव्रतपाल्योनहीभलो॥ ५६॥ केमीलोपीजिनेआ
ज्ञाणा केहमीलोकनेपीड्याप्राण॥ केमीसातवज्ञाणसेविआ॥ केहमीघ्रतमां
तेलभेलीया॥ ५७॥ केमीजिनवचनराख्योनहीरुदे॥ हीनयईमुनीआगलवदे
॥ सुणीवचनगुरुबोल्यावाण॥ ढनर्निदाकीधीधनहाण॥ ५८॥ बीजीवारढत

लिधोसार॥ विधीपूर्वककीधोरवीवार॥ तेहथीदुखदालिद्रजगयुं॥ पूरवनीपेरी
सहुधनल्हयुं॥ ५९॥ हवेकथासुणोविरमात॥ जीहांरहेसेवंधवसात॥ एकदी
वसगणाधरवनगयो॥ घासलेईनिजघरआवीयो॥ ६०॥ भातीकहेभोजनमागी
युं॥ दात्रडावनातेनवीदीयुं॥ अस्थानकमुक्योनिजदंत॥ तीहांआयोगणाधरगु
णवंत॥ ६१॥ दत्तउपरवेठाणोसाप॥ कुमरकहेकोणआयोपाप॥ मनमांझूरेदु
खवबहुधरे॥ नयणोथकीजलधाराझरे॥ ६२॥ चिंतवेकुमरहवेसुंकरु॥ दत्तवि
नाजोपाछोफीरु॥ तोकहेचोरसहुपरीवार॥ वेओढ्मेदत्तनीरधार॥ ६३॥ सज्जा
उटंबदीसेअतिघणा॥ वीपतपडेनहीकोयआपणा॥ जबदालीद्रआयोघरमा
ही॥ गुणमोडीसहुअवगुणथाये॥ ६४॥ कलाकुशलचतुरहोय॥ लक्ष्मीविनान ना
वीजाणेकोय॥ जोधनवंतमंदमतिहोय॥ तोगंभीरकहेसहुकोय॥ ६५॥ लक्ष्मी
वंतजोकालोरहे॥ शामरुपसुंदरसहुकहे॥ सकलकलानेलक्ष्मीपास॥ लक्ष्मी
वीनानरहोयनीरास॥ ६६॥ इमविलापआक्रंदजकरे॥ वलीफणीपतिआगल
उच्चरे॥ आपोदत्तवेनहीतरखाय॥ संकटदुखसह्युनवीजाय॥ ६७॥ इमकहीने

५३ लाग्योपाय ॥ छोधासनकंपारवधाय ॥ अवधीज्ञानेजाणोआप ॥ जीनेसेवकपामे
६२ संताप ॥ ६७ ॥ पदमावतीतेडीततकाल ॥ दुखधरेकेगणधरबाल ॥ एहनोपीताव
णारसीगाम ॥ पार्श्वनाथेपूजेअभीराम ॥ ६८ ॥ श्रीजिननोथेसेवकसही ॥ मोटेदु
खनीवारोजई ॥ तवपदमावतीआवीतीहां ॥ गणधरदुखपामेछेजीहां ॥ ७० ॥ कन
कदंतवछीलिधोहार ॥ पंचरत्नमयेअतिजलकार ॥ पार्श्वनाथनीप्रतीमाननली ॥
गणधरनेआपीनीमली ॥ ७१ ॥ पूजोप्रणमोएहनापाय ॥ एहथीरोगशोकदुखजा
य ॥ जईकरोमनवंचीतभोग ॥ सुखेरहोपरजनसंजोग ॥ ७२ ॥ हरखेकुमरगयोनि
जगेह ॥ वातकहीसहुआमातेह ॥ केकहेचानयेपरधनजेह ॥ केहनोचोरीआण्या
एह ॥ ७३ ॥ जोजाणसेनगरनोराय ॥ खंडखंडकरेतवकाय ॥ तवगणधरवृतांत
जकह्यो ॥ सकलत्र्यातमाचोलह्यो ॥ ७४ ॥ धनधनकुमरतहोगुणवंत ॥ तुमतणा
पुन्यनोनावेअंत ॥ होमाकरोअह्वउपरवाळ ॥ करोकुटंबतणोप्रतीपाल ॥ ७५ ॥
वांकतुह्यारोरतिनहेएक ॥ वीपतपडेतीहांकेसोविवेक ॥ बहुगणधरनीस्तुतीक
रे ॥ पूजेजिनआनंदजधरे ॥ ७६ ॥ सकलत्र्यातमसुखेरहे ॥ दुखवातनविसपनांत

३ ॥ वाणारसीनगरीतीहांसार ॥ जांणेस्वर्गपुरिश्याकार ॥ ३ ॥ प्रजापालतेनगरेराय
॥ पूजेश्रीजिनवरनापाय ॥ पुण्यनायमारगआचरे ॥ प्रजातणुप्रतिपालणकरे ॥
४ ॥ मतिसागरतिहांश्रेष्टीवसे ॥ सुंदरसकलकलागुणनिलो ॥ नावैश्यवदसत्र
तआचरे ॥ सद्गुरुभक्तिनलीपेरकरे ॥ ५ ॥ कोटिध्वजतेसहुसुजाण ॥ निजकुलपं
कजप्रगट्योभांण ॥ गुणसुंदरीतेहनेघरेसती ॥ रूपेजाणेरंभारति ॥ ६ ॥ सातपुत्रते
हनेघरेहुवा ॥ जांणेदेवकुमारअभीनवा ॥ प्रथमपुत्रगुणवानजकह्यो ॥ बीजोसु
तगुणराजलह्यो ॥ त्रीजोसुतगुणदेवमहंत ॥ गुणकरचोथोअतिबलवंत ॥ पंच
मोगुणसुदरसनलो ॥ छठोगुणजेसत्तनिर्मलो ॥ ७ ॥ गुणपुत्रपरणाव्याअतिचंग ॥
भोगविलासकरेमनरंग ॥ सप्तमगणधरसुंदररूप ॥ बुधवंतवचनअमृतकूप
॥ ९ ॥ वीजचंदसमवाधेबाळ ॥ अनलक्षणेनेअंगसुकमाळ ॥ सातवरसनोकुमर
जथयो ॥ सहुकुटंबमनहरखजभयो ॥ १० ॥ श्रुतमुहूर्तजोईअनदीने ॥ नेणवामु
कोपंडितकने ॥ ककारखडीबाराखडीसार ॥ अंकगणीतनोलाधोपार ॥ ११ ॥ आ
करणादिकभणीयोबहु ॥ जोतिषरत्नपरिक्षासहु ॥ हीरानेत्रनेकरपल्लवी ॥ सर्व

कलासीरखोअगनिनवी ॥ १२ ॥ थोडादिनमांनणीयोघणु ॥ एमज्ञफलपुरखनव
नणए ॥ पूर्वीदिधुशास्त्रजदान ॥ तेहथीपामोएहवुज्ञान ॥ १३ ॥ शास्त्रदानकीजेइ
मजांण ॥ जेहथीलीयेवीवाधान ॥ एहकथाएहस्त्थानकरही ॥ अवरकथासां
नलजोसही ॥ १४ ॥ सहस्रअठचैतालाजीहां ॥ गुणसागरमुनिआआतिहां ॥ सु
णीहरखपाम्यानरनाथ ॥ वंदनचाल्यापरजनसाथ ॥ १५ ॥ नणप्रदक्षणादेईराय
॥ पूजाश्रीमुनिवरनापाय ॥ धर्मवृद्धिमुनिबोल्यावाण ॥ सांभलनाउपजेसुखखा
ण ॥ १६ ॥ मुनिवरेधर्मामृतसार ॥ यतिश्रावकनाधर्मविचार ॥ समत्रयरखोही
तकार ॥ दयालक्षणयुतधर्मविचार ॥ १७ ॥ कीआत्रेपनकरोवृतचंग ॥ जेहथी ॥
पामोसुखअनंग ॥ मुनीनावचनसांभलीसज्ञ ॥ आनंदीयामनमधेबज्ञ ॥ १८ ॥
बज्रवेरसाथगुणवंती ॥ मुनीवरनीकीधिवीनंती ॥ कोयीएकवृतआपोगुणवंत
॥ जेहथीलहीयेसुखअनंत ॥ १९ ॥ तवमुनीवरआप्योशविचार ॥ श्रीजिनपार्श्व
तणोमनोहार ॥ मासअखाडथकीकीजीये ॥ अथवाश्रावणथीलीजीये ॥ २० ॥
शुक्लपक्षेरविकेअंतमदीने ॥ तीहांथीकीजेनवअनमने ॥ प्रथमवरषनवप्रोष

हसार ॥ लवणरहितआंबलसुखकार ॥ २१ ॥ एकलठाणत्रीजेकरो ॥ कांजीहार
चोथेआदरो ॥ पंचमवर्षेतकसुजान ॥ लवणरहितएकासणोविख्यात ॥ २२ ॥
नीगोरसाकिजेसातमे ॥ लुखोआहारकरोआठमे ॥ नवमेएकासणोवखाण ॥
उत्तकष्टपणएविधिजांण ॥ २३ ॥ नववरसकीजेमनोहार ॥ अथवासज्ञउपवास
उदार ॥ अथवाएकलठाणसज्ञकरो ॥ अथवाएकनुक्तीआदरो ॥ २४ ॥ अवरनेट
कज्ञतेसुणो ॥ एमंघलीविधिलागटनणो ॥ येकासीरविवारविशाल ॥ किजेनाव
धरीश्रकमाल ॥ २५ ॥ वृतदीवसधंधोपरिहरो ॥ श्रीपार्श्वनाथनीपूजाकरो ॥ पंचा
मृतधारासुविशाल ॥ नणीयेअनअष्टकजयमाल ॥ २६ ॥ कणलणफलदीप
कसाथ ॥ ववालोनवीयणनीजहाथ ॥ नाळीकेळअंबेफळसार ॥ नवफलआणी
अतिसुखकार ॥ २७ ॥ नवश्रावकघरदीजेदांन ॥ प्रतिवर्षेविधिपरमांण ॥ तेहदी
नजवीयणआचरो ॥ क्षेमावृतकोमलमनकरो ॥ २८ ॥ भोलेनावेससआखीये ॥
संजमसाचोपणराखीये ॥ तपकीजेचौवीधिनुदान ॥ दीजेपात्रकरीसनमान ॥
२९ ॥ संख्यावृतसाचानुसार ॥ ब्रह्मचार्यपालोनवनार ॥ वीकथातजोजिनस्तुति

३० नणो॥ थीरचीत्र नवकार जगणो॥३०॥ पारणो पात्र दान दीजीये॥ नवबर भईणी
६० पेरे कीजीये॥ व्रत पुरे उदीयापण करो॥ नही तो बमणु व्रत आचरो॥३१॥ इह
अ की सुख संपत्ति होय॥ दुखदालीद्र न पीडे कोय॥ अनुक्रमे पामो सुख घ
णा॥ फळे मनोरथ निज मन तणा॥३२॥ व्रत आरंभ मा दिक हो॥ श्री जिन ना
ये मुख थील हो॥ तब गुणसुंदरी जोडी हाथ॥ व्रत लीधो निज बेहवेर साथ॥
३३॥ मुनीवांदी घेर आवीया सही॥ ये विधी सहु कुटंब न कही॥ तब मती सागर
ई मत्त्वरे॥ कनी कफळ कीम पातक हरे॥३४॥ व्रत निंदा कीधी अति बहु॥
ते पापे धन चाल्यो सहु॥ गया कचोला कंचन तणा॥ जडी तजडाव आनृपतणा
घणा॥३५॥ मोती हीरा चूनी लाल॥ गई सकल संपत्ति थाल॥ हार चीर पीतांब
रसार॥ गयी मुद्री कान वग्रार हार॥३६॥ गया चूवा चंदन ना भोग॥ पान फुलनो
पड्यो विजोग॥ गोरस पंचामृत रस सोम॥ दासी दास नदीसे कोय॥३७॥ देशे
देश होना वेपार॥ ते नहीं दीसे ये कल गार॥ गयो सगां तणो सनेह॥ दीनदीन
दाझे दुःखे देह॥३८॥ आन वस्त्र थी रहित थया॥ सहे कष्ट न वी जाये कह्या॥

पूजा तस्य शांतिर्भवेत्

र्भुवः स्वाहा॥ स्वः स्वाहा॥ ॐ र्भूर्भुवः स्वस्वधाय स्वाहा॥ ॐ इंद्र देवाय॥ स्वगा
परिवृताय॥ इदमर्घपाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं अक्षतं स्वस्तिकं यज्ञ
भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा॥ यस्मा
यें क्रियते [redacted] सदा॥ शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्वकार्येषु सिद्धि
दः॥१॥ इंद्र आव्हानन॥ एवमग्न्यादिभिः प्रयोज्यं॥ दिक्पालार्चनं॥२॥ अर्घस्व
स्तिकं यज्ञभागं चरुं केशं भूर्भुवः स्वस्वधा स्वाहा चेम त्रिमंत्रितैः प्रतिदिशं संत
र्पयामः क्रमात्॥३॥ दिक्पालानां पूर्णार्घः॥ सद्योजातिसुगंधेन स्वच्छेन बकुले
न च॥ स्नपनं क्षेत्रपालस्य तैलेन प्रकरोम्यहं॥ ओं क्षेत्रपाल जिनप्रतिमांक
पाल दंष्ट्राकराल जिनशासन रक्षपाल तैलाहि जन्मगुड चंदन पुष्प धूपैर्भोगं
प्रतीच्छतु जगदीश्वर यज्ञकाले॥३॥ क्षेत्रपालाय यज्ञेस्मिन्नेतत्क्षेत्राधिरक्षि
णो बलिं ददामि दिक्प्वस्यैर्वेद्यां विघ्नविनाशिने॥ ॐ आं क्रों अत्र स्थ क्षेत्रपाल
आगच्छ संवौषट् तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः मम सन्निहितो भव भव वषट् [illegible]हा॥
स्वाहा॥ इति क्षेत्रपालार्चनं॥७॥ श्रीमद्भिः सुरसेनिर्मलविमलैः पुण्याश्रया

५० स्याहृतैः शीतैश्चारुघटार्पितैर्बहुविधैः संतापविछेदकैः ।नृत्योद्रेकहृहेश्वरा
जः प्रग्रामनैः प्राणेपमेप्राणिना ।।तोयैर्जैनवचोमृतानिश्रयितिः संस्नापया
मो जिनं ।।जलस्नपनं।।१।।देवानीकैरनेकैः स्तुतिमुखरमुखैर्वीक्षितायानि
ह्वैः शक्रेणोद्धैः प्रयुक्ताजिनवरणयुगे चारुचामीकरान्नाधारांभोगह्विनी
स्तुप्रचुरवररसस्यामलाबोविन्रूसैन्त्र्या कल्याणकाले सकलकलिमलद्वा
लनेनीवदद्भा ।।२।।इक्षुरसस्नपनं।।गंडिडीभूतस्तडित्गुणप्रगुणयाहेमद्रवा
स्तगध्यर्चां वैचद्यं पकमालिकां रुचिरया गोरोचनापिंगया हेमाद्रिस्थलस्द्र्भ
रेणुविसरद्वातूलिकालीलया ।।जांघीयोद्धृतधारया जिनपतेः स्नानं करोम्या
दरात् ।।३।।घृतस्नपनं।।मालातीर्थकृतः स्वयंवरविधौ द्विसापवर्गश्रियाना
स्थेयं स्फुनगास्पहारलतिका प्रेम्णातयाप्रेषिता वर्तनस्य समीप्यतो विनिहिता
द्वेतिशंकां दृता कुर्म्माः शर्मसमृद्धये भगवतः स्नानं पयोधारया ।।४।।दुग्ध
स्नपनं।।स्वक्वाथानमिदं समदमथवातस्थैवनर्तुर्यशोराशीकृतमुतस्वच्छा
वविशदं वा श्वेतनाय्याः स्मितं ।।श्राहोस्वित्सुरपुष्पदृष्टिरियमस्याकारमात्र

भिः दृष्ठ्रुभिरपि फलैरेभिः शीघ्रं यजामि ।।४।।जंबूद्वीपे नंदीश्वरारामे स्वयमभूतनु
जोधूमभस्ञापयेयुर्जनविनावाहूतोवान्नवत्रयनिदया नाकिकश्लेस्संगेहात
ह ।।श्यानीयास्मिंस्तु वीये मितममलतमेत्रैत्रिमेस्नानपीठ मज्ञावस्थापनार्हस्य
तिष्ठतिमधुनायसृथयस्त्रीसमेतं ।।२।।यः श्रीमदैरावणवाहनेन निवेशितो नेको
विधृतातपत्र ।।ईशानशक्रेणसनत्कुमारमाहेंद्रसच्चामरवीज्यमानः ।।३।।
ग्राचारादिभिः स्नादिभिरप्सुदारं देवीभिराप्तोज्वलमंगलाभिः ।।सुरस्फुरंतीभिरिवा
प्सरोभिरगेनटंतीभिरुपास्यमानः ।।४।।शेषैस्तु शक्रैर्जयजीवनंदप्रसीदशाश्व
स्तिपत्तपारीन ।।इत्यादिवाग्गुल्वणितप्रमोदैः मुकुजः प्रस्तैरुपहार्यमाणः ।।५
।।सुरैः स्फुटास्फोटितगीतनृत्यवादित्रहास्योत्सवल्गितानि ।।सप्तांगलाश्री
र्दलस्तुतीनिस्वैरं सृजद्भिः परिधार्यमाणः ।।६।।अहो प्रभावस्तपसां सहस्रमपि
तु जिह्वाप्रतिमा सपीह्वः ।।यस्यैष साक्षात्तु च मीशतोस्मिन्नत्रैवनादिस्वयमा
त्मबंधुः ।।७।।सविस्मयानंदमितिब्रुवाणैरालोक्यमानो निमुखागतैः स्वे।देवा
धिभिः स्पर्धितदेवयुग्मैर्नगोपायुग्मैरपि सेव्यमानः ।।८।।प्रदक्षिणार्द्धत्रजनेत्रनी

त्वा पूर्वोत्तरस्यां दिशि मेरुशृंगे। निवेश्य तत्र मणिशिलोद्धपीठे क्षीरोदनीरैः स्न
पितः सुरेंद्रैः ॥ ९ ॥ तं देववंदेवं जिनमद्य जातमप्यस्थितं लोकपितामहत्वं ॥ इमं
निवेश्यात्र वेदिपीठे प्रागुक्तमास्मिन्विधिना निषिंचे ॥ १० ॥ ॐ निस्तुष निर्वाण
निर्मलजलार्द्रशालेयधवलतंडुलैर्लिखिते श्रीकामश्रीनाय श्रीवर्णप्र
तिमास्थापयामि शुद्धैः ॐ ऊर्ध्वं अर्ध्वं शांतिमिति स्वाहा ॥ श्रीवर्णप्रतिमास्थाप
नं ॥ ॥ आजन्मस्नपनोचितोपकरणं दध्यक्षताद्यर्चितानुसंस्थाप्योज्ज्वलवर्ण
पूर्णकलशानकोणेषु सूत्रावृतान् ॥ तूर्याशीस्तुतिगीतमंगलरवेष्वक्षेर्जया
स्नुध्वनिं सोऽहं विधिपूर्वकं जिनपतेः स्नानक्रियां प्रस्तुवे ॥ ११ ॥ चर्चितांश्चंदने
ः पूर्णाः श्वेतसूत्राभिवेष्टिताः ॥ श्रीगंधं कलशाः सपुष्पपल्लवधारिणः ॥ कल
शेषु स्थापितेषु मोदकान् पुष्पाणि निक्षिपेत् ॥ १२ ॥ कलशस्थापनं ॥ ॐ इंद्र दे
वसमाह्वानमामहे स्वाहा ॥ हे इंद्र आगच्छ आगच्छ इंद्राय स्वाहा ॥ इंद्रानुच
राय स्वाहा ॥ इंद्र परिजनाय स्वाहा ॥ अग्नये स्वाहा ॥ अनिलाय स्वाहा ॥ व
रुणाय स्वाहा ॥ सोमाय स्वाहा ॥ प्रजापतये स्वाहा ॥ ॐ स्वाहा ॥ भूः स्वाहा ॥

तिलकसुंदरितांणि जांणियाए ॥ धर्म करि निज काजतो ॥ १७ ॥ तिवेऊकुरुखेतपनिए
॥ बेरिश्रुतिदसुजांणतो ॥ कमलावतिपेढलिकहिए ॥ बहिडजिनामतो ॥ १८ ॥
कुवारित्रिजिकहिए ॥ कुंकुनामेचोथिचंगतो ॥ रूपसीनागपश्रागलिए ॥ कुरंगन
यणिअंगतो ॥ १९ ॥ तेपरणिसुहामणिए ॥ चौजुबंधवेगुणवंततो ॥ अनुक्रमेसु
खभोगवेघणाए ॥ पुण्यफलेजयवंततो ॥ २० ॥ अलनउवेरागपऊवोए ॥ देखियपट
लविशालतो ॥ मेघतणोविघटियोए ॥ तवचिंतवेगुणमालतो ॥ २१ ॥ संसारस्वच
जांणियाए ॥ धनयोवनअसारतो ॥ इमजांणिसऊपरिहरिए ॥ लीधोसंजमभार
तो ॥ २२ ॥ चारकुवरअतिरूवडाए ॥ राजकोरसुविचारतो ॥ धर्मपालजिनवरतणोए
॥ माहामंत्रगणेनवकारतो ॥ २३ ॥ धर्मफलेराजवाधियोए ॥ गजतुरंगअपारतो ॥ पु
त्रबहुघरिनिपन्याए ॥ महोत्सवहोयजयजयकारतो ॥ २४ ॥ कालघणोराजपनाबालो
॥ करतापरउपगारतो ॥ पछेसंजमवसकरिए ॥ जांणपोअथिरसंसारतो ॥ २५ ॥
॥ दुहा ॥ सालनदगुरुकन्हे ॥ लिधोसंजमभार ॥ बज्जबंधवेअतिनिर्मलो ॥ वैराग्य
धरिमनमार ॥ १ ॥ समकितपालेनिर्मलो ॥ ज्ञानपढेगुरुपास ॥ तपजपसंजमस

३६ वडा ।। ध्यानधरेसुविशाळ ।। ३ ।। ध्यानबळेकर्मक्षयकरि ।। उपनुंकेवळज्ञान ।। लो
५७ कालोकप्रकाशए ।। जैसोदिनकरमाए ।। ३ ।। देशविदेशविहारकरि ।। कियोध
र्मप्रकाश ।। भविअएजिवसंबोधिया ।। गुएतएानिवाश ।। ४ ।। मुक्तिपोहोतानिर्म
ला ।। सिद्धजवानवतार ।। आठकर्मथकावेगळा ।। आठगुएसुविचार ।। ५ ।। वस्तु ।।
दशलक्षएधर्मदशलक्षएधर्म ।। कथासुएीकरि ।। भवियएतस्रेसुजाए ।।
सुललित ।। दशलक्षएव्रतआचरो ।। त्रिभुवनताशएहार ।। श्रीशकलकिर्तिगुरु
प्रएमिने ब्रह्मजिनदासभएोअंग ।। धर्मअनुदिनध्याईसु ।। जिमसुखहोयअ
नंग जिमसुखहोयअनंग ।। ६ ।। इतिश्रीदशलक्षएीव्रतकथासमाप्तः ।। छ ।।
।। छ ।। ।। अथश्रीअष्टान्हिकव्रतकथालिख्यते ।। अगईआठदिनकरो ।।
कार्तिकफाल्गुएमासरेलाल ।। अषाडमासथकिआचरो ।। धरोधर्मध्यानअमा
सरेलाल करोनेकरावोकोडेरूवडा ।। नंदिश्वरव्रतवारूरेलाल ।। हरखेहरिषेण
कर्या चक्रवतिजवासाररेलाल ।। करो ।। ज्ञानमेसुकरितसंमिय ।। एकतुक्षिदे
ईदानरेलाल ।। पछेउपवासलेइने ।। रात्रिकरोगीतज्ञानरेलाल ।। करो ।। नंदि ।। हर

खे ।। चक्र ।। आठमेउपवासपावन ।। नंदिश्वरदेवनुंनामरेलाल ।। दशलाखउपवा
सकरताफल ।। सफलकरोगुएाज्ञानरेलाल ।। करो ।। नंदि ।। सवादसंघलोपरिहरो
।। क्षमएाकरोअनुभावरेलाल ।। समेसारअनुचरो ।। संसारअटविडारेलाल ।।
करो ।। नंदि ।। साथेसज्जसाथेमळि ।। वळिसार्थीओकरोधरिध्यानरेलाल ।। मेरुमंड
एबावनसिखर ।। पुजोजिनदेहरांनेरेलाल ।। करो ।। परमादपोशोआदरो संवर
सुधिधरजोरेलाल ।। विकथामुकिनेसुतकथा ।। अथवामुमजधरजोरेलाल क
रो ।। पारएोनुमेयेकासएु ।। स्वामिसज्जसंघातेरेलाल ।। उपवासदशसहस्रफळ ।।
अष्टनुतिदिनरमातेरेलाल ।। करो ।। नंदि ।। शाठलाखउपवासफळ ।। दशमिएको
जियारेलाल ।। दांनपुजासोवनसुधि ।। दिवस्त्रीलोकमाररेलाल करो ।। एकाद
शमिएकलशएु ।। चतुरमुखदिननांमरेलाल ।। पांचलाखउपवासफळ ।। बारसे
दिनसमताकरोअएागाररेलाल ।। करो ।। नंदि ।। चालिसलाखउपवासफल ।। फ
ळनोनहेबिजोपाररेलाल ।। षटरससतेरससाधिए ।। आराधिएस्वर्गसुपानरेलाल
।। करो ।। नंदि ।। उपवासलाखचालिसफळ ।। ध्यानअमृतकरोपानरेलाल ।। त्र

३७ णश्राककेवळज्ञांन।।चौदश्रोसज्ञरसछांडोरेलाल।।करो।।नंदि।।सर्वसंपतिक
५८ रविनाव।।लाखत्रपवाश्रफळमंडोरेलाल।।श्राठित्रणकोडिउपवासफळ।।इं
द्रध्वजाहेतुंनामेरेलाल।।करो।।नंदि।।पुनमिउपवासुसाधता।।राखज्योश्रापा
णिमुमेरेलाल।।करो।।नंदि।।पात्रनेदांनदेईपारणो।।काश्रणोस्वांमिसंघानेरे
लाल।। ग्रतकल्पमानवर्षकिजिय।।श्राईश्रजिनवरनाथरेलाल।।पंचवरषमध
मकरवि।।जगनपणीत्रणवर्षरेलाल।।करो।।नंदि।।किधेस्वर्गमुक्तिपामीय।।
नावनाभावोउत्कष्टरेलाल।।इत्यश्रष्टाईजेकरे।।उधरेश्रापोश्रापरेलाल।।न
हारकश्रनेचंदणा।।तेनविपांमेसंतापरेलाल।।करो।।नंदि।।हरखे।।चक्र
।।इतिश्रीअष्टाह्निकाव्रतकथासमाप्तः।।छ।।ध।। ।।छ।।अथश्रीरविव्र
तकथा।।।।दासकृतलिख्यते।।चौपाई।।परणमुपासजिनेश्वरपाय।।सेवं
तासुखसंपतिथाय।।वंछवरदायकसारदा।।सदगुरुचरणकमळजुगमुदा।।
१ कथाकहुरविवारजतणी।।पूर्वीग्रंथपुराणेभणी।।एकचित्तसुजेसांभले
।।नेहनांदुखदालीदटले।।२।।मोहसुंदरकाशीदेश।।पुरपारणासुंभ्रनीनवे

रोगुणमाळ।।२।।दशखाजादशमोदका।।पकवानदशसार।।नारिकेलादशफा
वडा।।कदळिश्रादेसुविशाळ।।३।।उपकरणदशरुवडा।।घंटाघंटसुविशाल
।।काळशत्रंगारदशरुवडा।।पिंगाणिगुणमाळ।।४।।चंद्रोपकदशरुवडा।।चामर
ध्वजागुणमाळ।।तोरणसहितसुतारिका।।भामंडलसुविशाळ।।५।।[illegible]
।।दशपूस्तकवलिरुवडाए।।जयमाळदशसारतो।।श्रक्षरवस्तुवळिरुवडिए।।
श्रांणोश्रतिहश्रपारतो।।१।।श्रारतिदशरुवडिए।।धूपधणावळिचंगतो।।सुकड
खंडदशानिर्मलाए।।विस्तारोमनरंगतो।।२।।एविधिनांचालेरुवडिए।।तोयथाश
क्तिविशालतो।।करोभवियणतस्त्रीमनरळिए।।संघसहितगुणमाळतो।।३।।उजव
णोश्रक्तिनहोए।।तोव्रतबमणुकरोसारतो।।भावधणोमनमांहिधरिए।।श्राव
कतसहसुविचारतो।।४।।हरखवदनकमरिजईए।।व्रतलियोमनश्रांणंदतो।।घे
रेजइकियोरुवडोए।।बाधोधर्मनोकंदतो।।५।।धर्मफलेसुखभोगवोए।।मनवंचित
गुणावंततो।।निंदायकिंचविकरिपनिए।।तेकुंवरिजयवंततो।।६।।स्त्रिलिंगछे
दिकरिए।।स्वर्गेलिधोश्रवतारतो।।माहात्म्यक्रमगछिरुवडोए।।मादाधिकइ

वास्तुविचारंतो ॥ ७ ॥ एक नाम अमगीरिए ॥ अमरचुलइजो जांणतो ॥ देवपुन्नत्रि
५६ जो कह्योए ॥ पन्नसारथिचोथो वखाणतो ॥ ८ ॥ सुरवभोगवेतिहां अतिघणोए
॥ देविसहितसुजांणतो ॥ जिनवरगणधरमुनिवराए ॥ वांदेतेगुणनाणतो ॥ ९ ॥
विमानबेसियात्राकरेए ॥ तेदेवगुणवंततो ॥ अकृतिमजिनगेहसुणोए ॥ वांदे
अतिजयवंततो ॥ १० ॥ कालघणोसुरवभोगविए ॥ स्वर्गतणांअतिचंगतो ॥ तिहां
थकिचविकरिउपनाए ॥ तेतस्ससुणोमनरंगतो ॥ ११ ॥ मालवदेशसोहामणो
ए ॥ नयरउजांणिजांणतो ॥ सुलक्षतिहांराजकरेए ॥ धर्मसहितसुविचारतो
॥ १२ ॥ लक्षिमतिरांणिनेहतणीए ॥ रूपसोभागअपारतो ॥ धर्मकरेजिनवरत
णोए ॥ जिवदयानवनारतो ॥ १३ ॥ तेबेक्रुक्षेअवतस्याए ॥ तेदेवगुणवंततो ॥ पु
रणकुमरपहिलोसुणोए ॥ बिजोदेवराजजयवंततो ॥ १४ ॥ गुणचंद्रत्रिजोकह्यो
ए ॥ चोथोपद्मकुमारतो ॥ च्यारिपुत्रगुणआगलाए ॥ निपमाअतिसुविशालतो ॥
॥ १५ ॥ रूपसोभागेआगलाए ॥ विनयवंतसुजांणतो ॥ धर्मकरेजिनवरतणोए ॥
पुजेजिनवरपायतो ॥ १६ ॥ नंदनयरवखाणियाए ॥ जणराजाकरेतिहांराजतो ॥

र ॥ धर्मधुरिश्रियलकरिए ॥ ६ ॥ हरखवदनकुईबाळ ॥ नमोस्तुकियोबहुभाव
धरिए ॥ बेठितिहांसुविशाळ ॥ धर्मसुणवाविनयकरिए ॥ ७ ॥ पछेदोयकरजोड
॥ पुछेक्रुवरिसोहामणिए ॥ स्त्रियलिंगहोयछेद ॥ तेवरतकहोहमनेगणिए ॥ ८
॥ मुनिवरस्वामिदेव ॥ मधुरिसवांणिईमबोलियाए ॥ दशलक्षणिधर्मचंग ॥ उप
मारहितगुणतोलियाए ॥ ९ ॥ तेव्रतकरोतझसार ॥ मनवांछितफलजिमलहो
ए ॥ तक्रुवरिकहेचंग ॥ विधिनिर्मलस्वामितझकहोए ॥ १० ॥ भाद्रवोमासआ
त्तिचंग ॥ सुकलपक्षगुणजांणियाए ॥ पंचमिकेदिनचंग ॥ एवरतमनिआणिय
ए ॥ ११ ॥ कंकमछडोदेवाडि ॥ मोतिएचोकपूरावियाए ॥ सींघासणतिहांमांडि ॥ चो
विशजिनथापियाए ॥ १२ ॥ पछेयंत्रअणाविहि ॥ मअदिअतिरूवडोए ॥ दशपा
खडिअतिचंग ॥ दशनिर्मलगुणेजडोए ॥ १३ ॥ तेगुणकञ्जकेसार ॥ तेतस्ससुणोगु
णसुंदरिए ॥ करणिकाअतिचंग ॥ दशलक्षणधर्मतिहांधरिए ॥ १४ ॥ उत्तमक्षेमा
जाणो ॥ पहिलोलक्षणजांणियाए ॥ दुजोमार्दवबांणि ॥ त्रिजोआर्जवआणियाए ॥
१५ ॥ चोथोसत्यसुजांण ॥ सोचपांचमोअतिरूवडोए ॥ छठोसंजमचंग ॥ सातमोत

५५ सणतपजडीए ॥ १६ ॥ आठमो त्याग अंग ॥ नवमो आकिंचन जांणीयए ॥ दशा
मो लक्षण चंग ॥ ब्रह्मचारि जिनवखाणियए ॥ १७ ॥ ए लक्षण दश सार ॥ दशपाख
डि गुण थापियए ॥ अष्टप्रकारि पूजासार ॥ प्रदक्षणा तिहां रोपियए ॥ १८ ॥ पहि
ला जिनवरदेव ॥ भावसहित स्वांमि पूजियए ॥ पछे शास्त्र गुरु सार ॥ पूजा रचि गुण
ध्याइयए ॥ १९ ॥ पछे यंत्र विशाल ॥ दशलक्षण गुण पूजियए ॥ अष्टक मंत्र सहि
त ॥ जापजयमाल वखांणियए ॥ २० ॥ उदक चंदन अक्षत पुष्प ॥ निवेद बहु आ
णियए ॥ दीप धूप फळ सार ॥ कुसुमांजलि वखाणियए ॥ २१ ॥ धवल मंगल गी
त नाचं ॥ मोहोछव किजि निर्मलोए ॥ एकांतर उपवास ॥ सीयल पाळिजे उज्वलोए
॥ २२ ॥ सचीत तणो परित्याग ॥ वस्तुसंख्या अति निर्मलिए ॥ आरंभ तणो परित्याग ॥
जिनवाणि सुणो सोहिजलिए ॥ २३ ॥ क्रोध मान माया लोभ ॥ रागद्वेष दंड परिहरोए
॥ निर्मल मन वच काय ॥ किजे धर्मध्यान रुवडोए ॥ २४ ॥ दुहा ॥ इणिपेरे करो त
मे सुंदरि ॥ दशवरश लगे चंग ॥ पछे उजवणो निर्मलो ॥ संघसहित उछरंग ॥ १ ॥
अति शोभ करो रुवडो ॥ जिनवर भुवन विशाळ ॥ दश दश वांना निर्मला ॥ विस्ता

रो ॥ बोल्यो मधुरिय वांणि ॥ विपुलाचळ स्वामी आविया ॥ महावीर शिवगांमी ॥ ६
तव आनंद बहु उपनो ॥ श्रेणिक गुणवंत ॥ वधामणि दिधि अति घणि ॥ हरख्यो ज
यवंत ॥ ७ ॥ आनंद भेरि पछे उछलि ॥ चाल्यो सुजांण ॥ समोवशरणमांहि जई करि
॥ वांद्या जिनभाण ॥ ८ ॥ तव पटराणि अंजलि ॥ मनमांहि सुजांण ॥ पछे दोय क
र जोडिया ॥ विनवे गुणनाण ॥ ९ ॥ कहो स्वामि तम्हे ज्ञानधणि ॥ कथा सरस अपा
र ॥ दशलक्षण धर्म तणि चंग ॥ मनमा आगळि सार ॥ १० ॥ जिनवर स्वामि बोलिया ॥
मधुरि सुललित वांणि ॥ सुणो नृप वियण तम्हो एकचित ॥ जिम होय सुखखांणि ॥
११ ॥ धातकिखंड मांहि अति विशाळ ॥ नयर गुणधार ॥ प्रियंकर राजा करे राज ॥
भरे राजभंडार ॥ १२ ॥ प्रियंकरा तस रांणि सार ॥ रूपे जसी रंभा ॥ जैनधर्म करे निर्म
लो ॥ त्रिभुवन मांहि स्तंभ ॥ १३ ॥ तबे कुरदेउ पनी ॥ बेटि गुणधार ॥ मृगांकलेखा
तस नाम सार ॥ रूपे गुणधार ॥ १४ ॥ मतिशेखर प्रधान जांण ॥ ससीप्रभा तस रांणि
॥ कमलश्रीना तस पुत्रि जांण ॥ रूप सौभाग्य निखांणि ॥ १५ ॥ गुणशेखर अति रुव
डो ॥ श्रेष्टि अति चंग ॥ सीयलप्रभा तस नारि नाम ॥ रूपे उत्तंग ॥ १६ ॥ तेणे कुरदेउ

पनि ॥ बेटिगुणधार ॥ मदनवेगातसनांमसार ॥ करेधर्मअपार ॥ १७ ॥ लहेंअट
तराळजांण ॥ नेणिनअरिविशाळ ॥ चंद्रवदनितसनारिसार ॥ रूपेगुणमाळ
१८ तेबेहुअरवेअपनि ॥ बेटिसुविशाळ ॥ रूपसोभागेपत्रगाळि ॥ रोहीणीगुण
माळ ॥ १९ ॥ दुहा ॥ चारिकुमरिसोहामणि ॥ धर्मवंतसुजांण ॥ प्रिनिधणिनिप
नि ॥ सहियरजइसुखखांण ॥ १ ॥ पढेविद्याअतिरुवडि ॥ समकितपालेसार ॥
वरतनेमवळिरुवडा ॥ मंत्रगणेनवकार ॥ २ ॥ ढाळविनतिनि ॥ वशंतमासअ
तिचंग ॥ आवोसरससोहांमणो ॥ वनस्पतितिहांजाण ॥ फुलफळपरिमळ
घणोए ॥ १ ॥ भमरारणझणकार ॥ कोयलकरेटहुकडाए ॥ कलिरवकरेपंखि
घोर ॥ कांमनिदेतिहांराङडाए ॥ २ ॥ तेहकुमरितेणिवार ॥ निजपीतापुछीकरि
ए ॥ क्रिडाकरवाचंग ॥ वनिपोतितेसुंदरिए ॥ ३ ॥ गावेसरसअपार ॥ हिंडोलेचढि
तेकांमनिए ॥ बोलेरागअपार ॥ नाचेसरससोहामणिए ॥ ४ ॥ तिहांथकिनिसरि
बाळ ॥ वनजोवेरळियामणाए ॥ अशोकवृक्षतलेदिठ ॥ मुनिवरस्वामिसोहा
मणाए ॥ ५ ॥ वसंतसेनगुरुनाम ॥ समकितज्ञानचारित्रधरुए ॥ तपतणाभंडा

रिपदधरोहेलि ॥ २५ ॥ संजमलिधोसार ॥ तपकरेस्वामिनिर्मलाहेलि ॥ जोग
धरोअंग ॥ शुक्लध्यानमोहेजलाहेलि ॥ २६ ॥ उपनुंकेवळज्ञान ॥ समवशरण
दिठोरुवडोहेलि ॥ बारसभासुविशाळ ॥ धर्मसुणेस्याजडोहेलि ॥ २७ ॥ देशन
यरपुरगांम ॥ विहारकरेतेमनरळिहेलि ॥ संबोधागुणवंत ॥ मोक्षमारगदाखे
उज्वलोहेलि ॥ २८ ॥ पछेश्रीजिनवरदेव ॥ मुक्तिपोत्यास्वांमिगुणलिलाहेलि ॥
अष्टकर्मविनाश ॥ आठगुणपाम्याशाश्वताहेलि ॥ २९ ॥ सुखअनंतअपार
ज्ञानअनंततिहांजाणियहेलि ॥ विरियअनंताहोय ॥ दर्शनअनंतवखाणि
यहेलि ॥ ३० ॥ दुहा ॥ अचळठामतिहांरुवडो ॥ ज्योस्वांमिमुजचंग ॥ क्रिपाकरो
मुजउपरे ॥ हुंसेवकअनंग ॥ १ ॥ शीळकारणउतरुवडु ॥ शीळभावनासहित
जेनविपणकरेरुवडा ॥ तेनेसुखमाहेंत ॥ २ ॥ श्रीसकलकिर्तिगुरुप्रणमिने
बुह्मजिनदासभणेसार ॥ शाकियोमेनिर्मलो ॥ शीळकारणअवतार ॥ ३ ॥ भणे
गुणेजेसांभले ॥ मनधरिअविचलभाव ॥ एव्रतजेआचरे ॥ तेहनेशिवपुरठाम
॥ ४ ॥ जेजिनवरस्वामिकह्या ॥ आरजखंडमुझार ॥ शीळभावनाविकारि ॥ श्री

पनि॥ वेटिगुणधार॥ मदनवेगा तस नाम सार॥ करे धर्म अपार॥ १७॥ तहां अट
तराळ जांण॥ तेणि नयरि विशाळ॥ चंद्रवदनि तस नारि सार॥ रूपे गुणमाळ
१८॥ ते बेऊ अखेउपनि॥ बेटि सुविशाळ॥ रूपसौभाग्य अगळि॥ रोहीणी गुण
माळ॥ १९॥ दुहा॥ चारि कुमरि सोहामणि॥ धर्मवंत सुजांण॥ प्रिनिधणि निप
नि॥ सहियर ऊइ सुखखांण॥ १॥ पढे विद्या अतिरूवडि॥ समकित पाले सार॥
वरत नेम वळि रूवडा॥ मंत्र गणे नवकार॥ २॥ भास विनतिनि॥ वसंत मास अ
ति चंग॥ आवे सरस सोहामणो॥ वनस्पति तिहां जाण॥ फुल फळ परिमळ
घणो॥ ३॥ नमरा रणझणकार॥ कोयल करे टहूकडा॥ कालिरव करे पंखि
थोर॥ कांम निंदे तिहां रागडा॥ ४॥ तेह अवसरि तेणि वार॥ निज पीता पुछीकरि
ए॥ क्रिडा करवा चंग॥ वनि पोति तिनि सुंदरि ए॥ ५॥ गावे सरस अपार॥ हिंडोले चडि
ते कांमनि ए॥ बोले राग अपार॥ नाचे सरस सोहामणि ए॥ ६॥ तिहां थकि निसरि
आव॥ वनजीव रळियामण्या॥ अशोकवृक्षतले दिठ॥ मुनिवर स्वामि सोहा
मणा ए॥ ७॥ वसंतसेन गुरु नाम॥ समकित ज्ञान चारित्र धरुए॥ तपतणा भंडा

मिप दधर्यो हेलि॥ १५॥ संजम लिधो सार॥ तप करे स्वामि निर्मलो हेलि॥ जोग
धर्यो अंग॥ शुक्लध्यान मो देजलो हेलि॥ १६॥ उपनुं केवळज्ञान॥ समवशरण
दिठो रुवडो हेलि॥ बार सभा सुविशाळ॥ धर्म सुणे दया जडो हेलि॥ १७॥ देशान
अरपुरगाम॥ विहार करे ते मनरळि हेलि॥ संबोधा गुणवंत॥ मोक्षमारग दाखे
उज्वलो हेलि॥ १८॥ पछे श्रीजिनवरदेव॥ मुक्ति पोहोता स्वामि गुणलिलो हेलि॥
अष्टकर्म विनाश॥ आठगुण पाम्या शाश्वतो हेलि॥ १९॥ सुख अनंत अपार॥
ज्ञान अनंत तिहां जाणिये हेलि॥ विरिय अनंत तिहां होय॥ दर्शन अनंत वखाणि
य हेलि॥ २०॥ दुहा॥ अचळ ठाम तिहां रूवडो॥ ते स्वामि मुज चंग॥ क्रिपा करो
मुज उपरे॥ हुं सेवक अभंग॥ १॥ शोळकारण व्रत रूवडु॥ शोळभावना सहित
जे नविषण करे रूवडा॥ तेने सुख मांहत॥ २॥ श्री सकलकिर्ति गुरु प्रणमिने
वृक्ष जिनदासा भणे सार॥ रास कियो मे निर्मलो॥ शोळकारण व्रत सार॥ ३॥ भणे
गुणे जे सांभले॥ मन धरि अविचल भाव॥ एव्रत जे आचरे॥ तेहने शिवपुर ठाम
॥ ४॥ जे जिनवर स्वामि ऊवा॥ आरंज खंड मुझार॥ शोळभावना नाविकरि॥ श्री

५२ तिर्थंकरनवतार ॥ ५ ॥ शोळभावनाकुंनाविसु ॥ धाईस्युंजिनवरदेव ॥ अनंतजिन
दाशंनणोफळवडा ॥ शोळतुमपायेमुजसेव ॥ ६ ॥ इतिश्रीशोडशकारणव्रतक
थासंपूर्णा ॥ शा ॥ ॥ श्री ॥ ॥ अथश्रीदशलक्षणिव्रतकथालिख्यते ॥
॥ वस्तु ॥ विरजिनवरविरजिनवर ॥ पायपुणमिस्युं ॥ सरस्वतिस्वामिनेवळि
लघु ॥ बुद्धिसारज्ञवेगमागु ॥ वळिगणधरस्वामिनेनमस्कारकरूं ॥ श्रीसकल
कीर्त्तिपायवंदु ॥ रासकरिस्युंजनिर्मलो ॥ ब्रह्मजिनदासनणोसार ॥ व्रतकथा
हवेवर्णवु ॥ दशलक्षणिनवतार ॥ दशलक्षणिनवतार ॥ १ ॥ भासयशोधरनि
॥ नवियणसांभळोआज ॥ जकेहसुवखाणि ॥ कथाकोशइहवेवर्णवु ॥ गौतम
धुरिसवाणि ॥ १ ॥ जंबुद्विपमुझारचंग ॥ भरतक्षेत्रवखाणो ॥ भरतक्षेत्रमाहिमगधदेश
॥ राजगृहिनयरिवखाणो ॥ २ ॥ श्रेणिकराजाकरेराज ॥ चेलणातसराणि ॥ रूपसोभा
ग्यअपारसार ॥ जसीरंभाराणि ॥ ३ ॥ जिनधर्मकरेनिर्मलो ॥ समकितगुणपाळे ॥
दानपूजानपडिग्रहसार ॥ शीलभावनतटाळे ॥ ४ ॥ तेणेअवसरिएकवनपाळ ॥ आ
व्याअतिचंग ॥ फुलफळलेईकरि ॥ आपणेमनरंग ॥ ५ ॥ श्रेणिकराजावधावि

नउछरंग ॥ २ ॥ अभिषेकअतिफळवडो ॥ आरतिचारकिजेविशाळ ॥ महोत्सवसहितसो
हामणो ॥ पळेपुजागुणमाळ ॥ ३ ॥ खाजामोदिकनिर्मला ॥ घोलघोलपकान वि
स्तारेगुणेआगला ॥ जिनवरनुवनेमेठाम ॥ ४ ॥ डाडमद्राक्षबिजोरडां ॥ नाळिकेळ
जंबिर ॥ नाळिकेळआदिबहुफल ॥ विस्तारेवलिधिर ॥ ५ ॥ उपकरणवळिरुवडा
॥ घोळघोळअतिचंग ॥ विस्तारेगुणेआगला ॥ जिनवरनुवनउछरंग ॥ ६ ॥ भासमह
लिनि ॥ कळशअणावोसार ॥ भृंगारअतियसोहामणा ॥ जेघंटनालकंशाल
॥ नारिकासहितरलियांमणाहेलि ॥ १ ॥ चंद्रोपकवळिचंग ॥ धुपदहनअतिरुवडा
हेलि ॥ पींगाणिवलिसार ॥ तोरणनलारत्नेजड्याहेलि ॥ २ ॥ श्रीखंडसुगंधकपूर
॥ किस्नागरवळिआणियहेलि ॥ कंकुमकेशरचंग ॥ नावसहितविस्तारियहे
लि ॥ ३ ॥ धोतवस्त्रवळिसार ॥ पुस्तकदानअतिरुवडाहेलि ॥ आहारऔषधदान
॥ अभयदानदेवारुवडाहेलि ॥ ४ ॥ चतुर्विधसंघसुजांण ॥ दानमानदेवारुवडा
हेलि ॥ श्रीजिनशासनउद्योत ॥ महोत्सवकिजेअतिघणोहेलि ॥ ५ ॥ शालिवेर
करोतमोसार ॥ माघचैत्रवळिनिर्मलाहेलि ॥ सोळवरसलगेसार ॥ करोव्रतवा

छिसोहेजलुहेलि ॥६॥ आकिविनागुणवंत ॥ बमणुव्रतकरोरुवडाहेलि ॥
शोळवरशनाकराय ॥ तेणकदोयपांचनावेजड्याहेलि ॥७॥ सुणिमुनिवरवं
णा ॥ व्रतलिधुतेणिकवरीहेलि ॥ वंद्यासद्गुरुपाय ॥ मनमांहिभावघणोध
रिहेलि ॥८॥ मुनिगयानिजगांम ॥ छेरूपवित्रकरयोतेहतणोहेलि ॥ नविया
णकीयोनमोस्तु ॥ भावघणोमनमांहिधरिहेलि ॥९॥ व्रतआचरअतिचंग
विशलाशिवअतिनिर्मलोहेलि ॥ शोळवरशलगेसार ॥ करयोव्रतअतिसो
हेजलोहेलि ॥१०॥ व्रतफलेअतिसार ॥ स्वर्गलाध्योअतिरुवडोहेलि ॥ शोळ
मेस्वर्गविशाळ ॥ सुखभोगवेतिहांपुन्यजड्याहेलि ॥११॥ अस्त्रिलिंगविनाश
देवकुवागुणेआगळाहेलि ॥ बाविशसागरआउष ॥ सुखभोगवेतिह्नपुन्ये
जड्याहेलि ॥१२॥ जंबुद्विपमुझार ॥ विदेहक्षेत्ररळियामणोहेलि ॥ अमरावति
वळिदेश ॥ छंजवनयरसोहामणोहेलि ॥१३॥ श्रीमंदरतिहांराय ॥ राजकरे
सोहामणोहेलि ॥ महादेविवल्लभनार ॥ धर्मकरेजिनवरतणोहेलि ॥१४॥ तेबे
कुंवरसार ॥ देवकुवागुणेआगळाहेलि ॥ जिवंधरतसनाम ॥ तिर्थकरस्वा

णतमेमहिए ॥ शोडषभावनाचंग ॥ तेनिपारवडिरचोनिर्मलीए ॥२०॥ सुईजुई
एमंत्रमहित ॥ लखोभवियणनिरमलिए ॥ दर्शनभावनाधोरि ॥ पेहलिभारवडि
रचोनिरमलिए ॥२१॥ मीथ्यातणरहितविशाळ ॥ समकितसहितभावेजड्याए ॥
समकितज्ञानसुजांण ॥ चारित्रतपओह्मामणुए ॥२२॥ विनयाकिजेचंग ॥ दुजि
भावनालखोभामनिए ॥ निर्मळएसीयलसुजांण ॥ अतिचाररहितसुपालियए
त्रिजिएभावनाचंग ॥ लखिअवगुणटालियाए ॥२३॥ निर्मळएज्ञानअभ्यास ॥ अ
नुदिनकरोतह्मेरुवडाए ॥ चोथीएभावनासार ॥ भावोमनमांहिसोहेजलिए ॥२४
॥ निर्मलएवैरागपसार ॥ चिंतवोमनमांसोहेजलोए ॥ संसारएभोगशरिर ॥ अथी
रपंचमीलखोसोहेजलिए ॥२५॥ निर्मलिएत्यागउत्तंग ॥ किजेअनुदिनरुवडाए
॥ सारदानएसुपात्रसुचंग ॥ छठिभावनालखोभावेजडिए ॥२६॥ निर्मलएतपवि
शाळ ॥ बारभेदेकिजेनिर्मलाए ॥ सातमीएभावनाचंग ॥ भावोमनमांहीसोहेजा
लिए ॥२७॥ निर्मलएसाधुसमंध ॥ किजेमुनिवररुवडाए ॥ दुखक्लेशएउपसुजा
ए ॥ आठमिभावनागुणजडिए ॥२८॥ निर्मलएवहिमावृत देवधर्मगुरुनुक

५९

रिए ॥ आहा धर्मी ए देखि गुणवंत ॥ नोमि भावना मन धरीए ॥ १९ ॥ निर्मल ए अरिहं
तदेव ॥ भक्ति करो सोहामणी ए ॥ अनुदिन ए जपिये नाम ॥ सेवा किजे दशमि गुण ए
॥ २० ॥ निर्मल ए आचार्ज गुरु ॥ भक्ति करो सोहामणी ए ॥ दान मान ए आज्ञा गुण मा
ळ ॥ पाळो आर सअगीयारमि ए ॥ २१ ॥ निर्मल ए बहुश्रुत विशाळ ॥ जादे खोर लि
या मण ए ॥ आगम ए तत्व पुराण ॥ भावो भावना बारमि ए ॥ २२ ॥ निर्मल ए आवश्
कजांण ॥ समता आदि सोहामणु ए ॥ वळि वळि ए करो भव तार ॥ तेरमि धा
वो भावना ए ॥ २३ ॥ निर्मल ए जिनवर वाण ॥ अंग पुरव आदि जांणीया ए ॥ प्रवस्तए
ते हुता गुण नाम ॥ चउदमि भावना वखांणीया ए ॥ २४ ॥ निर्मल ए जिनसासन चंग ॥ मो
हो अस्व किजे अति घणो ए ॥ सम स्नेह ए धन वेचिये सार ॥ पनर मि लखो सोहाम
णी ए २५ निर्मळा ए वाछल अंग ॥ साधर्मीनु किजिय ए ॥ भावना ए किजे बहु
मान ॥ सोळमि भावना गुण जडि ए ॥ २६ ॥ ढाल ॥ सोळ भावना अतिनि रमली ॥ ल
खिय यंत्र विशाळ ॥ अष्ट प्रकारि नित पूजिये ॥ त्रण काळ गुणमाळ ॥ १ ॥ बत्रीस
दिवस लगि पुजिये ॥ पछे उदियापण चंग ॥ जिनवर भुवने कराविये ॥ संघ सहि

रुवडो ॥ अनंतव्रत केरो सार मनोहर ॥ गुण वर्णव्या मे अति घणो ॥ भाव धरी मन
मांहि निर्मल ॥ ए रास जे पढे गुणे मन धरी नीर्मळ भाव ॥ ब्रह्म जिनदास कहे णी परि
भणे ॥ ते हने शिवपुरि ठाम ॥ ते हने शिवपुरी ठाम ॥ १ ॥ इति श्री अनंतव्रत कथा
समाप्तः ॥ छ ॥ श्री ॥ छ ॥ ॥ अथ श्री सोडषकारण व्रत कथा लिख्यते ॥ व
स्तु ॥ विरजिनवर विरजिनवर पाय प्रणमिसु ॥ गणधर स्वामी ने नमस्कार करं
॥ श्री सकलकिर्त्ति गुरु सार ॥ वळि भुवनकीर्त्ति पाय प्रणमि ने ॥ केहसुं रास वि
शाल नीरमर ॥ सोळकारण व्रत वरणवु ॥ ब्रह्म जिनदास भणे सार ॥ भाव करी भवि
यण सांभलो जिम होय सुख अपार ॥ जिम होय सुख अपार ॥ १ ॥ भास जसोधर
नि ॥ भवियण भावे सुणो आज ॥ कहुं केसु वखांणि ॥ सोळकारण कथा रसाळ चंग
रुडा मधुरिय वांणि ॥ १ ॥ जंबुदिप मुझार सार ॥ भरतक्षेत्र वखाणु ॥ मगधदेश मांहि
यरि सार ॥ राजग्रहि वखाणु ॥ २ ॥ हेमप्रभ राजा करे राज ॥ विजियावति सरांणि ॥ रूप
सोभाग्ये अपार सार ॥ गुण शीयल वखाणु ॥ ३ ॥ ते हत णो प्रोहित सार ॥ महाशर्म
वखाणु ॥ प्रियदत्ता तस नारि सार ॥ गुण सीयल वखाणु ॥ ४ ॥ तेवे बहु कुमेव उपनि ॥

वेरिगुणहीण ॥ कंकाळनेरवनामेजाण ॥ दीसेअतिदीन ॥७॥ कालवरणतेअ
तिअपार ॥ मस्तकअतिघोर ॥ नयणरातातेअतिअपार ॥ बोलेअतिघोर ॥ ६॥ दंत
मोटाहोठअतिविशाळ ॥ पेटदीसेघोर ॥ निरमालाअतिवंकडा ॥ करुपदीसेघो
र ॥ ७॥ हाथपायछेपातळा ॥ मोहेनहीरूप ॥ रागद्वेषकरेअतिघणो ॥ उपजेबज
कोप ॥ ८॥ तेदेखिमाताडुखधरे ॥ मोहितअपार ॥ एवेटिमुजतणीकुखे ॥ उपनिअ
शार ॥ ९॥ कवणपापमेकियाघोर ॥ एवेटिनिपनि ॥ मायमनेदुःखउपजे ॥ विव
लसंपने ॥ १०॥ इमकरतादिनजायजांण ॥ जिनधर्मकरंता ॥ तेणेअवसरिमुनि
आविया ॥ चारणजयवंत ॥ ११॥ मोहितआणंदोअपार ॥ मुनिवरपडघाया ॥ ना
वसहितजदानदियो ॥ सज्जनआनंदा ॥ १२॥ निरंतरजवास्वामिनिर्मला ॥ वेरा
गुणवंत ॥ नमोस्तुकीयोमोहितजांण ॥ पुछेजयवंत ॥ १३॥ कवणपापमिकिया
घोर ॥ वेटिसुविशाळ ॥ भवंतरकहोतेहतणा ॥ स्वामिगुणमाळ ॥ १४॥ स्वामितसा
गरस्वामिबोलिया ॥ सललितअतिचंग ॥ भवंतरसुणोतेहतणा ॥ आपणेमन
रंग ॥ १५॥ माळवदेशमुजारजाण ॥ नयरिसुविशाळ ॥ उजांणिअतिरुवडि ॥

सोहेगुणमाळ ॥ १६॥ महिपालराजाकेरेराज ॥ तेअतिगुणवंत ॥ वेगावतितसनारि
जांण ॥ रूपेजयवंत ॥ १७॥ तेवेजणकेरेउपनि ॥ वेटिसुविशाळ ॥ विपलाखितस
नांमजांण ॥ तेअतिरूपमाळ ॥ १८॥ धनयोवनमदछेअपार ॥ चंपलगुणहीण ॥ नि
रलजछेतेअतिअपार ॥ बोलेगुणदीन ॥ १९॥ गोरवेबेठितेआपणे ॥ जुयेमजादी
शे ॥ तेणेअवसरमुनिवरराज ॥ आमागुणइस ॥ २०॥ भावरीकरवानीमला ॥ ते
घेरेगुणवंत ॥ चरिकरिनेरुवडा ॥ वनचालाजयवंत ॥ २१॥ तवदिगतेणीकंवरि
॥ युंकिगुणहीण ॥ सोमावंतस्वामिनिर्मला ॥ ध्यानवंतसुजांण ॥ २२॥ दुहा ॥ त
वसुपतियेदेखियुं ॥ ततक्षणआमोजाण ॥ शरिरधोयुमुनिवरतणु ॥ चरणपुआ
सिरनांमि ॥ १॥ इमकरितवअतिघणि ॥ वेटिकाजेघोर ॥ थापदिधिविहामणि ॥ तु
पापणिघनघोर ॥ २॥ मुनिवरस्वामिनिर्मला ॥ ज्ञानतणाभंडार ॥ देवासद्गुरुध्या
इये ॥ जिमहोयपुन्यअपार ॥ ३॥ तववेरितेअतिघणि ॥ लाजिमनमुझार ॥ निंद्याक
रेबहुआपणि ॥ लागिसद्गुरुपाय ॥ ४॥ सद्गुरुस्वामिनिर्मला ॥ संबोध्यागुणवंत
पापछांडोतेणेआपणो ॥ कंवरिकेईजयवंत ॥ ५॥ [illegible] जंबुस्वामिकि ॥

५० तपकियो ए वेटिंअथोर ॥ भक्तिकरि सद्गुरुतणी ए ॥ खपियां ए कर्मबहुत ॥
ज्ञांतजइ तेअतिघणी ए ॥ १ ॥ तिहांथकि एचवीकरिसार ॥ उपनि ते हवालिका
ए ॥ उगरियां ए कर्मअल्प ॥ तेपामि ईहांकालिका ए ॥ २ ॥ किधां ए कर्मविशाल ॥
जोगव्याविनाकिमछुटियए ॥ समकितए वरतविधान ॥ तेलेइ कर्मखपियए ॥
३ ॥ शोलकारण एव्रतनावसहित ॥ तेलिजेगुण आगलाए ॥ विधिकज्ञ एसुणो
नस्येचंग ॥ एकेचितेकरि निर्मलाए ॥ ४ ॥ भादुवा एमाससुचंग ॥ कृष्णपक्षधुरिजा
णिय ए पडवे कीधा दिनसुविशाल ॥ सद्गुरु व्रतव्खाणियए ॥ ५ ॥ मनधरिए आ
विचलभाव ॥ वरतलिजे सोहामणुं ए ॥ एकंतरए किजेउपवास ॥ शीललिजेव
रितामणु ए ॥ ६ ॥ वत्रिशा ए दिवपलगे सार ॥ वरतआचरो तस्ये सुवडु ए ॥ चछित
ए तणो परित्याग ॥ भुमिसयनकरो निर्मलुं ए ॥ ७ ॥ आरंभए छांडीयइ ॥ मनकि
जे अतिसोहे जलुए ॥ पूजातणी ए विधिकज्ञसार ॥ सांभलो भवियण ए हवे कहुं ए ॥
॥ ८ ॥ आणीयए यंत्रविशाल ॥ हेमरुपे आदि निर्मला ए ॥ कमलिए कर्णिकाचंग
॥ शोलकारणगुण लखियां ए ॥ ९ ॥ पाखडि एतणो रे विचार ॥ सांभलो भविय

वनराय ॥ सफलजन्मकीयो निजकाय ॥ ब्राह्मण सहित आव्या निजगांमी ॥ धर्मक
रे सद्गुरु सिरनामी ॥ १७ ॥ अनंतव्रतआचर्यो तिहांसार ॥ नवीयण आवकेगुण
धार ॥ ब्राह्मण सहितकीयो गुणवंत ॥ महोछवधवलमंगलजयवंत ॥ १८ ॥ ब्राह्म
णनेदीयो तिहांमान ॥ वस्त्राभरणदसबहुदान ॥ दालिद्रगयो ब्राह्मणतणो जं
ण ॥ पांम्यो ते तिहां सुखनी खाण ॥ १९ ॥ श्रावकबोलामधुरीयवांण ॥ ब्राह्मणपर
तेआमीयसमान ॥ तस्येसाधर्मीजवाअसंग ॥ तस्यपरहमनेमोहअनंग ॥ २०
ईहां सुखेरहो गुणवंत ॥ पात्रजवानस्येजयवंत ॥ तस्य परसादे हम नेसार एव्रत
पाम्या त्रिभुवनतार ॥ २१ ॥ तवब्राह्मण बोल्यो सुविचार ॥ अमतणो गामे जाउ गुण
धार ॥ महिमा देखाडुं जिनधर्मतणी ॥ सजनलोक आगल अतिघणी ॥ २२ व्रतप्र
काशुं तिहां वलीसार ॥ धर्मतणो करुंविस्तार ॥ ईमकहीनीसर्यो गुणवंत ॥ आ
व्यो निजगामे जयवंत ॥ २३ ॥ सुललितब्राह्मणादीगेचंग ॥ ब्राह्मणीसहित अतिजय
वंत ॥ वस्त्राभरण अतिअपार ॥ लक्ष्मीतणो न विलासे पार २४ ॥ तेदेखी सजनआ
नंद ॥ वाध्यो धर्मतणो तिहांकंद ॥ राजाआचंभ्यो अपार ॥ लोकबहुत करे विचार ॥

४७ ॥२५॥ ब्राह्मण होतो अति दीन ॥ धन कण वस्त्र रहित गुण हीण ॥ पेडी महिमा
पांम्यो ये आज ॥ कवण देव तुठो एह काज ॥२६॥ तव राजा पुछे गुणवंत ॥ कहो ब्रा
ह्मण तह्मे जयवंत ॥ कवण धर्म कीयो तह्मे सार ॥ ते तह्मे हम न कहो सविचार
॥२७॥ अनंतनाथ स्वामी जिनदेव ॥ सुर नर खेचर करे तस सेव ॥ ते स्वामीने ह्या
मह्म चंग ॥ अष्ट न करम तणो हुवो भंग ॥२८॥ अनंत व्रत दीयो मज सार ॥ ते हम
वे हुं जणे लीयो गुणधार ॥ वली श्रावक लीयो गुणवंत ॥ साथे आचरीयो जयवं
त ॥२९॥ समकित ज्ञान श्रावक व्रत सार ॥ ते पाम्यो मी त्रिभुवन तार ॥ जैन धर्म पा
म्यो सविशाल ॥ तेणे हुवो जयवंत गुणमाल ॥३०॥ दुहा ॥ तव राजा मन हरखि
यो आनंद अंग न माय ॥ तव ब्राह्मण गुरु थापीयो ॥ लागे पाते हतणे पाय ॥१॥ जै
न धर्म लीयो निरमलो ॥ श्रावक हुवो गुणधार ॥ अवर संबोध्या अति घणा ॥ नवी
यण तिहां सुविचार ॥२॥ ढाल हेलिनी ॥ अनंत तणो व्रत सार ॥ लीधो तेणे वली
नीरमलो हेलि ॥ सयल सजन मल्या चंग ॥ कीधो तिहां अति मोहे जलो हेलि ॥१॥
चोट कर मलगे सार ॥ आचर्यो तिहां नीरमलो हेलि ॥ पछे जवणो चंग ॥ की
धो गुणवंत नावे जडो हेलि ॥२॥ ब्राह्मण हुवो जयवंत ॥ धन कण पार न पामीये
हेलि ॥ पुत्र हुवा बहु चंग ॥ जसकीरती वखाणीये हेलि ॥३॥ पछे साध्यो काल ॥ अण
सण लीधो नीरमलो हेलि ॥ णमोकार महामंत्र ॥ जपतो समाधि मरण हुवो हेलि
॥४॥ देवलोके हुवो देव ॥ सोधर्म स्वर्गे सोहामणो हेलि ॥ तिहां भोग वे सौख्य मांहंत
॥ देवीय सहित सोहामणो हेलि ॥५॥ पूजे जिनवर पाय ॥ समकीत पाले निरमलो हे
लि ॥ जिनशासन उद्योत ॥ करे देव ते उजलो हेलि ॥६॥ व्रत तणो परभाव ॥ ब्राह्मणी
देवी हुई निरमली हेलि ॥ प्रीति उपनी बहु सार ॥ जिनवर पूजे मोह जलो हेलि ॥७॥
तिहां थकी चवी करी सार ॥ राजा हुवो एह वडो हेलि ॥ अनंत व्रत फल चंग ॥ जिनध
र्म नावे जड्यो हेलि ॥८॥ ते ब्राह्मणी तणो जीव ॥ नाणु बांधि तिहां थकी चवी हेलि ॥
श्रीमति राणी चंग ॥ अनुक्रमे हुई नावे जडी हेलि ॥९॥ मोह तणो परभाव ॥ पटराणी
हुई राय तणी हेलि ॥ रिद्धि वृद्धि अपार ॥ कीम वखाणु महिमा ते तणी हेलि ॥१०॥
कां तिन यर सुचंग ॥ राज करे तिहां उजलो हेलि ॥ तिहां थकी आयो आज ॥ समवश
रणमांहि निरमलो हेलि ॥११॥ धर्म तणो फल सार ॥ तह्मे पुछ्यो राजा अम्ह कह्यो

हेलि ॥ तेह तणी एअवतार ॥ हमे कह्यो श्रेणीक तह्मे सुणियो हेलि ॥ २१ ॥ निमीत
ल हिवलि सार ॥ संयम लेसे रुवडो हेलि ॥ ध्यान बले कर्म छेदि ॥ केवली होसे मा
हिमा जड्यो हेलि ॥ २२ ॥ अनेक जीव संबोधि ॥ पछे मुगति जासे वलि हेलि ॥ अवि
चल सुख माहे रत्त ॥ अनंत काल तिहां कही हेलि ॥ २३ ॥ श्रीमती राणी चंग ॥ तप ब
ले अति निरमली हेलि ॥ छेदि अस्त्री लिंग ॥ ध्यान बले सुणो सोहे जली हेलि ॥ २४
॥ सोलमे स्वर्ग अवतार ॥ देव होसे अतिरुवडो हेलि ॥ मनुषजनम लेई सार ॥ अ
विचल राजा होसे सुखे जड्यो हेलि ॥ २५ ॥ अनंत व्रत अतिसार ॥ फल सुणियो नवी
याणि तिहां हेलि ॥ हरखवंत वो अपार ॥ श्रेणीक राजा आनंदीयो हेलि ॥ २६ ॥ अवा
वउत्तंग श्रेणीक राजा मन धरी हेलि ॥ विजयसेन नृप चंग ॥ नाव्य सहित विनय
करि हेलि ॥ २७ ॥ आण्यो निज घरी चंग ॥ वाछल कीयो तेणे अति घणो हेलि ॥ प्री
ति उपनी अनंग ॥ अंग रुडा समकीत तणा हेलि ॥ २८ ॥ पछे गया निज गाम ॥ जिन
वर स्वामी य मन धरी हेलि ॥ सुख भोगवे तिहां थोर ॥ धर्म उपरी भाव बहु करी हे
लि ॥ २९ ॥ अनंत जिनेश्वर अनंत जिनेश्वर पाय प्रणमीसु ॥ रास कीयो मे

माल ॥ धवल मंगल गीत गाईये ॥ महोछव करो गुणमाल ॥ ४ ॥ पकवान अति रुव
डा ॥ फूल फल सविशाल ॥ कर्पूर तणी करो आरति ॥ दीप धूप फल सार ॥ ५ ॥
चोपाईनी ॥ आरि दीवस लगे पूजो सार ॥ ईणी पेरि स्नवियण तह्मे सुविचार ॥ चौ
दसी दिन जाण्यो स विशाल ॥ करो संघ मली तह्मे गुणमाल ॥ १ ॥ जाप दीजे अष्टोत्तर
शत सार ॥ नीर मल अक्षत फूल लेई सार ॥ ध्यान मौन सहित गुणवंत ॥ ईणी पेरी व्र
त करो जयवंत ॥ २ ॥ पछे निज घरि पूजो जिनदेव ॥ भाव सहित करो जिन सेव ॥ उत्त
म मध्यम जघन्य सुजांण ॥ गुणवंत पात्र ने द्यो वलि दान ॥ ३ ॥ पछे पारणो कीजे अ
ति चंग ॥ सजन सहित आपणे मन रंग ॥ ईणी पेरी चौदवरस लगे करो ॥ जिनवर च
रण कमल मनी धरो ॥ ४ ॥ पछे उजवणो कीजे सार ॥ विधि सहित सुणो सुविचार ॥
चौद अनंत करावो चंग ॥ हेम तणा ते अति उत्तंग ॥ ५ ॥ चौद पुस्तक लिखावो सार
चार योग आगम विस्तार ॥ कलश चौद करावो चंग ॥ भृंगार चौद सुललित उत्तंग
॥ ६ ॥ जंघट चौद करावो चंग ॥ कंशाल जोडि अति उत्तंग ॥ धूपदहन पीगाणी सार
॥ चमर जोडी उज्वल सुविचार ॥ ७ ॥ ध्वजा तोरण अति स विशाल नामंडल तारिका

दीपमाळ ॥ जपमाळा चौदगुणवंत ॥ चंदन कर्पूर कुंकुम जअवंत ॥ ८ ॥ धोत वस्त्र
अतिसकुमाळ ॥ चौदजोडी मुको गुणमाळ ॥ एकाउपकरण अतिसार ॥ विस्तारो
तह्म विविधप्रकार ॥ ए ॥ खाजां मोदक घेवर चंग ॥ फेणी सुंहाली अतिसुरंग ॥ अ
वरसरस आंणो पकवान ॥ चौदचौदस्वहावो सुजांण ॥ १० ॥ भातदालघृतनअंज
नसार ॥ पूरीवडां मांडा सुविचार ॥ सुवर्णथाली भरीकरी चंग ॥ विस्तारो आपणे
मनरंग ॥ ११ ॥ नालिकेळ बीजोरां सार ॥ केळां जंबीर नारिंग फार ॥ दाडिम द्राक्ष
फळ सविशाळ ॥ फणस आंबाली बुगुणमाळ ॥ १२ ॥ एक फल आदि अनेक फल
जांण ॥ विस्तारो तह्म सुजांण ॥ जिनवर भुवन शांतिकरो चंग ॥ महा अभिषेक आपणे
मनरंग ॥ १३ ॥ चौदकट काअणी वीतह्मसार ॥ श्रीखंड तणो सुगंध अपार ॥ सुगंध
द्रव्य आंणो सुविचार ॥ जिनवर पूजा करो नवनार ॥ १४ ॥ समस्त संघ सहित सुवि
चार ॥ ब्राह्मण सुतणो व्रत सार ॥ सावस हित लियो गुणमाळ ॥ संघ आनंदयो ति
हां सविशाळ ॥ १५ ॥ श्रावक श्राविका इस्यव अपार ॥ तेके व्रत लीयो सविशाळ ॥
अनंतनाथ स्वामी कन्हे चंग ॥ अनंत व्रत लियो अंग ॥ १६ ॥ वांद्या जिनवर त्रिभु

रुवडाए ॥ एकाएक गांठि बलिवंत तो ॥ १७ ॥ एवं कारि निर्मलाए ॥ एक सो छंन
गुण होयअ तो ॥ तेकज्ञरुवे निरमलाए ॥ नविअणतह्म सुजांण तो ॥ १८ ॥ चवुदश
जिनवर रुवडाए ॥ स्वामी यत्रिभुवनतार तो ॥ तेगुण लेई करि निरमलाए ॥ एक
गांठि गुंथो सविचार तो ॥ १९ ॥ चौदस्ते दसिद्धांत तणाए ॥ जेऊवाजयवंत तो ॥ ते
गुण लेई करी निरमलाए ॥ बीजी गुंथो गुणवंत तो ॥ २० ॥ चौदकुलंकर रुवडाए
॥ मति बुद्धि तणा निधान तो ॥ तेगुण लेई करि निरमलाए ॥ त्रीजी गुंथो सविचार
तो ॥ २१ ॥ चौदअतिशय रुवडाए ॥ देवे कीधा गुणवंत तो ॥ तेगुण लेई करी नि
रमलाए ॥ चोथी गुंथो जयवंत तो ॥ २२ ॥ चौदपूरव छे उज्वलाए ॥ ज्ञान तणा भंडा
र तो ॥ तेगुण लेई करि निरमलाए ॥ पंचमी गुंथो नव तार तो ॥ २३ ॥ चौदगुणस्था
नक सुणोए ॥ मुक्ति तणा दातार तो ॥ तेगुण लेई करि निरमलाए ॥ छट्ठी गुंथो
नवतार तो ॥ २४ ॥ चतुर्दश मार्गणा रुवडाए ॥ जिन सिद्धांत मुझार तो ॥ तेगुण
लेई करी निरमलाए ॥ सातमी गुंथो सुविचार तो ॥ २५ ॥ चौदजीवसमास सुणो
ए ॥ दया पाळवा काज तो ॥ तेगुण लेइ करी निरमलाए ॥ आठमी गुंथो गुणकाजि

९५ नो॥१९॥चौदनदीसोहामणीए॥मेरुपर्वतनेछेसारतो॥बिंबसहितगुणलेई
करिए॥नवमीगुंथोसुविचारतो॥२०॥चौदराजुगुणेआगलाए॥चौदभुवननेह
नामनो॥तेहगुणलेइकरीसोहेजलाए॥दशमीगुंथोसुजाणनो॥२१॥चौदरत्न
सोहामणाए॥चक्रवर्तिकन्नेहोयतो॥तेहनाणगुणलेईकरीए॥अग्यारमी
गांठउत्तंगतो॥२२॥चौदस्वरअतिरुवडाए॥भजनमांहिधुरिआदितो॥तेगु
णलेईकरिनिरमलाए॥बारमीगुंथोतेसादितो॥२३॥चउदईशानिथिअतिरु
वडीए॥उत्तलीजेएहसारतो॥तेहनाणगुणलेईकरीए॥तेरमीगुंथोसुविचारतो
॥२४॥चौदमनथकावेगलाए॥मुनिवरलेयेआहारतो॥तेहनाणगुणलेईक
रिए॥चौदमीगुंथोअवतारतो॥२५॥दुहा॥एआगमगुणनीरमला॥अनंतक
रावोचंग॥हेमतणाअतिरुवडा॥भावधरीबहुरंग॥१॥जिनवरआगलस्था
पीये॥मेरुउपरसुविचार॥पंचामृतनव्हणकरो॥भावधरिगुणमाल॥२॥
प्रतिष्ठाकरावोगुरुकन्ने॥महोछवसहितसुजांण॥पूजाकरावोअतिनीरम
ली॥अष्टप्रकारिसुखखांण॥३॥चौदअष्टकअतिरुवडा॥छंदस्तवनजय

अवरदेव॥यात्राकरवानामणीये॥२५॥सुरनरस्तवीयाएसार॥भावसहितअ
तिनिरमलाए॥समोवसरणमांहिजाय॥धरमसुणवासोहेजलाए॥२६॥तवरु
रखोनेविषा॥जयजयकारतेणेकीयोए॥चाल्योभावसहित॥हरखघणेमन
मांहिधरीए॥२७॥तिनप्रदक्षणादेई॥नमोस्तुकीयोतेणेरुवडोए॥स्तवनकीया
बहुचंग॥भावघणोमनमांहिजड्योए॥२८॥तस्येस्वामीगुणवंत॥संसारसागर
बेलडिए॥तुझदीठेपरमानंद॥माहरेमनतुझगुणजड्योए॥२९॥दुहा॥अनं
तज्ञानकरीलंकर्‍या॥दर्शनछेअनंत॥सौख्यअनंताजाणीये॥वीर्यअनंत
सहीत॥१॥तलेस्वामीमीदेखिया॥नयणसफलहुवाआज॥जनमसफलहु
वोमझतणो॥आजसर्‍यामजकाज॥२॥आजदालिद्रगयोमझतणो॥दुखगयो
मझओर॥तलेस्वामीमझभेटीया॥पापगयोमजघोर॥३॥तस्यविनास्वामीअति
घणा॥दुखदीठाअपार॥संसारमांहिअतिघणा॥तेअतिदुखनीवार॥४॥ईम
कहिविनयकरि॥बेठोसभामुझार॥हरखआनंदमनमाहिधरी॥भावसहि
तसुविचार॥५॥भासरासनी॥जिनवरवाणिनिर्मलीए॥मधुरीसुललितवांण॥

तो ॥ बारसनातिहांसांभळोए ॥ आगमनवपुराणतो ॥ १ ॥ नवबुझालाए ॥ तिहां
बुझियोए ॥ मिथ्यातगलीगयोघोरतो ॥ समकितनिर्मळउपनुंए ॥ श्रावकञ
वोतेघोरतो ॥ २ ॥ बारवरतलियानिर्मलाए ॥ श्रावककेरासारतो ॥ दांनपूजा
गुणेआगळाए ॥ दयानर्णोभंडारतो ॥ ३ ॥ वळिव्रतमागेनिर्मळाए ॥ तेब्राह्मा
णअतिचंगतो ॥ जिमदाळीद्रजांयेअतिघणाए ॥ फळपामुअनंगतो ॥ ४ ॥ नव
स्वामीकहेनिर्मलाए ॥ अनंतव्रतकरोसारतो ॥ जिमसुखपामोअतिघणा
ए ॥ वळितरिसेसंसारतो ॥ ५ ॥ भाद्रवोमासउजालडोए ॥ एकादशीअतिचं
गतो ॥ करियेएकासणुरुवडुए ॥ तेरसलगेउछंगतो ॥ ६ ॥ चोदसदीनउपा
वासकरोए ॥ निरमलअतिगुणवंततो ॥ आरदीवसारुवडुए ॥ सीयलपा
लोजयवंततो ॥ ७ ॥ भूमीसयनकरोरुवडुए ॥ सचितवस्तुपरीसागतो ॥ पोसा
सहितअतिनिरमलोए ॥ विधिकरोसमभावतो ॥ ८ ॥ अनंतकरावोरुवडाए
॥ सुवर्णरुपाकेरासारतो ॥ जोपोचनाहोयअतिघणीए ॥ तोसुत्रकेराविचार
तो ॥ ९ ॥ चोदगांठिअतिनिरमलीए ॥ गुणसहितजयवंततो ॥ चोदचोदगुण

सोमशर्मब्राह्मणवसे ॥ शास्त्रपढेमनरंग ॥ १९ ॥ सोमाब्राह्मणीतसुतणी ॥ सोहे
जिमगंग ॥ धनहीणानेदगेदमार ॥ अनाथिदुखवंत ॥ २० ॥ वेटिछेवळीअतिघणी
॥ पापफळेअतिघोर ॥ कलीरवकरेतेअतिघणी ॥ दुखसहेअतिघोर ॥ २१ ॥ काण
ढतिमागेअतिघणी ॥ घरिघरिसविशाळ ॥ पेटनाभरेवळीतेहतणु ॥ भुखलागे
जिमकाळ ॥ २२ ॥ दुहा ॥ एकवारकाणआणीया ॥ भीखमागीकरिजांणि ॥ तऊवनां
पुरेतेहघरी ॥ सहेतेदुखनीखाणि ॥ १ ॥ जिमवाकाजेरुवडो ॥ वेगेतेसुविशाळ
॥ अंनथोडुभुखजघणी ॥ पामोदुखअपार ॥ २ ॥ ढाळसवीनतिनी ॥ ब्राह्मणकहे
सुणोनारी ॥ अन्नथोडोतसेविसीयोए ॥ कीमवहसेमुझपास ॥ भीखमागंतातां
सेसुणोए ॥ १ ॥ नारिकहेसुणोकंथ ॥ घेरछोरुडांअतिघणाए ॥ तेजिमबहूअन्न
॥ तोकीमपुरेतसेसुणोए ॥ २ ॥ तसेआलमीअतिघोर ॥ इणेनयरपडिरह्याए ॥
अधमपणेसुणोघोर ॥ कागजमलदाणकह्याए ॥ ३ ॥ मगनखंडेभुमी ॥ दुखपा
मेअतिघणोए ॥ तेकासुणोतसेकंथ ॥ मतिनेछोडोतसतणोए ॥ ४ ॥ जैनधर्म
अतिचंग ॥ तेचराचरजांणीयए ॥ तेणेकीधेहोयसुख ॥ नवीयणजीववखा

णीयो ए ॥ ५ ॥ जिम जिम किजे जिनधर्म ॥ कीजे अतिसोहामणो ए ॥ तिम तिम पाप
विणास ॥ दुखदालिद्र जाये अतिघणा ए ॥ ६ ॥ गाम छोडी नसे कंथ ॥ अवरगा
मे हवे जाइया ए ॥ श्रावकमांहि जयवंत ॥ जिनवरस्वामी ध्याईया ए ॥ ७ ॥ नारि त
णी बोलसार ॥ मांमो तव तेणे निरमलो ए ॥ हरख उपमो तव ओर ॥ बुध्याणम
नि गुण निरमलो ए ॥ ८ ॥ तिहां थकी निसर्यो जांण ॥ तेज्या ध्याण मनोरथ धरी ए ॥
सन्निसन्नि तेजाय ॥ फल लेई खोलो भरी ए ॥ ९ ॥ तेणे अवसर सुरजाये ॥ विमान
वेग अतिरुवडा ए ॥ ईद्र ईद्राणीय चंग ॥ देवदेवि गावे जड्या ए ॥ १० ॥ विद्याधर व
लि दिठ ॥ विमान सहित गुणे आगला ए ॥ भावधरी मनमांही ॥ जयजयकार क
रे निरमलो ए ॥ ११ ॥ नृमिगोचर वलि दीठ ॥ हयगयरथ बहु पालखी ए ॥ धवल
मंगलगीतसार ॥ वाजीत्र वाजे रंगभरी ए ॥ १२ ॥ ते देखी विपुसार ॥ विस्मय पाम्यो
अतिघणु ए ॥ नवपूछवा काजे ॥ मनहरख्यो बुद्ध्याणतणो ए ॥ १३ ॥ कहो नवीय
ण तसे आज ॥ किहां जावा छो मनरली ए ॥ ते तसे कहो मजवान ॥ आनंद करी ॥
मनरली ए ॥ १४ ॥ तवनवीयण तेचंग ॥ बोल्या वांणी सोहामणी ए ॥ आनंत जिने

आनंत जिनेश्वर अनंत जिनेश्वर ॥ पाय पणमिसुं ॥ तीर्थंकर अतिनिर्मलो ॥ वां
छित फल बहुदान दातार ॥ सारदास्वामिनि वळी स्तवु ॥ बुद्धिसार ज्ञें वेगे मागुं
गणधरस्वामीने नमस्कार करुं ॥ श्रीसकलकीर्त्ति नवतार ॥ श्रीभुवनकीर्त्ति गु
रु प्रणमीने ॥ ब्रह्मजिनदास भणे सार ॥ ब्रह्मजिनदास भणे सार ॥ १ ॥ भास ज
सोधरनि ॥ नवीयण भावे सुणो आज ॥ कथा कहुं वखाणी ॥ अनंतव्रत रास
नीरमळो ॥ सांभलो सुखखाणी ॥ २ ॥ जंबुद्विप मुझार सार ॥ भरतक्षेत्र तसे जाणो
॥ मगधदेस मांहि नयरि सार ॥ राजगृहि वखाणो ॥ ३ ॥ श्रेणीक राजा केरराज ॥ नरे
ल्ही भंडार ॥ चेलणा राणी तस तणी ॥ बहुरुप अपार ॥ ४ ॥ जैनधर्म करे निर्मलो
॥ समकीतगुणवंत ॥ दानपूजा गुणे आगलो ॥ तेछे जयवंत ॥ ५ ॥ एकवार महावीर
देव ॥ आमानव तार ॥ विपुलाचल अति निर्मला ॥ स्वामीगुणधार ॥ ६ ॥ श्रेणीक रा
णो चालीयो ॥ वांदवा जयवंत ॥ वांद्या जिनवर नीरमला ॥ बेगगुणवंत ॥ ७ ॥ धर्म
सुणीयो तिहां निर्मळो ॥ सभासहित सुजांण ॥ तेणे अवसर एक आवीयो ॥ राजा
जीमजांण ॥ ८ ॥ रुपसी नामे आगलो ॥ सोहे जिम ईद्र ॥ धर्म करे सोहामणो ॥ जैसो

गुणचंद्र ॥८॥ अनंतवीर्य तस नाम सार ॥ श्रीमति तस राणी ॥ सीलवंती गुणे
आगली ॥ रूपतणी ते खांणी ॥९॥ चौदसहस्र गज सहित सार ॥ रथ ते टला जो
णी ॥ चौद लक्ष तुरंगमा ॥ तेजी चपल वखांणी ॥१०॥ चौद कोडि पायदल सा
र ॥ सेवा करे बलिवंत ॥ चौदसहस्र अंतेउरी ॥ रूपे गुणवंत ॥११॥ चौद से कुंव
र सोहामणा ॥ जैसा कामदेव ॥ अनेक राजा त संउलगे ॥ करे बहु सेव ॥१२॥
अवर रिद्धि छे अति घणी ॥ नवि लाभे पार ॥ धर्मफले सुख भोगवे ॥ पुण्य करे गु
णधार ॥१३॥ ते देखि विस्मय हुवो ॥ आणीक मन माही ॥ रूप सौभाग्य देखी क
री ॥ वलीवळी साह्मु चाहे ॥१४॥ तव आणीक राजा उठियो ॥ पुछे सीमंधर स्वामी ॥ क
हो स्वामी तस्ये ज्ञानवंत ॥ जिनवर सीवगामी ॥१५॥ ए राजा अति रुवडो ॥ आ
यो ईहां चंग ॥ कवण धर्म कीयो ईणे ॥ विशाळ ॥ ते कहो जयवंत ॥१६॥ जिनवर
स्वामी मधुरी वांणी ॥ बोल्या जयवंत ॥ भवंतर कज सुणो एह तणा ॥ आणीक
जयवंत ॥१७॥ भरतक्षेत्रमां हि जाणीये ॥ अयोध्यासार ॥ अयोध्या कहीए क
नयर सार ॥ अतिसु विशाळ ॥१८॥ पद्मखेड ते ह नयर नाम ॥ सोहे अति चंग ॥

न्वमां दध्नैनं हिमखंड पांडुर रुचा संस्नापयामो जिनं ॥५॥ दधिस्नपनं ॥
संस्नापितस्य घृत दुग्ध दधि प्रवाहैः सर्वाभिरौषधिभिरर्हत उज्वलाभिः ॥ उद्वर्त्त
नस्य विविधाम्य निषेककमेला कालेयकुंकुम रसोत्कटवारिपूरैः ॥६॥ सर्वौषधि
स्नपनं ॥ द्रव्यो द्वर्त्तनकल्कचूर्णनिवहैः स्नेहापनोदं तनोर्वर्णाद्यैर्विविधैः फलै
श्च सलिलैः कृत्वावतारक्रियां संपूर्णैः सकुंडधौतैः जुलधराकारैश्चतुर्भिर्घटै
स्तैः पूरित दिग्मुखैरभिषवं कुर्म्मस्त्रिलोकीपतेः ॥७॥ चतुःकलशस्नपनं ॥ क
पूरोल्लास सांद्र चंदन रसः प्राचूर्य शस्त्र विपासौरभ्या हृत गंध लुब्ध मधुप श्रेणी
समाश्लिष्टया ॥ सद्यः संगत गांगया मुनि महाश्रोतो विलास स्पृहा सजं धोदक
धारया जिनपतेः स्नानं करोमि श्रियै ॥८॥ गंधोदकस्नपनं ॥ ॥ उं स्नानानंतर
मर्हतः स्वयमपि स्नानांबु रोकाद्भितैर्दुर्गंधाहत पुष्पदाम चरुभिर्दीपैश्च धूपैः
फलैः कामोद्दाम गजांकुशो जिनपतिस्त्वमर्द्धसंस्तोतियः स स्यादारविचंद्र मक्ष
य सुखं प्रख्यातकीर्त्तिध्वजः ॥९॥ इति संक्षेपपूजाष्टकं ॥ कर्पूरवासितस्वच्छा
स्वादुशीतांबु धारया ॥ जिनेंद्र समयाचारसारानभ्यर्चयाम्यहं ॥ जलं ॥१॥ श्री

४१ चंदनेनहृद्घ्राण॥हारिणा नापवारिणा॥जिनेंद्रसम०॥गंधं॥२॥अक्षतैः
सौरस्त्यान्वितैः कुंदकोरकविभ्रमैः॥जिनेंद्रसम०॥अक्षतं॥३॥पुष्पैःपरिम
लस्फारपरागरसकेसरैः॥जिनेंद्रसमया०॥पुष्पं॥४॥नैवेद्यैःसौमनस्का
म्यस्वादुमंदानंदामृतैः॥जिनेंद्रसमया०॥नैवेद्यं॥५॥दीपैरविकराबाह्य
तमस्तोमदोद्द्योतैः॥जिनेंद्रसमया०॥दीपं॥६॥धूपैर्धूमध्वजोजीर्णधूमामो
दितदिग्मुखैः॥जिनेंद्रसमया०॥धूपं॥७॥फलैःसौरस्यसौरूप्यसौरभान्वि
तनिर्भरैः॥जिनेंद्रसमया०॥फलं॥८॥कुसुमांजलिनागंधजलतंदुलशालि
ना॥जिनेंद्रसम०॥पुष्पांजलिं॥९॥संपूजकानांप्रतिपालकानांयतींद्रसा
मान्यतपोधनानां॥देशस्यराष्ट्रस्यपुरस्यराज्ञः करोतुशांतिंभगवान्जिनेंद्रः
॥१०॥आहूतायेपुरादेवालब्धभागायथाक्रमं॥तेजिनाभ्यर्चनं कृत्वासर्वेयां
तुयथास्थितिं॥११॥दिक्पालानां स्वस्थानेगच्छगच्छस्वाहा॥इंद्रअग्नियमनै
र्ऋत्यवरुणपवनकुबेरईशानधरणेंद्रसोमस्वस्थाने॥१२॥इतिलघुअभि
षेकसमाप्तः॥७॥ ॥अथश्रीअनंतव्रतकथालिख्यते॥वस्तु॥श्री

पापनिर्दिग्धः॥पूतवाक्पूतशासनः॥पूतात्मापरमज्योतिः॥धर्माध्यक्षो
दमेश्वरः॥४॥निःसंगःप्राप्तकैवल्यः॥निकटाध्ववर्जितः॥अनवद्यो
महापूतः॥जगच्छेखरशेखरः॥६॥निःशब्दोगुरुसंपन्नः॥पापमापप्र
णाशनः॥मापयोगस्थनप्रात्मा॥कर्मघ्नोनिबलावहः॥७॥अजरोहिम
गोवृद्धः॥अचिंत्योऽप्रमेयोविभुः॥अमूर्त्तोऽकर्ताब्रह्मा॥विष्णुरीशः
प्रजापतिः॥८॥अनिर्वच्योविश्वकृत्स्वाच॥अनेयोनुपमोनवः॥अप्रमे
योजगन्नाथः॥बोधरूपोजितात्मना॥९॥इतिदिव्यशतं॥१॥स्थ
विष्टः स्थविरोज्येष्टः॥प्रष्टप्रेष्टोवरिष्टधीः॥स्थेष्टोगरिष्टबंहिष्टः॥श्रेष्टो
निष्टगरीष्टगीः॥१॥अनन्यः सकलाराध्यो॥निःपुण्योज्ञानलोचनः॥अ
क्षेपोनिर्मलोनित्यं॥सर्वसंकल्पवर्जितः॥१०॥अजेयःसर्वतोभद्रः॥
निःकषायोऽप्रवानक॥विश्वनाथस्वयंबुद्धः॥वीतरागोजिनेश्वरः॥११॥
अंतकोमदजानंदः॥अवाग्मनसगोचरः॥असाध्यः शुद्धचैतन्यः॥कर्म्म
णोकर्मवर्जितः॥१२॥इतिस्थविष्टाशतं॥३॥महाशोकध्वजोऽशोक

१७ :॥ कल्वष्टापद्मविष्टरः॥ पद्मेशः पद्मसंभूतिः॥ पद्मनाभिरनुत्तरः॥ १२
॥ अनंतो विमलज्ञानी॥ निस्पृहो सप्रकाशकः॥ कर्मजितो महात्मा॥
नः॥ लोकत्रयशिरोमणी॥ १३॥ अभवाघोवरः शंभूः॥ विश्ववेदिपिता॥
महः॥ सर्वभूतहीतो देवः॥ सर्वलोकशरण्यकः॥ १४॥ आनंदरूपचैत
न्यः॥ भगवान् त्रिजगद्गुरुः॥ अनंतानंतधीशक्तिः॥ स्तुसत्यक्रमया
त्मकः॥ १५॥ अष्टकर्मविनिर्मुक्तः॥ सप्तधातुविवर्जितः॥ गारवादि
त्रयोद्धुरः॥ सर्वज्ञानादिसंयुतः॥ १६॥ इति महाशतं॥ ४॥ श्रीवृक्ष
लक्षणः श्लक्ष्णो॥ लक्षण्यः शुभलक्षणः॥ निरक्षपुंडरीकाक्षः॥ पुष्करः
पुष्करेक्षणः॥ १७॥ अभवः प्राप्तकैवल्यः॥ निःकर्माणिरपेक्षकः॥ नि॥
ष्कलो केवलज्ञानः॥ मुक्तिसौख्यप्रदायकः॥ १७॥ अनायेशो महारा
ध्यः॥ वरदो ज्ञानपावनः॥ सर्वेशः सत्सुखावासः॥ जिनेंद्रो मुनिसंस्तु
तः॥ १८॥ अन्योन्यपरमज्ञानी॥ विश्वतत्त्वप्रकाशकः॥ प्रबुधात्मगवक्षा
श्रः॥ प्रज्ञास्तपूरणकारकः॥ १९॥ शंकरो सुगतो रुद्रः॥ सर्वज्ञो मदग्नं

तकं॥ ईशानो भुवनाधीशः॥ सपितो पुरुषोत्तमा॥ २०॥ इति श्रीवृह्मश
तं॥ ५॥ महामुनिर्महामौनि॥ महाध्यानो महादमः॥ महाक्षमो महाशी
लो॥ महायज्ञो महामुखः॥ २१॥ सद्योजातमहात्मानो॥ विमुक्तो मुक्तिवल्ल
भः॥ योगींद्रो नादिसंसिद्धः॥ निरहो ज्ञानगोचरः॥ २२॥ सदाशिवः चतुर्व
क्त्रः॥ सत्सौख्यस्त्रिपुरांतकः॥ त्रिनेत्रो त्रिजगत्पूज्यः॥ अष्टमूर्तिकला
युताः॥ २३॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्यः॥ सर्वपापविवर्जितः॥ सर्वदेवाधिको
देवः॥ सर्वतत्त्वहितंकरः॥ २४॥ इति महामुनिशतं॥ ६॥ असंस्कृ
तः सुसंस्कारः॥ प्राकृतो वैकृतांतकृत्॥ अनंतकृत्कांतगुः कांत॥ श्चिंत
मणिरभीष्टदः॥ ३॥ स्वसंवेद्यो महाभावः॥ प्रसिद्धपापनाशनः॥ तत्त्वम
त्वचिदानंदः॥ चिद्रूपचिन्मयोभवः॥ २४॥ सदेहप्रमितो जाता॥ चेतना
चेतनात्मकः॥ सकलातिशयाधारा॥ मुक्तिश्रीमस्रोकेहनोमहः॥ २५॥
महादयो महावीरो॥ महामोहविनाशकः॥ महाभावो महादर्शी॥
महान्मुक्तिप्रदायकः॥ २६॥ इति असंस्कृतशतं॥ ७॥ वृहन्बृहस्प

२० तिर्वाग्मि॥ वाचस्पतिरुदारधीः॥ मनीषीधीषणोधीमान्॥ शेमुषीशो
गिरांपतिः॥२॥ महाज्ञानिमहायोगि॥ महत्तामहिनात्मनः॥ महाद्धिम
हाविर्यः॥ महार्हंसपदस्थीतिः॥२७॥ महापूज्यो महावंद्यो॥ महाविघ्न
विनाशकः॥ महापूतोमहादेवो॥ महामहमहोत्सुतः॥२८॥ मुक्तामुक्त
कसद्दोषः॥ येकानेकविनीश्वरः॥ सर्वद्वंद्वविनिर्मुक्तः॥ सर्वलोकैकपा
वनः॥२९॥ महास्तुतोमहाधीरो॥ महादुःखविनाशकः॥ महामुक्तिपदा
धीशो॥ महाज्ञो महागुरुः॥३०॥ इति वृद्धशतं॥८॥ त्रीकालदर्शी
लोकेशो॥ लोकधाताजुद्व्रतः॥ सर्वलोकातिगः पूज्यः॥ सर्वलोकैक
सारथिः॥३१॥ नमाशेमारविध्वंशः॥ निःकषायोवियच्चुतः॥ भगवंतोगता
त्मानि॥ शांतिकल्याणकारकः॥३२॥ परमात्मापरंज्योति॥ परमेष्टीपरमे
श्वरः॥ परमात्मापरानंदः॥ परंपरमपावनाः॥३३॥ प्रभुतोनंतविज्ञानः
॥ संख्यानतनिर्वसंस्तुतिः॥ नाकृतिसाक्षरोवर्न्नः॥ ओमरूपोजिनात्मक
॥३४॥ अक्षयक्षज्ञासंदोहः॥ संसारछेदकारणः॥ निःकषायोमहा

॥८०॥ ॐ नमः सिद्धं॥ अथ महाभिषेक लिख्यते॥ जिनान्नमस्कृत्यजि
नप्रतिष्ठाशास्त्रोपदेशव्यवहारदृष्ट्या॥ श्रीमूलसंघेविधिवन्मुखानां
मानुप्रवक्ष्ये जिनयज्ञकल्पं॥१॥ नमस्कृत्य महावीरं निःपूजाप्रसिद्धये
॥ कुर्वेनिर्मलमहोद्योतं तम्नायमुपासकान्॥२॥ तत्रादौ मंत्रावन्महाभि
षेकविधिं विधास्यामः॥ सिद्धानाराध्यसज्ञावस्थापनाज्जिनशिनः॥ स्न
पनंनिधिवद्दिश्चदितार्थवीननोम्यहं॥२॥ प्रस्तुतस्नपनंनिंघ्रोध्यनहत्तं
संस्थाप्यवेद्यांकुशानुक्रमानपिवमिहैवतस्यातिकृतिंचाक्राननादैः जि
नं॥ नक्रयाशाकपुरःसरान्पिजेऽघं नीरसाज्यैःपयोदध्यास्तैदहशावना
रणकुंटैगंधोदकाद्यैश्चतं॥ इति विधियज्ञप्रतिज्ञानायवेद्यांजात्कुंकुमा
तुलीतदर्नडवर्णमुष्याक्तंहंतश्रीपेत॥ ओ॥ सोधर्मोयस्मनाकिप्रयीतकल्प
कल्पंमूर्द्धिमाराप्ययोद्वेवरिधारांयजेतिप्रथममधिशीरःपातयत्सुत्स
वेन॥ कल्पेजारत्नट्टघटोद्यैःस्नपनमनुसमंकुर्वतिगंधतोयैस्तवच्चैशान
मुख्याहातनदवन्थस्नपनयोनेपिपार्श्च॥७॥ स्नानानुस्नानमंचंद्रोत्थ

२२ णमलयरुहालेपनृपाद्कूलश्रीश्लिष्टांगोर्हद्दीप्तिप्रमुखपरीकरःस्फा
रितःस्वांतशुद्धिःसौधर्मीनृयवासःपिहितमुखश्छोदगमुखःप्राङ्मुखं
ततात्कुमंडपादिक्रियमयमुपपाद्यार्हद्दीक्षांयजेहं॥५॥लोकाकाशा
वकाशेसमवयदगिततोयावतिकापीयस्मीनृयद्दुपंन्नाविनुततवदपी
विविधयस्यकस्यापिजंतो॥तेदेतवद्विशेषेपीहीतमनविधीःप्रेक्षणेनु
ज्ञणेयःस्वःस्थोलोकंचतदद्वीधीतिसवनंश्रेयसेप्रस्तुवेस्य॥६॥नैर्मल्या
दिगुणानिशास्तवपुषोनैवायवर्यास्युर्षादीन्नूयेविलसालिनत्रिजगता
पूज्यस्यमुक्तीश्रियां॥निसाशक्राधियःप्रनोःकिमपिनःस्नानेनसाध्यंत
थाप्युच्चैःश्रद्धतोप्युनक्तीसुकृतैरित्येतदारभ्यते॥७॥भावकलोकश्रा
वानुबंधविधानार्थमेतच्चतुष्टयंपठीत्वापूर्ववीधिंविदध्यात॥ ॥निर्ग्रं
थार्याःप्रसादंकुरुतयदमीहाधतसधर्म्मदीक्षेर्दिवाःसर्वेप्युवानावि
कुरुतस्तुतनुस्मांभीमामेतह्यांस्नैह्लिव्याकर्म्मारीचक्रंकिमपीतदसमं
स्फूर्यदावजन्तिनः॥सोद्यायंशाशादिशात्रीजगदीहपश्यन्तस्थापतेनुग्र

राद्यः॥कर्म्मजित्कुंथुनाथश्च॥२४॥बोधसत्त्वुजगद्वद्यः॥विश्वैनैनर
कांतकः॥स्वयंनृपापहृत्पूज्यः॥पूनितोविश्ववस्तुनः॥२५॥इतित्रि
कालज्ञानं॥९॥द्विवासावातरसनो॥निर्ग्रंथेशोदीगंबरः॥निःकिं
चनोनिराशंसो॥ज्ञानचक्षुरमोमुहः॥१॥वन्नातिशोमहातिशो॥
रूपातितोनीरंजनः॥अनंतज्ञानसंपन्नः॥देवदेवेशनाशनः॥२६
॥वारणोनववेद्यांशि॥योगीनोज्ञानगोचरः॥जन्ममृत्युजरातंकः॥
सर्वविघ्नहरोहरः॥२७॥विश्वकुत्पद्यमस्तुत्यः॥पवित्रोगुणसागरः
॥प्रसन्नःपरमाराध्यो॥लोकालोकप्रकाशकः॥२८॥रत्नगर्भोजगत्स्वा
मि॥इंद्रवंद्यसुरार्चितः॥निःप्रपंचोनिरातंकः॥निःशेषक्लेशनाशक
॥२९॥लोकेशोलोकसंसेव्यः॥लोकालोकविलोपुनः॥लोकोत्तमोत्रि
लोकेशो॥लोकाग्रशिखरस्थितः॥३०॥नाम्नाष्टकसहस्राणां॥यःपठंति
पुनःपुनः॥तेनिर्वाणपदंयांति॥मुच्यतेनात्रसंशयः॥३१॥इतिदीक्षानाम
ता॥१०॥धाम्नांपतितवामोनि॥नामान्यागमकोविदैः॥समुच्चितानतुध्या

२१ न॥पुमानपूतस्मृतिर्निर्वृत्त॥४१॥श्रीमते सकलज्ञान।साम्राज्यपदमीयुषे।
॥धर्मचक्रभृते भर्त्रे नमः संसारभीमुषे॥४२॥महाबलनमस्तुभ्यं।ललितां
गाय ते नमः।श्रीमते वज्रजंघाय।धर्मतीर्थप्रवर्त्तिने॥४३॥नमस्ते दाप्यति
पुद्री।श्रीते श्रीधरते नमः।नमःस्तु विधियेते तुभ्यं।अच्युतेंद्र नमस्तुते॥
४४॥वज्रस्तेनस्तीगाय।नमस्ते वज्रनाभये।सर्वार्थसिधीनाथाय।स
र्वसिद्धिमितायुषे॥४५॥दशावतारचमरा।परमोदार्यतिकेलीषी॥
स्तुनवेनाभिराजस्य।नमोस्तु परमेष्ठिने॥४६॥तंदेवं त्रिदशाधीपार्च्चितपदं
घातिक्षयानंतरं।प्रोत्थानंतचतुष्टयं जिनमीमं नत्वाभ्रुनिनामिनं।यानस्त
नविलोकनानतजगन्मान्यत्रीलोकीपतिं।प्राप्ताचिंत्यबहिर्विभूतिमय
नंतकायप्रवंदामहे॥४७॥ इति लघुसहस्रनामस्तवनं समाप्तः॥छ॥
ऽष्टाधिकोत्तरसहस्रस्तुनामभाजः॥तिर्थेश्वरानःशतमखेश्वरानतोक्षमा
नाः॥इत्यर्चितावसुसुजव्यमुनार्घदानेः॥संघस्य संतु मतनंतवरमंगला
र्घे॥४८॥ॐ ह्रीं जिनेंद्राय सहस्रनामपूजिताय॥पूर्णार्घ्यं॥समाप्त

दीनु॥८॥अनावर्किंसिंहसान्निध्यविधानाय समंतात्॥पुष्पाक्षतं क्षीपेत
॥ए नेवर्षत्रिशाशीरमृतमृषीगणाःसाधुकृत्वानिराधाविश्वेदेवाश्वशा
स्त्रबुज्ञनपरीजनाघ्नंतु विघ्नानिहितोस्थानस्थाणवंचैवंनसदसुरमुनय
स्तेहमिदाश्वंतुवंतुश्च्वहस्यार्यासमाये जिनयजनविधिःप्रस्तुतोधिसमीव
न॥९॥त्रीभुवनसाधर्मिकायेषाय समंतात्पुष्पांजली क्षीपेत॥१०॥
प्रस्तावनं॥जिनसिद्धमहर्षिणामिष्ट्वा स्वस्नपनस्यच।पाठेन विधियज्ञा
र्थमनःपूर्वप्रसादयेत्।मनःशिक्तिविधानसूचनार्थमर्च्चनापीठाग्रतः
॥पुष्पांजली क्षिपेत॥मामापगात्वुत्तमतिर्थवारामिमाष्ट॥वृषभोवृषभ
स्मीवानित्यादि पठनीयं॥पुष्पांजलिं॥इति जिनयज्ञविधानं॥अथातः
जिनसिद्धमंत्री विधानं॥पुष्टिणोमणीवन्मलेस्यमहसिस्वार्थप्रकाशा
त्मके निर्मथ्यान्निरुपारसमोप्रचिदचिन्मोहाद्याणितिर्यक्षिपः कृत्वानाद्य
पिजन्मशांतममृतंसाद्यप्पनंतं श्रियान॥सदणीःनयहस्तसमंतपःसि
द्ध्यर्जेर्पिणवः॥१॥अनेनार्हस्थितिमात्रे सिद्धानामर्घं दद्यात॥तत्वास्तु

२३ वीततथाहीमर्हन्महाभिषेकारं तक्रियासां पूर्वाचार्यानुक्रमेणसक
लकर्मक्षयार्थंनाव पूजा वंदना वसमेतं ॥ श्रीसिद्धभक्तीकायोत्सर्गांक
रोम्यहं ॥ णमो अरहंताणं मित्यादि ॥ दंडकंपठित्वा ॥ थोसामि मित्यादिस्तव
मंचाधीत्य सिद्धभक्तीमिमां पठेत् ॥ असमानुग्रहनाण इत्यादि यज्ञोर्घ्य ॥ इ
ति सिद्धभक्तिविधानं ॥ वृषं वृषभसेनाद्या इत्यादि ० मुमुक्षुन् पर्यंतं पठि
त्वा ० सिद्धानुत्तरेण महर्षीणामर्घः ततः पंचांगप्रणामं कुर्यात् ॥ इतिम
हर्षिपर्युपासनविधानं ॥ स्वस्त्ययनं ० पठनं ० श्रद्धान बोधन ० इत्यादि य
ज्ञोर्घशर्म ० पर्यंतं पठेत् ॥ इति स्वस्त्ययनविधानं विधानं ॥ अथ आनोयज्ञ
॥ दिक्षाविधानं ॥ इंद्रोहं सुद्धरवरत्निनपुंगवगासोरसमेसोहं दसुगंधितमा
मपीमां ॥ सद्यक्ष सेंद्रमलयोद्भरसेस्त्रदं क्रिमेवावमस्त्रियुषतः स्वततनुवि
लिंपेत् ॥ १ ॥ श्रीचंदनानुलेपनं ॥ अंतसुप्यतिकादासस्तुचीरुचीत्राजिष्णु
मैत्रीनरं ॥ सत्तालापतिनागुणैर्नवविसोफीर्णैरिवसूत्रीतैः ॥ एकदम व
दार्षदग्निरपीवोढिरूपपुवेश्यपनस्वः क्लिद्रेपीडमीदांपुनोरहमिमेदिव्य

दधिवासमी ॥ २ ॥ दिव्यांगवस्त्रपरीग्रहः ॥ निःसंकादित्तायोपगूहनमुखोय
त्सुद्दीयर्हद्दर्शनं ॥ ज्ञानविच्त्रममोहसंज्ञासमयाष्टाचारवत्सुयत् ॥ यच्चुद्दवि
नयेन वृत्तमुदयद्रत्नत्रयंतस्मरन् ॥ कंठेनिर्मलितत्रमुक्तीकमयंयज्ञो
पवित्रंदधे ॥ ३ ॥ यज्ञोपवित्रधारणं ॥ आनिर्मलासिद्धिवधुकटाक्षछटेव
दिव्यैरचितालसांस्रै ॥ तांचारुचार्यैनिधियाजिनांघ्रिद्वयोपदं वोरवरआ
मिमालां ॥ ४ ॥ शेखरसंग्रमनं ॥ दाहोतिर्णस्वर्णसद्रत्नरोचिश्चकैस्तन्वन्
चित्रमाशामुखेषु ॥ मध्यानत्वज्ञानमारक्षलोकंप्रीणपाणौकंकणंधार
यामि ॥ ५ ॥ कंकणप्रणयनं ॥ करांबुजेपल्लवसल्लिरवंतिरत्नांशुभिर्निर्भिक्ष
यद्दृष्टिबुध्याविवाहमुद्रा ॥ मिवमुक्तिलक्ष्म्यामुद्रांकरोम्यंगुलीपर्वमुले ॥ ६
॥ मुद्रीकास्विकारः ॥ इंद्रस्थापनं ॥ उत्स्वातपूरितसमीकृतसंस्कृतायां
भुण्यात्मनिहभगवान्नरवमंडपाञ्जीवास्त्वर्चनादिविधिलब्धीमखादिना
गंवेदांयजामीश्वरीनृहृद्दिश्रीवास्तुदेवं ॥ ७ ॥ श्रीवास्तुदेवस्तुनामधिष्ठा
नतयानिशं ॥ कर्वन्ननुमहंकसमस्योन्यासीतिमानवे ॥ ८ ॥ संबोषट्

२५ इदमर्घं निर्वपामिति स्वाहा॥ आयातु नो वातकुमारदेवाः पूर्वोर्विहारा
वसराप्तसेवाः॥ यज्ञांशमस्मे स सुगंधमित्तमह्वा सनाशोधयता ध्रुशोबी॥९
॥ॐ ह्रीं वातकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय महापूतां कुरु २ हुं फट् स्वा
हा॥ प्राचीमैशानीचांतरां वलिवतीयदर्नपूलेन भूमिसमार्जनं॥ वातकु
मारस्थापनं॥ ॐ आयातु नो मेघकुमारदेवाः पूर्वोर्विहारावसराप्तसेवा
ः॥ गृह्णीत मजांशमुदीर्णसंयागंधोदकैः प्रशांतयज्ञभूमी॥१०॥ ॐ ह्रीं मे
घकुमाराय धरां प्रक्षालय २ अं ह्रं सं वं झ्वुं ठ्यः क्षः फट् स्वाहा॥ तद्वक्रां
चनादि दर्नतीर्थोदकेन कुंभेन भूतलं प्लावयेत॥ दर्नपूलोपांतजलेन भू
मिं सिंचयेत॥ ॐ आयातु नो वह्निकुमारदेवाः॥ आधानविधादिविधेय
सेवाः॥ नजधमिज्यांशमिमां मरवो वह्नी ज्वालाकलापेन पुरं पुनीत॥११॥
॥ॐ ह्रीं अग्नीकुमाराय भूमीज्वालय २ अं ह्रं सं तं झ्वुं ठ्यः फट् स्वाहा॥
तद्वज्ज्वालदर्नपूलानलेन भूमी ज्वालयत॥ भूमीशोधनं॥ ॐ ऋज्ञानतो
ः षष्टीसहस्रनागाः क्ष्माकामचारंस्फूटवीर्यदर्पाः॥ ऊत्तप्यतानेजजि

नाध्रुरोट्टीसेका सुधागर्वमृताभृतेन॥१२॥ ॐ ह्रीं क्रों षष्टीसहस्रसंख्येभ्यो
नागेभ्यः स्वाहा॥ इत्यास्यां दिशि जलांजलिं क्षिपेत॥ नागसंतर्पणं॥ ॐ व्रि
ह्मस्थानेमघोनः ककुभि क्रतुभुजो धर्मराजस्य रक्षोराजस्याद्रीड्पाणेर्व
निरुहभृतः शंभुमित्रस्य शंभोः॥ नागेंद्रस्यामृतांशोर पिशादकलशा स्नुष्य
द्वांदिगर्नादिवांशमसामिसमित्रमिद्धजनाध्यासनानिक्रमेण॥१३॥ ब्र
ह्मदर्नः॥ दर्नकांडं समादाय निश्च विघ्नौघखंडनं॥ क्षिपामी ब्रह्मणस्था
नेनेकया ब्रह्मसमहामहे॥ ॐ ब्रह्मदर्नः॥ ॐ मघोनः॥ ककुभ्रोगेदर्नं निर्न
यदर्नकं॥ नोगैश्वर्यादिवृत्सर्थं क्षिपाम्यमीक्षिप्तकल्मषं॥ २॥ ॐ संतापाप
नोदार्थं प्राणिनां प्रक्षीपाम्यहं॥ दर्नकृताशनाशायां सर्वज्ञस्नपनोत्सवे॥३॥
॥ॐ वह्नीदर्नः॥ ॐ तीक्ष्णोदक्षीणाशायां दर्नलतांस्तुलदीतं॥ क्षिपाम्यनिष
वारं नेयमारत्ने विनिस्मया॥४॥ ॐ यमदर्नः॥ ॐ मार्जनरारोहणदिक्शागो
निक्षोपक्लेशनाशनं॥ विरदेघदर्नमाध्यं जिनेंद्रानिषवक्रीयां॥५॥ ॐ नैऋ
त्यदर्नः॥ ॐ त्रैलोक्यस्यनाथाय नमस्कृत्य जिनेश्वरानि॥ वरुणस्यहरीद्भागे

२५ स्थापयेदर्शनमद्भुतं॥८॥ॐवरुणादर्शः॥ॐमारीनस्वनिर्दिग्देशाविष्टविश्व
नराःनरोः॥आन्निशोकसमारंभेदर्शनगर्भप्रकल्पयेत॥७॥ॐपवनदर्शः॥
ॐयक्षरक्षिनद्वेत्रेस्मीनृस्तिपामीशरणविद्वाणं॥यागदिक्षाक्षणेक्षेमेविद
धेदर्शनमद्भुतं॥८॥धनददर्शः॥ॐसर्वज्ञानयेज्ञानंनत्वाश्रीवृषलक्ष्मीनंवा
र्द्धमानेशमेशानीविदधेदर्निर्णीदिशं॥९॥ॐईशानदर्शः॥ॐत्रुस्फूर्यंस्फ
णामणीसुनोरगवृंदवंद्यसंसेव्यमानकमलेक्षणानागराजाजानिर्जरा
मरणनाशमहोत्सवेह॥दर्शंददामिमजलाक्षतचंदनाद्यैः॥१०॥ॐधर
णेंद्रदर्शः॥ॐजैवात्रकेहीमसुशीतलसिंहयानलोकप्रदिपवरोह
णीसौख्यधामः॥अक्षेशशांकरविभूषणसूर्यधामदर्शंददामीहरिचं
दनसाक्षतं॥११॥ॐसोमदर्शः॥इतिदर्शन्यासविधानं॥ॐन्नात्रिःपुण्या
त्रिरद्भिःपरिमलबहुलेनामुनाचंदनेन॥श्रीदक्षैरमीत्रिःश्रुचिसदक
चैरुजमेर्न्नीस्तवैःहृदैर्न्नीर्निविद्यैर्मखभुवनमीमेदीपयद्भिःप्रदी
पैःधूपैःप्रेयोभिरेभीःद्रसुभिरपीफलैरेभिरर्चामीनूंभी॥१२॥नूमस्का

नं॥१३॥दर्शस्वस्तीकशालिनिकराश्रिनिर्ण्येपुवेद्यांप्रभोःकोणेष्वास्यफल
प्रवालकमलात्वांगाबलंविसृजः॥रैरन्नोजमगंधगर्भसुपयःपुर्णाम्बुस
आष्टतान्॥श्रीखंडाक्षतचर्चितांश्चचतुरःकुंभानमुत्रानस्थापयेत्॥१४॥
॥इतिकलशस्थापनविधानं॥ॐन्नात्रिःपुण्यात्रि०इत्यादिनेत्रिरर्चामीकुं
भानकलशार्चनपुराकर्म॥मध्येत्यदर्शस्थचिवेदिगर्भेजीक्षोमजापीठमी
दंनमामी॥प्रक्षाल्मतीर्थाबुघटैरथैननदत्सुवाद्येषुपुनामिदांसैः॥पिठप्र
क्षालणं॥ॐन्नात्रिःपुण्यात्रीःरेभिरर्चामीपीठं॥पीठार्चनं॥लीखाम्यथेहश्रु
तबीजमत्रंश्रीवर्णमुद्रैःस्वदकैर्ईकारदैः॥श्रीगंधकद्यास्थापनीयमर्हदि
वंमुद्रानीयनिवेशयम्मीन्॥तथाद्यमात्तमाप्तानांदेवानामधिदैवतं॥प्रक्षी
णघातीकर्म्माणंप्राप्तानंतचतुष्टयं॥१५॥इरम्भृत्सुरजनृन्तागमनस्तलन
धिष्टितं॥परमौदारिकस्वांगप्रभाभस्मितभास्करं॥१६॥चतुस्त्रिंसन्महा
श्चर्यैःप्रातिहार्यैर्वभूषीतं॥मुनितिर्यग्नरस्वर्गिस्भिनाभीसंनिषेवीतं॥१७॥ज
न्माभिषेकप्रमुखप्राप्तपूजातिशायीनं॥केवलज्ञाननिर्णीतविश्वतत्वोपदे

२६ शकं ॥४७॥ प्रशस्तलक्षणाकीर्णसंपूर्णोदग्रविग्रहं ॥ आकाशस्फटिकां
तस्थाज्ज्वालज्वालानलोज्ज्वलं ॥४८॥ तेजसामुत्तमं तेजो ज्योतिषां ज्योतिरुत्त
मं ॥ परमात्मानमर्हंतं ध्यायंति श्रेयसामये ॥४९॥ वीतरागोप्ययं देवो ध्या
यमानो मुमुक्षुभी ॥ स्वर्गापवर्गफलदः शक्तिस्तस्य हि तादृशी ॥५०॥ यः श्री
मदैरावणवाहनेन निवेशितोंके विधृतातपत्रः ॥ ईशानशक्रेण सनत्कुमा
रमाहेंद्रसच्चामरवीज्यमानः ॥५१॥ शच्यादिभिश्यादिभिरप्सुदारं देवितिरा
नोज्ज्वलमंगलाभिः ॥ पुरस्सरं नित्यमिरिवाप्सरोभिरग्रेन टं ततिनिरुपास्यमाना
॥५२॥ शेषैस्तु शक्रैर्जयजीवनंदप्रमितिदशास्वस्वनिपदप्रपारीन ॥ इत्यादिवा
गुज्वलीतस्वमोदैर्भुजः प्रसूनैरुपहार्यमाणः ॥५३॥ संखेरः स्फूटास्फोटित
गीतनृत्यवादित्रहास्योल्लसनवल्गितानि ॥ संमंगलं गीधवलस्तु निनीस्वेरं
स्तुजद्भिः परीचार्यमाणः ॥५४॥ अहो प्रभावस्तपसां सुदुरमपि त्वजितापुनि
मास्वपित्स्यः ॥ यः सेयमाह्र वधुव मिहित्तोर्हन्नैवेद्यनादिस्वयमात्मवंधु
॥५५॥ सविस्मयानंदमिति ब्रुवाणैराशालोकमाणानीमुखरागतैः स्वैदेववर्षि

भिः स्फर्द्धितदेवमुग्मनरोगमुग्मेर विमस्यमानः ५६ प्रदक्षिणाध्वजञ
नेननीत्वपूर्वोत्तरस्यां दिशि मेरुशृंगं ॥ निवेश्य तत्र मसिलापीठे क्षीरोदनी
रैः स्नपितस्तुरैद्रैः ॥५७॥ तदेव देवं जिनमद्य जातमस्यास्थितं लोकपितामहं
त्वं ॥ इमं निवेश्यात्र रवेदीपीठे प्रांग्वक्रमस्मिन्नविधिनात्र शीर्षे ॥५८॥ ॐ लसंस
॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं धर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्निह पांडुकशिलापीठे तिष्ठ
तिष्ठ स्वाहा ॥ इति प्रतिमास्थापनं ॥ श्रीवर्णप्रतिमानिवेशनं ॥ सैषा मेरुतटी जि
नालयपुरः क्षोणी तदेवाकृतं ॥ पीठं पांडुशिलासनं प्रतिनिधिः सोर्हत्समाचार्हि
तः ॥१॥ इंद्रः सोहमुपासकाः क्रतुभुजस्ते मी चक्रमोरग्रनाः ॥ साचैषाभिषवांग
संपल्लीखं तत्सिंहमीदृंहीनः ॥५९॥ श्रीमंडपादिप्रशाकमंडपादिस्थाकस्थाप
नार्थमाद्यविधिंविदध्यात् ॥ अष्टांगसन्निधापनं ॥ अथ पूजाविधानं ॥ आह्वा
नमस्थापनसन्निधापनैर्जिनं समपाद्याचमनावतारणैः ॥ नक्तमाजलादैरधिवा
सदिक्पतीन्प्रसादनाद्यादधिमस्तुनोमीतं ॥६०॥ स्वांते शांतमपीस्फुटं स्फुटतव
नादाकानयामिहयत्र ॥ यस्तु ह्यात्मनि स्तु प्रतिष्ठनमपि तां स्थापयामि शायत

४७ ॥ कुर्वे सर्वांगमप्युच्चैस्तमपि स्पर्शविकारैः सदा ॥ पाद्याद्यैश्च पुनामियद्धीधिरा
सावितेवनवोत्तरं ॥ ८१ ॥ प्रकृतकर्म्मविधिविधानाय प्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षि
पेत् ॥ भगवन्नमितदसपरिवाराण्हेहीपरमकारुणीक विष्टरमीदमधिति
ष्ठाधितिष्ठ कुरु कुरु दृशाप्रसादं मे ॥ ८२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पूर्वहीतिष्ठ ति
ष्ठ मम सन्निहीतो भव भव संवौषट् ठः ठः वषडिति कोष्ठैः ॥ ८३ ॥ मंत्रैर्नमोऽर्हत्
स्वाहेसंत्तैरर्हतो बुधैः ॥ नांकः वार्गांधक्षतपुष्पैर्विदध्यान्मावाहनादिविधीन्
॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं एहि एहि संवौषट् नमो अर्हते स्वाहा ॥ आह्वानं ॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः नमोऽर्हं स्वाहा ॥ स्थापनमंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
क्लीं ऐं अर्हं मम सन्निहीतो भव भव वषट् नमोऽर्हते नमः स्वाहा ॥ सन्निधापनमं
त्रः ॥ त्रिर्भक्तिके जिनपादोपस्थानत्स्येस्थमंत्रानुच्चारयन् पुष्पांजलिं प्र
युंजीत ॥ जिनपादाब्जयोर्जन्मज्वरनाशाय्योः पुरः ॥ सर्वविघ्नापहां पंचगुरु
मुद्रां करोम्यहं ॥ ८४ ॥ मुद्राबंधनं ॥ सर्वांगदष्टांजिनमवद्वचैनेकगाम्पैः अष्टा
त्मवग्रहवशाय दलैः प्रनवकरोमितां स्वस्य सन्निहितमप्पित्र मंत्रयुक्तं ॥

८५ ॥ ॐ नमहायदिव्यदेहाय सद्योजाताय महाप्राज्ञाय ॥ अनंतचतुष्टया
य परमसुखप्रतिष्ठिताय ॥ निर्म्मलाय स्वयंभुवे ॥ अजरामरपदप्राप्ताय चतुर्मु
ख परमेष्ठिणे ॥ अर्हंताय त्रिलोकनाथाय ॥ त्रिलोकपूज्याय ॥ अष्टदिव्यदेहाय
॥ देवपरिपूजिताय ॥ परमपदप्राप्ताय ॥ ममात्र संनिहिताय स्वाहा ॥ ८६ ॥
इदमुच्चारयन् प्रतिमां परामृशेत् ॥ आह्वानादिविधानं ॥ सिद्धिबुद्धिविशुद्धिं
धृतिमघविधुतिं बुधुत्वं दृढं मृद्धिकांति शांतिप्रशांतिरिपुभ्रमविजितिं ॥ पुत्र
पौत्रादिनाप्तिं ॥ सोनागमनागममाशां स्तुचरितमकुजं सोऽर्ममोदायमोजः ॥ तेजोवि
द्यायशश्चप्रथयतुभवतां स्थापितो त्राय मर्हन् ॥ ८७ ॥ आशीर्वादः ॥ नित्यास्त्व
निगृहाक्षराङ्गि शिविरं संस्थाप्य सिंहासनेयः पाद्यैः प्युपचारमाप्यत कृतप्र
कर्म्मणा वज्रिणा ॥ तस्माद्दं विदधेस्मनर्म्मम णीवादर्यांश्च पुष्पकममद्वेदि
पाणितलेच पाद्यविधिमप्याचमक्रियां च क्रमात् ॥ ८९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं
नमोऽर्हते स्वाहा ॥ पाद्यमंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्वीं ह्वीं वं मं हं सं तं पं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वा
हा ॥ आचमनमंत्रः ॥ पाद्याचमनविधानं ॥ पुष्पाक्षतगोमयभस्मतकसर्ज

५८ धवर्द्धमानकदीपैः जलफलमृत्तपिंडकुशानलैश्च निराजये जिनेशमहंत्री
॥७०॥ देवोस्माकं जिनोयं करकमलमयामत्रगोरक्ततादौरे निक्षिप्तैः पस्तै
र्नाविमतिचरितानूक्षतानामनुमोतु॥ दुर्वारक्षोघ्नसूत्रैः स्वपयितुजरीतं गोम
यादस्मपिंडैः॥ वृणोम्मीसुष्टतगोज्वलत्तस्मिनक्षतैर्नस्मयत्वष्टकर्मापुण्या
क्रमं स्तुनक्षंसुरनिशाश्रीकलामर्द्धिशालत्रपिंडैर्लक्ष्मीधूपोजमोपस्कनमुप
सुरनिरजः पंचरूपवर्द्धमानेस्थिरूपं दिप्यमानोधुरङ्गीमधुरैर्द्दीपयित्वास्तुदि
पैः॥ संध्यानं चंपकादिप्रसवशाश्रीरजः भिक्तनोयैस्तनोतु॥७२॥ चोचाद्यैः स
ङ्गिरासाफलमलपुफलैः पुरीयीत्वाहकामैः॥ उर्वसिध्वर्यज्वालांवितशिख
रपुरैः साधुमृद्वर्द्धमानः॥७३॥ आधत्तामुच्चरैश्पदहर्दैर्नववनंदत्तपुलोनया
यज्वालोल्लासैश्चवाद्यध्वनिवधिरितदिक्चक्रमुत्तार्यमाणो॥७४॥ एतानिदा
शमंगलद्रव्याणीमस्त्वानिहस्तांमामुहृस्ससमस्तानिवाहेमादिपात्रेष्ववस्थि
प्यावतारयत॥७५॥ जीरांजनविधानं॥ जातिजपावकलचंपकपद्ममल्ली
किंकिल्लिकेतकिकुरंटकपाटलाद्यैः॥ कर्पूरदर्पयथमीकांस्वनतोंचनोली

लानामावाहनादिपुरस्सराधेषणाययमास्तहस्तपत्रपूर्णपात्रं परमगुरु
पचरणकमलयोरवतार्यपार्श्वतो निवेशयेत॥ अथ[illegible]गीरी॥ ॐ दिग्गिश्चा
श्चाहृयेयुष्मानायातसपरीच्छदाः॥ अत्रोपविश्यैतेनान्वीयजेपूमेकमादरात्
॥७६॥ आवाहनादिपुरस्सरप्रत्येकपूजाप्रतिज्ञानाय दिक्षु पुष्पाक्षतं क्षिपे
त॥ ॐरूप्यादिस्मेर्द्विघंटायुगपटुकटुटंकारमारीश्रुतनृपाशिशांतिचित्रो
ल ज्वलकुश्यविंतस्मवश्मविपस्रं॥ द्वपत्नामामान्यकादित्रिदशपरिवृतं स्त्वमश
च्यादिदेविलोलाक्षंवज्रनृपोङ्कटस्तगरुचिंप्राग्दिदेवं यजेहं॥ ॐ क्रीं क्रों इंद्र
गच्छागच्छसंवौषट्तिष्टतिष्टठःठः॥ ममसंनिहितोभवभववषट् इंद्रायस्वा
हा॥ इंद्रसपरीजनायस्वाहा॥ इंद्रानुचरायस्वाहा॥ इंद्रमहत्तरायस्वाहा॥
अग्नयेस्वाहा॥ अनिलायस्वाहा॥ वरुणायस्वाहा॥ सोमायस्वाहा॥ प्रजाप
तयेस्वाहा॥ ॐस्वाहा॥ भूःस्वाहा॥ भुवःस्वाहा॥ स्वःस्वाहा॥ ॐ भूर्भुवःस्वःस्वा
हाः॥ ॐ इंद्रायस्वगणपरीवृताय॥ इदमर्घंपाद्यंगंधंपुष्पंधूपंदीपंचरुंबलिं
अक्षतंस्वस्तिकंयज्ञभागंचयजामहे॥ प्रतिगृह्यतांइतिस्वाहा॥ इदंदिका

२० आह्वानं॥ यस्यार्थे क्रियते कर्म्म सुप्रीतो नित्यमस्तु मे॥ शांतिकं पुष्टिकं चैव
सर्वकार्येषु सिद्धिदः॥ ८८॥ रुक्माभ्रगघुर्घरस्रगालवद्गलप्रसृगृध्रोयत्रंगात्र
क्षागस्त्रैरौद्रपिंगेक्षणयुगममलद्वंद्वसूत्रं शिखास्त्रं॥ दंडी वामप्रकोष्ठधृता
मितरपाणिपात्तप्रणाक्षसूत्रं स्वाहान्वितं धुनोमि प्रतिमुखरसनं प्राचनं तेऽग्नी
॥८९॥ ॐ ह्रीं क्रौं अग्ने आगच्छ आगच्छ अग्नये स्वाहा॥ शेषं पूर्ववत्॥ कल्मांतो
द्वैघजे नृत्रिगुणफणीगुणो जाहितद्वे वघंटाटंकारायुग्यजंगक्रमदत्तनरः॥
व्यानरस्कास्यसंस्थ॥ चंडार्च्चिः कांडदंडो डमरकरमतिक्रूरदारादिलोके॥ का
र्मोद्दिकं नृसंज्ञाप्रथममपश्चयमं विघ्नप्रत्याययजामि॥ ॐ ह्रीं क्रौं यम आगच्छ २ य
माय स्वाहा॥ ॐ स्वारुढं धूमधूम्रायत शिरसिरुहास्याग्रदंष्ट्रास्यमालस्रा
कारविस्फूर्जत्स्फूर्तदितिकलायोजमातंगदष्ट्राक्रूरकमासरीतं निमिरचय
रुचिं पुरजस्तुतं रौद्रदृष्टादंत्रानयाम्यापरिकरमहं नैरुतं तर्पयामि॥ ॐ ह्रीं
क्रौं नैरुत आगच्छ आगच्छ नैरुताय स्वाहा॥ ९१॥ निःसांतः केलीपांडुकटकपीलवि
शालेदसौंदर्यदंतप्रोत्फूल्लसव्याखलकरकरीमकरव्योमयानाधिरुढं पिरव

जिनपादोरुपदिक्कीयेत॥ पुष्पांजली॥ चंचदुन्नमरीचीकांचनकनद्भृंगारना
लच्युतः॥ श्रीखंडस्फटिकावदातसितमहातिर्थांबुधारास्त्रिया॥ हेतुस्फूर्त
मेतयाऽस्यसमयान्मामोद्युतेराश्रितां॥ सक्रविंदपुदाप्रणामृपसपल्लवसांद्र
पिठस्थली॥ ९६॥ नीरधारा॥ इमैः संतापार्च्छिःसपदिजयदक्षैः परिमलप्रथा
मूर्छाद्घ्राणैरनिमिषदृगंसुमतिकरात॥ स्फुरत्पीठप्रांतैरिवसममनिंद्यस्यंदन
रसैर्वीलंपयं शांतमषदशांत्वसदद्युगं॥ ९७॥ गंधं॥ सुगंधिमधुरोज्वलासक
लतंडुलवृत्तिनास्ततै॥ नक्रीसलीलानेत्रैरिवनिरीयपुण्यांकुरैः॥ सुपुंजरच
नां जितप्रणयपंचकल्याणकैः नवार्तकन्नक्रमांबुपहरेयमेनीः श्रियैः॥ ९८
॥ अक्षतं॥ हृदयकमलमत्र्यचद्धिरामोदयोगाद्रसविसरविलासालोचना
द्भ्रहसद्भिर्विशादमजितबोधैवद्गनावक्त्रमैत्रैःस्मरणायुगमनूनैः प्राच्ययेहंप्रस
नै॥ ९९॥ पुष्पं॥ ६॥ सुस्पर्शद्युतिरसगंधशब्दरंगीविचित्रैर्हृद्यैर्दिव्यैरमीनि
वृत्तार्थकृतप्रसुरुपवदंधिसुगंधसान्नामैरमृतसरैर्वयजेयमुख्यैः॥ नैवेद्यं॥
॥ जाड्याधायिचवैरादिवशाज्ञिनमपिस्नेहसुक्त्वदहद्भि॥ सौदर्यस्वर्णयोगास्य

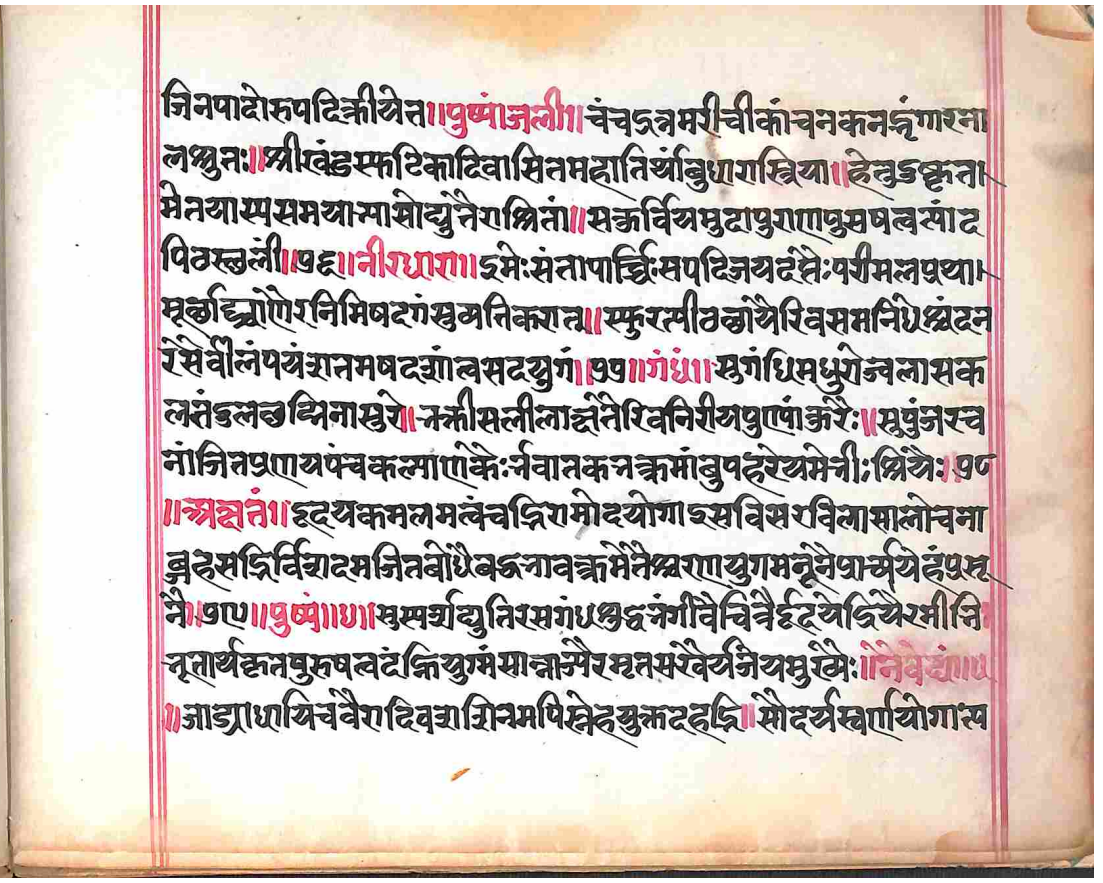

२७ दुत्तरुचिभिःसादरत्वाद्दिवादस्तांप्रध्वोणिस्तमस्ततापापहंतीमीरहैर्वैर्विध्व
लोकैकदिपस्याहस्वंचद्रिरेभिस्तवपदकमलेदीपयेयंप्रदीपैः॥दीपं॥६॥
धूमानिमानसत्कृष्णदिरधमस्तेमोल्लसज्ज्वलानेत्रनामातनू॥दुष्कर्म्मग
र्मुदविरोधुतयेद्भुताद्यत्वसादपयत्स्तगमस्यहमतत्क्षिपेहं॥धूपं॥७॥आ
स्वापाकप्रणयविलसद्वर्णगंधर्द्धिसिद्धस्फाड्यांतरतमदरमास्वादरम्यप्र
मेद्रैः॥एलाचक्रमुकुफ्चकश्रीफलाप्रातकाम्रप्रायैःश्रेयःसुखफलैःपू
जयेयंतदंह्नि॥फलं॥८॥अधिवासनाविधानं॥सौधर्म्मप्रमुखैःपुराज्ञातमु
खैर्मेरावितितिक्रमाज्जन्मनस्यासिरिहातिरोकुमधुनांसंस्थाप्यसंपूजितः॥मु
क्तीमुक्तीमिवाप्रमेयमहीमाकर्त्तुप्रतुर्यज्वनंदवोयंजिनपुंगवस्त्रिजगतांश्रे
यांसिसत्कृत्यास्मदा॥९॥आशीर्वादः॥अथदिक्पालार्च्चनं॥ॐइंद्राग्निन्याध्वा
देवास्तुरपतिवरुणाधारदैसनागेऽदूधिरक्षोज्ञादिक्तुवैद्याक्तिजगदधिपतेःप्रा
परज्ञाविकारानद्यज्ञेस्मिन्निवाम्मप्रयतिविहरतामेत्यपत्न्यादियुक्ताविघ्ना
नुघ्नंतोयथाखंक्षितनुतसमयोद्योतमोचिसन्मुखा॥१०॥इंद्रादिदिक्पा

न्मुक्ताप्रवालान्नरणेनरिसुपस्त्वानृदाराठनाहं॥स्फूर्ज्जद्दीमाहिपाश्रंवरुणम
परदस्यदस्मिणांप्रीणयामि॥ॐह्रींक्रौंवरुणागच्छगच्छवरुणायस्वाहा॥५॥
वलाक्कृंगात्रनिन्नांबुदपटलगलत्तोयपीतप्रभास्त्रप्नुस्सखांनरंहःखरकषीन
कुलग्रावसारंगसुग्मं॥व्यालोलज्ञातयंत्रंत्रिजगस्तुधृतिमयृद्भुमास्त्रसर्वाद्यो
नर्थसर्गक्षुमनिलमुदक्कप्रसर्गंतःप्रणामि॥६॥ॐह्रींक्रौंपवनागच्छगच्छ
पवनायस्वाहा॥ॐह्रंसौघेनोद्यमानंपवननरिस्त्वनक्षेनुपंक्तिविमानंस्वास
ढःपुष्पकाख्यंक्रममसवरसनादामसुक्ताकलापः॥अग्रास्याद्रामवेषस्तुलली
नधनदेव्यादिवक्राक्तंगःश्राक्तीमीन्नारिमर्मनिजस्तुवलिमुदस्तुक्तिविरःकु
बेर॥७॥ॐह्रींक्रौंधनदागच्छगच्छधनायस्वाहा॥मास्ताबाचालकिंकि
णपनणरणकाणकारमंजीरसिंजारम्योद्यद्वृंगदेलाविहरडरुसरच्छंदत्रप्तु
त्वर्षणस्थं॥भास्वद्भुपाभुजंगप्नुजगशितजटाकेतुकोदंडचूलंदधंस्थूलंकपा
लंसगणाशिवमिहार्चामीपूर्वरिश॥ॐह्रींक्रौंईशानायगच्छगच्छईशानाय
स्वाहा॥८॥वज्रोघंजस्तर्जितदृप्तसमनसमतरःकुमराजारूढं॥सुदत्तीवेन

३९ ऊं कुंभाक्रमणवाणस्फारणाग्रपाणिं ॥ संश्लिष्यं नंदकूसहस्त्रदि
नयद्घाणिकाणारवरुद्रक्रान्तवाल वृंध्रो द्यापीठमर्हद्बिंबनमहीपमधिवामीप
त्वासमेतं ॥ ९९ ॥ ॐ ह्रीं क्रौं धरणेंद्राय गच्छ गच्छ धरणेंद्राय स्वाहा ॥ वैरस्त्रं
वैरमाश्रोल्लसदरुणसटाटोपपुष्पांगन्नीकृतवालेंदुस्पदिदंष्ट्रोक्रमखर
नखरक्तारक्तसिंहसंस्थकुंभात्तरोहीणीष्टकवल्लस्वमनः स्वकुक्षितांस
न्नसुक्षं ॥ ज्योत्स्नापीयूषवर्षं जिनयजनपरं सोममुद्दं महामी ॥ १०० ॥ ॐ ह्रीं
क्रौं सोमाय गच्छ गच्छ सोमाय स्वाहा ॥ इस्यर्हन्महसामवायिकतया ज्ञा
नादियोगपक्रमोर्दिक्पालाः कृतनुष्टयः परिजनोक्तः क्षत्रियो मूनिमे ॥ द
ष्टं कामदमर्हद्धरमरंथिश्चि क्रमाक्रामतोन्नमारुंदधतः स्प्रैमहज्जन
त्वेतर्हि पूर्णाहुतिं ॥ ॐ ह्रीं क्रौं प्रशस्तवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहन
वधुचिह्नसपरिवाराः ॥ सर्वदेवा आगच्छत संवौषट् ॥ तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः मम स
न्निहिता भवत भवत वषट् ॥ इदं जलादिकर्मार्च्चनं गृह्णीध्वं ॐ भूर्भुवः स्वः स्व
धा स्वाहा ॥ पूर्णाहुतिं ॥ सद्येनाति स्वगंधेन स्वच्छेन वकुलेन च ॥ स्नपनं क्षेत्र

पालाय्मैतैलेन प्रकरोम्यहं ॥ १ ॥ नो क्षेत्रपाल जिनपप्रतिमांकराल ॥ दंष्ट्राक
राल जिनशासन रक्षपाल ॥ तैलाहिजन्मगुडचंदनपुष्पधूपैर्भोगं प्रतीच्छ जग
दीश्वर यज्ञकाले ॥ क्षेत्रपालाय यज्ञेस्मिन्नेतत्क्षेत्राधिरक्षणे ॥ बलिं ददामि
दिश्यग्ने वेद्यां विघ्नविनाशने ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रां क्रौं अत्रस्थ क्षेत्रपाल अत्रागच्छ २ सं
वौषट् ॥ तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥ इदमर्घं गृहाण २ स्वा
हा ॥ इति क्षेत्रपालार्चनं ॥ दिक्पालाः प्रतिमे वत्ताकुलजगद्दोषार्हदंडोद्भवास
धर्मप्राणयेन वद्धनगवत्सेवानियोगेन वा पूजापात्रकराग्रतः सुरमुपेत्या
पातवल्मर्चनाः ॥ प्रस्तूहान्निवखलान्निरस्यत जिनस्नानोत्सवोत्साहिणं ॥ १ ॥
॥ अधेषाणार्घः ॥ दिक्पालार्चनविधानं ॥ एवमत्रस्थदिक्पालास्तेभ्यो मंत्रैः
पुनर्दिशेत् ॥ अग्निकुंडे सप्तशः सप्तधान्यमुष्टीस्त्रिराहुतिं ॥ ॐ श्रां क्रौं क्लीं इंद्राय स्वा
हा ॥ अनेन जलकुंडे सप्तभिः सप्तधान्य मुष्टीनिरिज्याकुंभं विद्यात् ॥ एवम
न्यासिष्वोपि ॥ छ ॥ ॥ अथाशीषिका ॥ सानंदं स्तुतिमुद्वरंत्व मधुरं गायंतु मंद्रस्व
नेरातोद्यानि स्फालयंतु निगदंत्वाशीः सर्वमंगले ॥ नृत्यंतु स्फुरस्नावमादध

३२ नुवासेवांयथास्वंसमेपुण्योयंजिनराजमज्जनविधावर्घमियास्मुद्धृतः॥१॥
॥अर्घोद्धरणं॥जलैर्गंधाक्षतप्रसूनचरुदीपधूपफलोत्तमैः॥दधिदूर्वादिमंग
लयुतैःस्वर्णकांचनभाजनार्पितैः॥रचितमिमंविचित्रतुर्यत्रिककीर्त्तनज
यजयस्वनस्वस्यनिधसम्मुदमर्घमनर्घपरिक्षिपेत्॥१॥अर्घविस्तारणं
॥ॐआहारानयनेषुअस्त्रास्त्रदानदत्तावधानकं॥खंडस्फुटितजीर्णजिनाल
योद्धारणैकधीरकं॥श्रीजिनगंधोदकेनपवित्रीकृतोत्तमांगं॥साहदेवदत्त
स्मदेवदत्तपुरश्रीमदजिनवल्लभस्वामादिमश्रीपादपद्माराधकंसमस्त
नमज्जजनयशोवृद्धिपुण्यवृद्धिसर्वदुरितोपशांतिनिमित्तमर्घमंगलानिषे
ककापयनिसावधानात्मवंतुसर्वेजनाः॥ॐपरमपवित्रसरित्सरसीसरस्तडा
गवापीकूपपुष्करिणीसुदीर्घिकाप्रभृतीष्वुत्तरतीर्थेषुनिर्झरेषुतत्रस्थितिंप
रिहृत्यजिनाभिषेकांगपुरोगतावेनात्मानंजडव्यपदेशमपाकर्तुकोमेरिव
कलधौतकलशांतःप्रवेशेनस्वीकृतपारतंत्र्यवृत्तिभिःस्पर्शनिमात्रेणैवशा
निरेकासद्यःसर्वांगीणरोमांचमावेःकुर्वाणैरप्यक्करसत्वेपिपिकयापिस्व

चारुताधिदैवतत्वेनकिन्नराणामपिस्पृहणीयाःकांतिकाद्यान्निर्माणनि
र्मूलीतमनजनामकर्मनामभिःप्रतिष्ठस्यालक्ष्मीकटाक्षपातैःरुद्रोर्ध्वनयनो
द्भवस्याप्यपवित्रत्वसंपादनेनधाराधिरूढःगद्यापहारगर्वैस्त्रीतविर्यत्वेपिसं
स्कारानुवर्त्तनधुरीणत्वेनकर्म्मसहस्रकराणांसमर्पितसहस्रवीर्यविशेष
णैराकर्णपूर्णस्वर्णकंत्वेपिसुवर्णभावेनगंधगौरवाचगम्यसद्भावैःसत्त
द्विकारतिरस्कारपुरस्कारणास्फारस्फुरद्रसप्रतनोवेरमीतिः॥२७॥आयुःपीयु
षकुंडैःस्नपितमणीस्वनितिः॥नोमूखीवल्लिकंदैर्मधामस्यांबुवाहैर्वरफल
तरुनिर्नैत्ररत्नाधिदैवैःनिष्टत्तैर्घ्राणपेयैःप्रचुरमधुरीमस्नेहडंडुनापराज्येः
कमेद्धियंगवीनैःस्नपनमपनयध्वांतमानोर्जिनस्य॥२८॥घृतस्नपनं॥धर्म्मा
र्थकांमपरमोदयस्तम्भितानामप्यच्छिनत्सरमवर्गाविकीर्षयायः॥आयुर्दी
पार्थसुरवक्रुक्रमत्तुष्टीपुष्टीस्नानस्यपवःप्रतनुतागयमाज्यपुरः॥२९॥आ
शीर्वादा॥आ०पुण्याह०गौतमस्वामी॥इष्टी॥दुग्धाभिषेकः॥ॐमज्जा
नेरिवकठोरजाठरानलखलसंसर्गोप्यनुवर्द्धतनिसर्गमाधुर्यैरजस्रालसा

२४ नीरस्यपारखशोनामृतलिप्सायाविहितपाथोधिमंथनमहाप्रयासानुकौ
मुदीदोकोमुदीविलासहासिनानिजद्युतिवितानेननूनंपिबुधानप्युपहस
द्भिःसुधार्जनोपयोगजन्मतयाखलाद्युपयोगमनपेक्षाणैः॥क्षीरांतरांणी
तिरस्कुर्वाणैःचक्रिणामप्यनन्यसाध्यस्तुद्देदनाप्रतिचीकिर्षयानिसोपयो
गयोग्यत्वात्॥जुगुप्सितापरसोजनांगैर्वरारोहासहस्त्राणामपिस्मरणपता
याप्रकाशितस्वप्रशक्तीमाहात्म्यैस्तुषैडकहैरैरपित्रिप्तानुबंधिभिःक्षातक्षी
णक्षीरैरप्यस्वप्रसैर्मैः॥काशप्रकाशैरपिकाशनाशनैरसायनैरपिअमह
रैर्मस्त्रमहैरपीयोषीतामतिप्रीयैर्वत्सप्रियैरपिजीर्णज्वरकल्लिहैरपि
लक्ष्मीहरैरपीक्षुचिरुचिगौवैरैःपरमक्षुक्कलेशपाविलासैरिवाध्मात्ममवका
शमनाशादयद्भिःस्नानप्युपमुपादायवह्मिक्षुकामस्त्रीरेनीः॥१०॥ॐजःस्यामुख्य
दोनैःप्रथितेवल्लफलैर्जीवनीयैर्मधुधुर्मैर्माधुर्यस्नेहशीलान्वयस्तुक्षुद्रस्ये
र्मैर्घृतावाकूप्रमोदैः॥श्मागोस्मैर्द्रविदशपदकुटस्वदतोर्जीर्णधारासहा
स्रैर्दिग्मार्गमैःपयोभीःअनुममलसहस्रसंस्नापयामः॥दुग्धमंत्रः॥११

षीनयाजिह्वायालांपसमुद्घाटयद्भिःस्वाभाविकपरमनिर्मलात्वनपरभाव
गाढसम्यक्त्वमनुस्मरयद्भिःसुरतिरीणीनीरपित्तनिरदोक्षारमाधाराण्यपि
पुण्याशयैवैचित्रीवशाद्धपातनानानांवैरपिदिमांबुवित्रममाविनाणैःसुमन
सामपिमनस्तुसहस्रादृष्टिपथप्रस्थायतयाक्रूणाहीरनिरधिनिरसकाचम
त्कारमवतारयद्भिःस्नोनीः॥१॥ङ्क्षांदांगैर्वधुसंगैरिवजिनमतवत्क्षीवंनैस्ल
र्केशास्त्रप्रसैर्दीप्तविदिदक्षैःप्रमुदीतपतिसमूमानवरपितृद्धिः॥द्रवैर्मंत्रा
दिनोवैरिवहीमधुकरव्रातवत्मातिशीतैरेभिःपीयुषभिर्द्धिःसुरसरीद्धदकैः
स्नापयामोजिनेशं॥तीर्थोदकमंत्रः॥मुक्तासुर्णसुवर्णकांतिविसरभाजा
नजगत्पावनी॥कारोत्सेकनिरीणमंत्रजपनायासंविदस्याप्परं॥हर्षणांतिजिनां
गसंगसमुपात्तनांतमलोन्मूलनःस्नानमानित्रयेमेवमज्जनजलांभेताभिधि
न्वेतुवः॥३॥आशीर्वादः॥आतिपुण्यातिरसेनीरीशंयजामि॥इष्टि॥निर्मादि
कातिषेकः॥ॐमूलाग्रपर्वपरिसागेप्यशक्तभावेनजिनयागयोगेस्म॥कैला
सशारस्यैर्नर्मलगुणयोगैपिकरदंडोमहूनिनमिःस्नावणीयसारस्मः॥पौढ़ि

३३ कवांशीकप्रमुखेष्ठदंडस्थःस्तम्भाणलधान्मालाभाम्लमाणवासरष्टविंशतित्व
विदाहित्वगुरुत्वदोषलेनमुमुक्षुणामनुपयोगयोगपाकेजोनुबंधनिबंधनत्वे
नधर्मसंतानार्थितयात्रैवर्णिकगृहस्थानामुपस्कारपूर्वकमासेवनिया॥साव
र्णप्रणयेनैकनाम्नचामीकरकरीणामंतः॥विश्वपज्ञोन्नातिशायमुद्रावयंतः
॥ध॥यदरीकृतनैवेद्यतामधुरताशेसप्रसादोद्धुरा॥स्निग्धस्वादुविपाकघंटुणा।
तयादीणास्त्रणंतिक्षाणन॥नैरिक्षुरसैर्जितंमनुमादस्वखर्जूरराजादन॥प्रा
चिनामलकाम्राचाचकरकदाक्षादिजैर्वरिसैः॥रसस्नपनं॥यस्यानिशंसमम
रैसेकनिधेःस्मरंतःशाकादयोपीसममशर्मरसंस्पृशंति॥श्रेयःस्वजस्वयन
दृष्टीपुनस्यनत्तुःप्रीणांतुविश्वमनिषेकरमोघणेषः॥६॥आशीर्वादः॥आशीः
पुणपानिण्रेत्रीशंयजामी॥इक्षुरसाभिषेकः॥ॐनीखीलस्नेहनुवनदीराट्जी
वंनैःकायानलसंजीवनपीयूषैःविषापहाररसिद्धमंत्रैर्वयोराज्यस्थापनाबु
ह्निसचिवैश्चरमधातुसंवर्द्धनविधुरस्तसमस्तवाजिकरणाहंकारैःसौकुमा
र्यब्रह्मचर्यस्थापनाचार्यैःप्रजासर्जनावनारितविधात्रभापास्तौरैः॥स्वर

॥ॐह्रींरांतोधिपयःप्रवाहधवलंस्वरूपमाध्यायतां॥बाह्यंतुक्षीमरंकरो
सकिरतंयोमुक्तिमयान्तरंतेस्मायंस्नातेहितैतनतस्तःक्षीरप्रवाहोलुठन
हिपादिश्वजनस्यशांतिमुदयंकीर्तिप्रमोदंजयं॥१२॥आशिःपुणपानीःरेति
रीशंयजामि॥इति॥क्षीराभिषेकः॥ॐशिशिरस्यैर्शरपिनृशोसपरीणामेरु
दृर्णमार्द्रैवैरपिशीतस्नुव्रनावैःमग्नदकौरैरपिसिद्धगुरुत्वैःपवमानसप
नैरपीपावकसंवर्द्धनैःपीनशीसनैरप्यनेगसाधनैस्त्रिजगजारेसमार्गणसं
बाधमसमांतिनिःस्नाद्भिसंकटत्वस्रष्टयेविश्वसृजंस्वामिनमेवविज्ञापयि
तुमिच्छंतिविनिरिविश्वसृजंस्वामिनमेवविज्ञापयितुमिच्छंतिनिरिवकीर्ति
नीरतीविश्वाटतयास्तुगुप्तमनुवेद्धरतिविश्वंदैः॥कैरण्यमीती॥१३॥रुच्यैर्व
ल्गशिलेयशाल्मधुरैसंतानिकाबंधुरैः॥समकाकककपिच्छगंधस्तगोरोवि
प्रमुनिर्मंगले॥राजदाजनताजनतांतिकरस्फारस्फुरत्कांतिभिः॥स्निग्धामोद
धिनिःप्रतुंश्चविपयाःसूतैःस्वहस्तोद्धृते॥दधिमंत्रः॥ध्यायंतिमोहमथनाय
यशःसुधांशुङ्गोदधिंदधिमनंतचतुष्टयं॥नृयान्नपादिजनतास्मृतदंत

३५ गसंगाद्भूतार्थमंगलमिदंदधिमंगलाय॥१५॥आशीर्वादः॥शांतिःपुण्या
नीःशांतिरीशंयजामि॥इति॥दध्यभिषेकं॥कंकोलत्वंग्रंथीपर्णागुरुतुरुहीनज
टाजातिपत्रीलवंगाःश्रीखंडैलादिचूर्णैःप्रनुन्नीरिवधूल्मेघधूलिविमिश्रैः॥
आलिप्योद्वर्तत्स्त्वधौसमलयजरसैःकालमेःपिष्टपिंडैःआद्याद्विल्वकषाये
र्जिननतनुमसितंस्नेहमाद्गालयामः॥१६॥स्नेहापनयनं॥रक्तरूपामासिता
सीतहरीद्रानवर्णान्नपिंडैःस्नानस्नोदोलिखितमवतार्जानुपुर्व्याजिनेंद्रं॥नं
द्यावर्ताद्युपहीतपुरोदिव्यपुष्पाहताद्यैः॥नंद्याविश्वद्युलिमलतिदेमंजुनी
राजयामः॥१७॥मंगलावतारणं॥शांतिःपुण्यानीःयजामि॥इति॥लवणोत
रोपस्कारः॥ईशमष्टापदाद्यैरपिहरीप्रियैर्विचित्रोपलखचितैरपि॥भवण
विमुखैःकंठार्पितदामकैरपिकाविम्यनिष्टैः॥दृष्टुदूरैरपिचारुफलपत्रारा
विदश्रीकैःसज्जंधसुमनोवसुहिरणापगान्तिरपी॥जडाग्रामैश्चसुमनिरपिस्व
प्रकाशप्रकाशप्रधानैरुत्सुतैरपी॥कृतमालयाहतचर्चैःपूर्णैरिवमनोरथै
र्नआत्मनोपरमानंदमादधानः॥१८॥क्षीरोदाद्याःसमुद्राःकिमुतजलमुचः

पुष्करावर्तकाद्याःकिंवाद्येवंविहृतात्सुरसुरनिकुचाविद्धीसूद्यमानैःपी
युषोत्सारीवारीप्रसरत्तरकिलदिग्गजन्मातमेतैस्तन्मःशास्त्रेरुदहमैर्युगपद
तीषवंश्मीपतेपूर्णकुंभे॥१९॥कलशमंत्रः॥आसुक्षीररत्नसेनपांडुकशीला
सांनिध्यंसमद्भिदोदेवौघानमर्यतमिषजननस्नानोद्गारंहसन्॥लोकाने
षपुनात्नुपावजजिनाधीशांगसंज्ञार्जितःस्वांतह्लालनवाक्षीरुज्वलचतुःकु
भाः॥२०॥आशीर्वादः॥शांतिःपुण्यानिःशांतीरीशंयजामी॥इतिकलशाभी
षेकः॥ईद्विक्कवालविलसत्परिमलाघ्राणलोलेनदिंगंतावलकपो
लपालीविगलान्मदजलजुगुप्सयानिमर्पितांमदांधमधुकरनिकराणां
झंकारसंरावैःश्रवणकुहरेष्वानंदरसमभिःवर्षद्भिःशारस्कीकांचुंबन
गलत्स्वेदकोतोपलसलिलपूरानुकारितयापुकामरमणीयंप्रकृतिरूपमु
पाक्रवीणैरप्रसाधारणवसुंधरागुणमस्मेरेणावसुरस्तीनमज्जमविशेषैः॥
सांगसमुपेत्सोपासेनकेनचिंक्रययनिशेषेणचद्धंपिनिश्चलायतमनिमेषय
द्रीः॥सद्यस्तापापनोदक्षेणशीतस्पर्शविशेषेणविरहीणांस्वसमागमस

मयोजृंभीतरोमांचकंचुकितवल्लभाङ्ग चक्रंत्रनिर्दग्धपरीतंत्रशर्मकृन्मी
नयज्ञि ॥ स्वचित्तमत्वगुणानुरागनिगदीगडीतमिवांतःकरणांघ्राणपरीता
र्पितांगंधविशेषेणमुग्धुरासंजयज्ञीरनिर्वचनीयसौरभेनानीनेयकाया
न्मधोमुखयज्ञीरसीनी ॥२१॥ पंकेजैसहवासिनीःकुवलयैःसौगंधिकैःकै
रवैःरभैरप्यधिवासीतैःसुरभिभिःक्षोदैस्तथोपस्कृतैःश्रीखंडैकवरागुरु
प्रमुखैजैःकल्याणकंस्नाननान्नियज्ञीस्त्रिजगत्स्वनोरजिषवंगंधोदकैःकर्म
द ॥२२॥ गंधोदकमंत्रः ॥ यच्छ्रीरोदपयःपरंस्वविलसगंधोद्यमर्हन्मृजाद
म्भसानीषवेपुवुभरूपदाकुर्युःस्वरास्वेषुच ॥ तद्गंधोदकमेतदार्हत्परंपूतं
परंमंगलं ॥ पापंनःसकलंनिहंत्वस्थानेसशीर्षार्पितं ॥२३॥ गंधोदक
वंदना ॥ ओं निःपुण्याजीरसीनीरीलयजामी ॥ गंधोदकाभिषेकः ॥ इत्येभीषे
कानिवर्तनं ॥ अथविधिशेषं ॥ येमेराववतिषिच्यसंतिमघोनेरुक्माजगक्षांत
ये ॥ स्नाताःस्नानजलैःपरीसहरयोगर्द्धंतिनृसंततिच ॥ प्रार्चाभस्तसघोजल्ला
दिकुसुमांजल्यानपत्रादिभिस्ताशेखीलशांतयेनिमिनुमोत्वकृशांतिधारां

जलैः ॥२४॥ विधिविशेषविधानप्रतिज्ञानायपुष्पांजलींक्षीपेत् ॥ चंचदुन्न
मरीचीमीमादिपूजाष्टकं ॥ प्रागुक्तमंत्रापीयोऽप्यसमस्तुष्टैःस्वरनीकरोमीनज
नेकिर्मामीतस्पोस्तनयावाग्देवीकरिचंदनेनविघ्नधेस्मरंकरोम्यहंतं ॥ सद्वृंत
विशावदार्चैतःशुचिजलैःपापंहपामीसनीध्यानेशामदिवायमासपद्योः
पुष्पांजलिःकल्पतः ॥ पुष्पांजली ॥ ओंपिचा ॥ हषगोदृषडस्मादि० ॥ पुष्पांज
लिविधानं ॥ ओंदिनाद्योसुनःस्वस्तीइत्यादिपुष्पांजलीविधानं ॥ शक्राःके
वलीलक्ष्मीसंपदधिपंक्तत्रयांत्यैःशीवःश्रीकांतासमहुपायैनेःपरिचरणा
त्पापक्षीदेयंमुदा ॥ स्तुत्येच्छत्रवितानचामरमुखैर्जास्मेदीरंणाणोनपले ॥
गुणेक्षित्रवचांगकर्मनीरविप्राचांमीनृयोद्यतांछत्रादिमहामहःनमाना
क्षादयंनीसमवस्तुतिमिवर्ईहत्तांस्वात्मतत्वं ॥ श्रोतिसंस्कारकाष्टामिवजननत
नुवन्मानयीयांमुनीनां ॥ एतांश्रृंगारनालानतपदनमृतैःपादपिठोपकंठेश्रीत
र्ःपातयामःत्रिभुवनजनताशांतयेशांतिधारां ॥५१॥ शांतिधारा ॥ मस्याचां
पीठमाग्रजिनमीहकमलस्यार्हतोंतःशिवादिमंत्रैश्माशास्तुधर्मप्रवचना

२७ त्रतिमाचैत्यगेहान् ॥ विदिक्षु स्वष्टाशीति षट्‌षट्‌त्रीदशापरिष्टतानर्हदस्म
णीदिश्य दक्षाक्षिष्टाजेर्हं विधिवदधमरमाल्लालसो मंडलेष्टो ॥४२॥ मंडला
र्चनस्नवनार्थमर्हत्सुरः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ अथानंदस्तवः ॥ जयदेवप्र
सिद्धेनस्वानाथं गामुनिर्हमे ॥ जयस्त्वांतनयश्छद्मस्वनकायामेतुरंजयः ॥
४३ ॥ जयदिशां गगात्राणिस्वनस्यामेक्तनार्थजयस्तेजोनिधस्वस्तिनूनेत्रा
क्षेमेविनिदया ॥४४॥ यद्दर्शनविश्वहर्षादीनावनादैवतंविशो ॥ तपानश्वाज
गज्जोतिस्वज्ञोतिस्वेननिष्पत्ति ॥४५॥ यात्वयज्ञाहीतैः पुण्यैंस्तज्जागद्वारसंग
ते ॥ त्वयिप्रजुअनेकोपाल्लक्ष्मीस्नानेवहंतिसा ॥४६॥ साचेयं च विभूतिस्तेका
पिश्रजगतांदशाः ॥ लब्धाविश्वधानदृष्टास्वस्माहात्वयश्वधातां ॥४७॥ भुजा
नोप्युदयं चार्हनूजैनैर्मोगीवलस्यासि ॥ बुधैर्योगीवतत्त्वंनुजानातिबाटगवते
॥४८॥ निर्म्मलोन्मुजीतानंतशक्तीचेतथीश्वसदज्ञानं ॥ निःसीमशर्म्मास्त्वन
विंदस्त्वतपस्यदे ॥४९॥ नमस्तेपरमब्रह्मनमास्तुपरमोवयः ॥ नमःपरमशां
तायनमस्तेपरमोदयः ॥५०॥ नमस्तेनंतविज्ञाननमस्तेज्ञानमूर्त्तये ॥ नम

स्तेज्ञानरूपायनमस्तेज्ञानगोचरः ॥५१॥ नमस्तेनिष्कलः शांतोनमस्तेविज
गाधिपः ॥ नमस्तेचार्हदेवायनमस्तेजीनपुंगवः ॥५२॥ नमस्तेसिद्धबुधायनम
स्तेनाभिनंदनः ॥ नमस्तेमोक्षलक्ष्मीशनमस्तेशिवदायकः ॥५३॥ नमस्तेविंत्रा
चरीतनमस्तेत्रीजगद्गुरो ॥ नमस्तेत्रीजगन्नाथनमस्तेसंतनिस्पृहः ॥५४॥ नम
स्तेकेवलज्ञाननमस्तेकेवलेक्षणः ॥ नमस्तेपरमानंदनमस्तेनंतविक्रमः ॥
५५॥ एवमानंदतः स्तुत्वाशक्रपूर्ववदादशान् ॥ जन्माभीषेककल्याणक्रियांकृ
त्वास्फूटंनयेत् ॥५६॥ इतिजन्माभीषेकविधानं ॥ ततः पंचांगप्रणामं कुर्यात् ॥
कृत्वाचैत्यपंचगुरुसमाधिभक्तीराधयथावल्लंतमभुधायेत ॥ प्रागाद्दत्तादे
वतायज्ञांगैः प्रीतनर्क्कुपादयोरर्घदानैः ॥ क्रितांशेषांमस्तकैरुद्वहंतः प्रसा
गन्तुयांत्वशेषायथस्वं ॥५७॥ चारुकाश्मीरानुरंजितपुष्पाक्षतवर्षेण सर्वामर
विसर्जनं ॥३॥ इतिपूजाविधानं ॥ अनेनविधिनायथाजिनयमर्हतःस्नापनं
विधायमहमन्वहंस्यजतियःशिवाशाधरः सचक्रीहरितीर्थकृत पदकता
भिषेकःसुरैःसमर्चितपदस्सदास्तुखसुधांबुधौमज्जति ॥५८॥ मुक्तीश्रीवनिता

करोटकमीदंपुण्यंकरोम्यादकं॥नागेंद्रत्रिदिशेंद्रचक्रपदवीराज्याभिषे
कोदकं॥सम्यग्ज्ञानचरित्रदर्शनलतासंवृद्धिसंपातुकरं॥कीर्तिश्रीजयसा
धुकंतवजीनास्नानस्यगंधोदकं॥५५॥आशीर्वादः॥एवंमर्हद्देवस्याभिषे
कःसमाप्तः॥अथलघुअभिषेकलिख्यते॥श्रीमन्मंदरसुंदरेशुचिजलैर्धौ
तैसदर्भाक्षतेपीठेमुक्तिवरंनिधायरचितंतत्पादपुष्पस्त्रजा॥इंद्रोहंनिजभू
षणार्थममलंयज्ञोपवीतंदधे॥मुद्राकंकणशेखराण्यपितथाजैनाभिषेकोत्स
वे॥इंद्राव्हानं॥इंद्राग्नंतकनैरृतोदधिमरुद्यक्षेशशेषोडुपानाहूताश्निज
वाहनायुधवधूयुक्तानसुसंस्थाप्यतान॥अर्घस्वस्तिकयज्ञनागचरुकैरोन्
र्भुवःस्वस्वधा॥स्वाहाचेत्यभिमंत्रितैःप्रतिदिशंसंतर्पयामःक्रमात॥२॥इंद्र
॥अग्नि॥यमः॥नैरृत्य॥वरुण॥पवन॥कुबेर॥ईशान॥धरणेंद्र॥सोम
॥अर्घः॥क्षेत्रपालस्थापनं॥अथप्रदक्षिणा॥शांतिःपुण्याभिरद्भिःपरिम
लबहुलेनामुनाचंदनेनश्रीदृक्पेयैरमीभिःशुचिसदकचयैरुद्गमैरेभिरु
द्धैः॥हृद्यैरेभिर्निवेद्यैर्मखभवनमिमैर्दीपयद्भिःप्रदीपैः॥धूपैःप्रायोभिरे

र्थंकरधुनि०॥ॐह्रींअर्हन्मुखोसद्मसरस्वतिवाग्वादि
णकादशांगचतुर्दशपूर्वगतद्वादशांगश्रुतस्यमहापुष्पंनि
र्वपामीतिस्वाहा॥पुष्पं॥४॥रसानारंजनसूधानंजनगोज
नमंजननाना॥निरमलगात्रअरिसुचपात्रपूजनखोतत्र
लानां॥५॥तिर्थंकर०॥ॐह्रींअर्हन्मुखोसद्मसरस्वतिवा
ग्वादिविणकादशांगचतुर्दशपूर्वगतद्वादशांगश्रुतस्या
महानैवेद्यंनिर्वपामीतिस्वाहा॥नैवेद्यं॥५॥ तिमिरनिवा
रकअतिदुतिधारकारविशशिटारकथावे॥जुगदगहारा
कपितीकारकदीपकतारकलावे॥६॥तिर्थंकर०॥ॐह्रीं
अर्हन्मुखोसद्मसरस्वतिवाग्वादिविणकादशांगचतु
र्दशपूर्वगतद्वादशांगश्रुतस्यमहादीपंनिर्वपामीतिस्वाहा॥दी
पं॥६॥धुपदशांगीपरिमलचंगीअगनिसुरंगीमाही॥खेवत
जंगीधुमतरंगीनभसरवंगीछाही॥७॥तिर्थंकर०॥ॐह्रीं

१०५ अर्हन्मुखोमलसरस्वति सारदादेविराकादशांगचतु
र्दशपूर्वधादशांगश्रुतज्ञानमहाधूपं निर्वपामीति स्वाहा॥
धूपं॥ ७॥ गरवविदाना सूनमूखोना खरखुज नानायेला॥ अ
मृतफलवर खारिकनरियाने टधरीअर केला॥ तिर्थंकर०॥
१०॥ ॐ ह्रीं अर्हन्मुखोमलसरस्वतिशारदादेविराकाद
शांगचतुर्दशपूर्वधादशांगश्रुतज्ञानमहाफलं निर्वपा
मीति स्वाहा॥ फलं॥ ८॥ क्षीरसमुद्रवनसीतसुंदरपवित्रपु
रंदरजैसे॥ तिरमिलनीतर चित्रविचीत्र वस्त्रपवीतऐसे॥
११ तिरथंकरधुनी०॥ ॐ ह्रीं अर्हन्मुखोमलसरस्वति
शारदादेविराकादशांगचतुर्दशपूर्वधावशांगश्रुत
ज्ञानमहावस्त्राभरणं निर्वपामीती स्वाहा॥ वस्त्राभर
णं॥ ९॥ मणिमाणिकवरलालजवाहरमोतिहिराअर
पन्ना॥ रतनके भूषण सब बिनभूषण अरपोभूषण घना॥ ति

रथंकर०॥ १२॥ ॐ ह्रीं अर्हन्मुखोमलसरस्वतिशारदादेवि
राकादशांगचतुर्दशपूर्वधादशांगश्रुतज्ञानमहाषोडशा
भरणं निर्वपामीति स्वाहा॥ षोडशाभरणं॥ १०॥ जलफल
लायक अर्घ्य आधायक आनंददायक धारो॥ अमुलिकचं
दन अतिमतिमंदन हीराचंदनतारो॥ तिरथंकर०॥ १३॥ ॐ ह्रीं
अर्हन्मुखोमलसरस्वतिशारदादेविराकादशांगचतु
र्दशपूर्वधादशांगश्रुतज्ञानमहाअर्घ्यं निरवपामीति स्वाहा
॥ अर्घ्यं॥ ११॥ छंद अडिल्ल॥ देशविदेशनगरपूरपाटणग्रा
मजू॥ सत्रीब्राह्मणवैश्यसूद्र अनिरामजू॥ मुनि आवक आवि
काऽर्जिका संघ हद्चतुर्ह्या॥ दन आदिक सब जनकी शांतिक राष
ज्ञ १४॥ शांतये शांतिधारात्रयं दद्यात॥ १२॥ मरजमखोमा
रमोतियो मोगरो॥ बोलश्रीश्रीगुलपत्र जुथीका केवरो॥ कोकावा
कुँ लिक दंवसुमकरना सरो॥ इत्यादिक अरबोपकरीसुमआस

९६ रे ३५ ॥ ह्रिं श्रुतपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ ९३ ॥ या जग मे अग्यान तिमि
र छायो घनो ॥ जो न होय जिन वचन प्रदीप प्रकाश गनो ॥ तो की म
हान तत्व ग्यान अविचारिको ॥ तातें धनि जिन वैन बहु उपगा
रिको ॥ ९६ ॥ महा अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९४ ॥ अ
थ जयमाला ॥ छंद दोहरा ॥ जिन मुख पंकज तें खिरी जिन
वाणी गुणमाल ॥ गणधर मुनि रचना रची ॥ द्वादश अंग विशाल
॥ छंद पद्धडी ॥ जय प्रथम सु आचारांग पूत ॥ जय पद अष्टाद
श सहस संयूत ॥ जय द्वितिय सूत्र कृतांग साज ॥ जय पद छत्तीस स
हस समाज ॥ १ ॥ जय तृतिय स्थानक अंग योग ॥ जय सहस बि
यालिस पद मनोग ॥ जय चौथो समवायांग नाम ॥ जय इक लख
चौसठि सहस ताम ॥ २ ॥ जय पंचम व्याख्या प्रग्यप्ति ॥ जय द्वा
य लख अठाइस सहस जानि ॥ जय षष्टम ज्ञातृ कथा प्रविश्र ॥
पै जय पन लख छप्पन सहस चित्र ॥ ३ ॥ जय सप्तम उपासक अध्ययन

सुष्ट ॥ जय ग्यारह लख सत्तरि सहस पुष्ट ॥ जय अष्टम अंतकृ
तांग सार ॥ जय तेइस लख अठाविस सहस धार ॥ ४ ॥ जय नवम अनु
त्तर अंग महान ॥ जय बावन लाख सहस चवाल ॥ जय दशम प्र
श्न व्याकरण नाल ॥ जय लाख तिरानव सहस सोल ॥ ५ ॥ जय ग्या
रम सूत्र विपाक अंग ॥ जय कोडी इक लख चौरासि अंग ॥ जय
सब पद ग्यारांग च कोड ॥ जय पंद्रह लख दय सहस जोड ॥ ६ ॥
जय बारम दृष्टि प्रवाद अंग ॥ जय तिन मे चौदह पूर्व चंग ॥ जय प
हिलो उत्पाद पूर्व ॥ जय ताके पद इक कोडी सर्व ॥ ७ ॥ जं दूसरो अ
ग्रायणि पूर्व आस ॥ जय छिनवे लख तिहि पद समास ॥ जय ती
सरो वीर्यानुप्रवाद ॥ जय सत्तरि लख पद हैं अनाद ॥ ८ ॥ जय चु
र्य अस्ति नास्ति प्रवाद ॥ जय साठी लाख तिनके सुपाद ॥ जय प
णमो ज्ञान प्रवाद नाव ॥ जय इक घाटी इक कोटि पाव ॥ ९ ॥ जय ष
ष्टम सत्य प्रवाद सीव ॥ जय सत कोडि छह अधिक जीव ॥ जय स

८७ सप्तम आत्मप्रवाद संत ॥ जय छव्विस कोड़ी पद महंत ॥ ९७ ॥ जय
अष्टम कर्मप्रवाद ईस ॥ जय पद कोड़िक असी लख सिष ॥ जय
नवम सु प्रत्याख्यान मित ॥ जय चौरासी लख पद पुनीत ॥ ९८ ॥ ज
य दसमो विद्यानुप्रवाद ॥ जय पद कोड़िक दसलख मजाद ॥ ज
य एकादसम कल्याणनाम ॥ जय छव्विस कोडी पद प्रवान ॥ ९९ ॥
जय द्वादसमो प्राणानुवाय ॥ जय तेरह कोड़ी पद कहाय ॥ जय
तेरम पूर्व क्रिया विसाल ॥ जय नव कोडी पद हेरसाल १०० ॥ जय
चौदम लोक सुविंदुसार ॥ जय बारह कोड़ि पचास लाख ॥ जय
सब पद चौदह पुरब संच ॥ जय साढि पच्चा नव कोड़ि पंच ॥ १०१
जय एक अजब द्वादसक्रिरोड ॥ जय उपरांति आसीलाख जोड
॥ जय सहस अठावन पन अधीक ॥ जय इह सब पद बारांगनी
क ॥ १०२ ॥ जय कोडी इकर्तिवनलाख अठ ॥ जय चौरासी सहस
छह सि पच ॥ जय साठाइकविस श्लोक जेह ॥ जय इक इक पद

केइक मये ह ॥ १०३ ॥ घत्ता ॥ छंद दोहरा ॥ कुमति हरण सुमती करण
॥ भागवादि निसुखदाय ॥ याते ही राचंद कौ ॥ नव नव होउ सदा
य ॥ १०४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हन्मुखोत्पन्न सर्वविशारदादेवि ॥ का दस
अंग चतुर्दशपूर्व द्वादसांग श्रुत ओमहा जयमाला अर्घं निर्वपा
मीति स्वाहा ॥ अर्घ ॥ १०५ ॥ छंद अडिल्ल ॥ रहै दंगलहू मि हो
य मंगल सदा ॥ संतति संपति होय विपति नाहि कदा सुरनालो
कनै ॥ नाना सुख पायकै ॥ फेर वै शिवरमणी शिवपुर जायकै
॥ १०६ ॥ इत्याशीर्वादः ॥ १०६ ॥ इति चतुर्थ सरस्वति पुजा समाप्तः
॥ ५ ॥ छ ॥ ॥ अथ पंचम गुरुपुजा प्रारंभते ॥ स्थापना छंद
अडिल्ल ॥ जंबुधान की पुष्कर द्वीप में सदा ॥ पंच प्रकार विरा
जमान मुनि सर्वदा ॥ तीन घाटि नव कोटि सबै मिलिकै नमो ॥ च
रण कमल कुसुमांजलि दै नव कौ नमो ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सार्द्धद्विद्विय
द्वीप संबंधी त्रिसंख्योनन वकोटि पंचप्रकार महामुनि रत्नत्रय

१०८ संयुक्तायश्रीगुरुअत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं ॥
१॥ ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥२॥ ॐ ह्रीं अत्र मम
सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनं परिपुष्पांजलिं
क्षिपेत् ॥३॥ अथाष्टकं ॥ चाल द्यानतरायकी ॥ सोलहकारनसोला
कारण भावना एककी ॥ तामें चौपई की जो अनकगागली
मेव मे हो यथा ॥ नानाविधतीर्थोदकसमुदाय ॥ कंचनझारीभ
रिभरिलाय ॥ परमगुरहो ॥ धरमधुरहो ॥ साचेआपपरमगुरहो
॥१॥ जलं ॥ नीरोदधि तारण तरण जिहाज ॥ ऐसे पूजो श्रीमु
निराज परमगुरहो ॥ धरमधुरहो ॥ साचे आपपरमगुरहो ॥२॥
ॐ ह्रीं सार्द्धद्वितीयद्वीपसंबंधी त्रिसंख्योननवकोटीपंचप्रका
रमहामुनिश्वरा समविराजमाने अस्मामहाजलं निर्वपामीति
स्वाहा ॥ जलं ॥१॥ हरिचंदनकरपूरबनाय ॥ जलमेघसिंघा
सिन्नरियगिलास ॥ परमगुरहो ॥ धरमधुरहो ॥ साचेआपपरम

नविराजमाने अस्मामहाफलं निर्वपामीतिस्वाहा ॥ फलं ॥ वसु
विधद्रव्यबनाय अमंद ॥ नावतभावतहीं आनंद ॥ परमगुरहो धर
मधुरहो ॥ साचेआपपर० ॥ नीरोदधि० ॥१७॥ ॐ ह्रीं सार्द्धद्वितीयद्वीप
संबंधी त्रिसंख्योननवकोटीपंचप्रकारमहामुनीश्वरा स्वतवि
राजमाने अस्मामहाअर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥ अर्घं ॥१८॥ छंद
अडिल्ल ॥ याउपशांतिकशांतिकरणकेकारणौ ॥ जलधाराद्यौं नव
जलतारणहारणौ ॥ फेर देऊ कुसुमांजलि सुंदर आपको ॥ ध्यावैत
पत्रै पुन्य विनसि सब पापको ॥१४॥ शांतये शांतिधारा दिव्यपुष्पां
जलिं क्षिपेत ॥१०॥ परमदीगंबर अंबररहीत महान जू ॥ शत्रुमि
त्रु सुखदुख तृण रत्न समान जू ॥ नवत न जोग विरागी सागी पर
मारथी ॥ ऐसे मुनिमहाराज मोक्षके स्वारथी ॥१२॥ महा स्वा अर्घं ॥
निर्वपामीतिस्वाहा ॥१३॥ अथ जयमाला ॥ छंद दोहरा ॥ राग ॥
दोरवजाके नहीं ॥ नहीं परिग्रहको नाम ॥ ऐसे मुनिराजको ॥ नमुं अं श्री

१७७ सुलसिरधार ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं देवेस्त्रीगानाश्चा माघनंदीमुनि कृतं चतु
विंशतितीर्थंकरविधानयमला आदि अनेक चाल मे बनका ॥ ९
पं कमदापरणतिटारै ॥ दयासबजिवपरधारै ॥ दोनो आरतरौ
द्र मगोरै ॥ दोनो धरमसुकलउरजोरै ॥ तीनोछेदकुग्याननिपा
तै ॥ तीनोविधसल्यनिकोघातै ॥ तिनोलोकसरूपविचारै ॥ तिनो
रतननिकोसंचारै ॥ ३ ॥ चारोगतिकोगमननिवारै ॥ चारोसंज्ञा
कोपरिहारै ॥ चारोभेदविनयकोसाधै ॥ चारोआराधनआ
राधै ॥ ४ ॥ पंचमिथ्यातनिकोमुलछेदै ॥ पंचमहापापनिकोभे
दै ॥ पंचपरावर्तनकोसोखै ॥ पंचविधीस्वाध्यायजुपोखै ॥ ५ ॥ पंचा
चारचरणनिरवाहै ॥ पंचअणुव्रतनिकोअवगाहै ॥ षटभेदआ
नायतननिरोधै ॥ षटविधकीलेस्यानिकोसाधै ॥ ६ ॥ षटविधद्रव्या
जथावतजानै ॥ षटविधकालचरवानवखानै ॥ सप्तप्रकारमहा
नयपंजै ॥ सप्तसुभंगीवाणीसुरजै ॥ ७ ॥ आठोभेदमहामदखंडा

गुरहो ॥ सौजलनारणतरणजिहाज ॥ ऐसेपूजौश्रीमुनिराज ॥
परमगुरहो ॥ धरमधुरहो ॥ साचे ॥ ॐ ह्रीं सार्द्धद्वितीयद्वीपसं
बंधीत्रिसंख्योननवकोटीपंचप्रकारमहामुनीश्वराः स्वतवि
राजमानेभ्यो महागंधं निर्वपामीति स्वाहा ॥ गंधं ॥ १ ॥ अक्षत
मोतिसमानअखंडातंदुलशशिसमसोरनमंड ॥ परमगुरहो
धरमधुरहो ॥ साचे ॥ ०॥ ओं ह्रूं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं सार्द्धद्वितीयद्वीपसंबंधी
त्रिसंख्योननवकोटीपंचप्रकारमहामुनिश्वराः स्वतविराजमाने ॥ वि
भ्यो महा अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥ कल्पवृक्ष
केपुहपनउदार ॥ वरणवरणबहुपरकार ॥ परमगुरहो ॥ धरमधुरहो ॥ के
॥ साचे ॥ ०॥ ओं जल ०॥ प ॥ ॐ ह्रीं सार्द्धद्वितीयद्वीपसंबंधीत्रिसंख्यो
ननवकोटीपंचप्रकारमहामुनिश्वराः स्वतविराजमानेभ्यो म
हापुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥ मोदनमोदक आदि
निवेद्य सुवरणथालीनभरिलेय ॥ परमगुरहो ॥ धरमधुरहो ॥ साचे ०

८८ ॥चौदधि०६॥ॐ ह्रीं श्री सार्द्धद्वितीयद्वीपसंबंधीत्रिसंख्यानन वको
टीपंचप्रकारमहामुनिशाश्वतविराजमानेभ्यो महादीपं नि
र्वपामीतिस्वाहा॥ नैवेद्यं॥ मणिमयदीपकचित्रविचित्र॥ तुम
पं ढिगधारौ परमवीत्र॥ परमगुरु हो॥ धरमधुर हो॥ साचे०॥ चौद०॥७
॥ॐ ह्रीं श्री सार्द्धद्वितियद्वीपसंबंधीत्रिसंख्यानन वकोटी पंचप्रका
र महामुनिशाश्वतविराजमानेभ्यो महादीपं निर्वपामीति स्वा
हा॥ दीपं॥ दी॥ सुरलोकन की अगर अनूप॥ ताकी खेवूं सुंदर
धूप परमगुरु हो॥ धरमधूर हो॥ साचे०॥ चौदधि॥८॥ ॐ ह्रीं श्री सार्द्ध
द्वितीयद्वीपसंबंधीत्रिसंख्यानन वकोटी पंचप्रकारमहामु
नीशाश्वतविराजमानेभ्यो महाधूपं निर्वपामीति स्वाहा॥ धू
पं॥ धू॥ दाड़िम जांबू बिजौरा सार॥ लौंग सुपारि इलायची धार॥
परमगुरु हो धरमधुर हो॥ साचे०॥ चौ जल०॥९॥ ॐ ह्रीं श्री सार्द्धद्वितिय
द्वीपसंबंधीत्रिसंख्यानन वकोटी पंचप्रकारमहामुनिशाश्व

ते॥ आठौं सम सम्यक्त अंग गसु मंडे॥ आठौं विधि रिधी सुन पागे॥ आ
ठौं सिद्ध गुण सु अनुरागै॥८॥ नवविध जोनि कदाचि न लेवै॥ न
वविधके प्राच्छित कौं सेवै॥ नव परकार पदारथ नाखे॥ नवना
य कौ निरणो दिढ राखै॥९॥ दश कामन के वेग विमोचै॥ दशा
हिंश्रित मन कौं संकोचै॥ दशविधि वैय्यावृत्य करंता॥ दशलक्षनि
मनि धरम धरंता॥१०॥ एकादश प्रकृति निमतारे॥ एकादश प्रतिमा
विमतारे॥ द्वादश विध अविरत कौं रोकै॥ द्वादशविध तपयोगा वि
लोकै॥१२॥ द्वादश अनुप्रेक्षा कौं भावै॥ द्वादशविध सोतपतप
जावै॥ तेरह काठीया चकचूरे॥ तेरह विध चारित्र पूरे॥१३॥ चौ
दह मल कौं दूर बहावे॥ चौदह गुणथानक चढ जावै॥ पंद्रह विधया
गनिकौ गापे॥१५॥ सोलह विध पारखंडन भावे॥ सोलह विध भावनि
[illegible] सत्रह संयम धरत विशेषे॥ सत्रह नेम न लाउपदेशे॥१७॥ अ
वराज नम मरण निदाले॥ अठारा सहस विधी शील पाले॥ जनरस

१०३ जीवसमासवदंती॥ विंशतीमारगणाकथयंती॥१५॥इकवीसउद
इकनावविधंसे॥इकविसश्रावकगुणपरसे॥बाविसनेद
श्रनंतानंतसे॥बाविसपरिसहसहतप्रतक्षे॥१६॥तेइसश्रहमि
दराजिसबंदे॥चौविसजिनआवेतश्रानंदे॥पचिसविकथामु
खनहिबोले॥पचिसदर्शनदूषणखोले॥१७॥पचिसभेदकषाय
विडारे॥पचिसनावनानिसचितारे॥छविसश्रंगउपंगप्रकासे
सताविसविषयाकौनासे॥१८॥अठाविसमुलगुणश्रवीनाषी
उतरगुणकुनिलखचवरासी॥घातिश्रघातिकरमकौनाजे
मुगतिनगरिमेजायविराजे॥१९॥घता॥छंददोहरा॥इत्यादि
ककवलगरुक्र॥बुधिश्रोदिगुणनंत॥वेगुरहीपांचदकौ॥कव
मीलसिजपवंत॥२०॥ॐह्रींसार्द्धद्वितीयद्वीपसंबंधीत्रिसंरखो
ननवकोटीपंचप्रकारमहामुनीशाश्वतविराजमानेभ्यो महा
जयमालार्घ्यंनिर्वपामीतिस्वाहा॥अर्घं॥छंदअडिल्ल॥

२१॥जोनरनौरनारीमनपरतिनपूजाकरै॥तेनरनारिमनवंछीतफ
लकोवरै॥रूपसौंनागपनोगतउपनोगजसुनोगवी॥कुनिहोहैनिरवाण
करमकोजोगवि॥२२॥इत्याशिर्वादः॥अथ॥इतिगुरुपूजासमा
प्तः॥५॥७॥श्लोक॥अर्हत्सीद्धगुरूद्दिष्टिज्ञानचर्य्यासुपूजितां
पूर्णार्घ्यंप्रापिताश्चैव॥संतुष्टेमायशाम्मणी॥१॥ॐह्रींह्रांह्रींहूंह्रौंह्रः
ःअसिआउसाअर्हत्सीधाचार्योपाध्यायसर्वसाधुपंचपरमे
ष्टिभ्योमहापूर्णार्घ्यंनिर्वपामीतिस्वाहा॥पूर्णार्घं॥१४॥अ
थकवीनामवामकथन॥छंदमणिहरण॥तथापवेयाग्र
३॥देशमेदेशदक्षणनामैपूफलटणश्रादीसुरकेत्रूवनश्रादि
पंचजानिये॥तहांश्रावकश्रधिकतामेश्रमोलीकरकजंत्रेस्वरगो
त्रविकश्रुबडपिछानिये॥ताकोनयचयारिनंदतामेकुजादीपंच
इतातेपूजापाठछंदबंदरच्यामानिये॥यामेचुलचुकहोयतोसुध
रिलिज्यौकोयमोदिमुढजानिलीयहोमाफश्रानीये॥२२॥इति

१०२ श्रीह्रीसाचंदकृतपंचपूजाभाषासमाप्त ॥ छ ॥ ३५ ॥ अथ ॥
॥ अथ त्रिकालचौवीसतीर्थंकरपूजाप्रारम्भते ॥ स्थापना
॥ छंद अडिल्ल ॥ दीपअढाईमेपरमेसरपावीत्रहै ॥ भरतैरवत
ऐरावतदशक्षेत्रहै ॥ अतितअनागतवर्त्तमानतिमचौवीसी ॥
आह्वाननस्थापनसन्निधिकरहोजिमी ॥ १ ॥ ॐह्रींपंचमेरु
नो संबंधीदक्षिणोत्तरदिग्भागेभरतैरावतदशक्षेत्रेभूतभविष्यवर्त्तम
ानकालत्रिंशत्चतुर्विंशतिजिनेंद्रायसमग्रानविंशतिसमु
दायतीर्थंकरायअत्रावतरावतरसंवौषट् आह्वाननं ॥ १ ॥
ॐह्रींअत्रतिष्ठतिष्ठठःठःस्थापनं ॥ २ ॥ ॐह्रींअत्रममसन्नि
हितोभवभववषट्सन्निधापनंपरिपुष्पांजलिंक्षिपेत ॥ ३ ॥
अथाष्टकं ॥ चालरूपचंदकृतपंचमंगलकी ॥ अथ जल ॥ सागर
मेवरसागरहैक्षीरसागरो ॥ भानुसुधारसकेरसकोरत्नाकरो ॥ गंगा
सिंधुपदमसहापदमसरोवरो ॥ एकसुएकअधिकतिरस्वादकसुं

बंधीदक्षिणोत्तरदिग्भागेभरतैरावतदशक्षेत्रेभूतभविष्य
वर्त्तमानकालेत्रिंशत्चतुर्विंशतिजिनेंद्रायसमग्रानविंश
तिसमुदायतीर्थंकरायमहाअर्घ्यंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥ अ
र्घ्यदान ॥ जगजीवजीतीयुमानीजरकेरोहारयो ॥ ऐसोमनमा
थसुरकसुभटकहारयो ॥ ताकैरकेजानियेगणबकुलनि सि
के ॥ सोतुमचरणचढतनितपुत्रसुचकुलनिके ॥ त्रोटक ॥ सु
नकुलनिकेसुनरुनिकेबकुचरणकेबकुजातके ॥ मंदारमा
लतिमाखेवतिनारपारीजातके ॥ चंपाचमेलीगुल[illegible]बेलीरा
यबेलीकेबरा ॥ मचकुंदनारीबकुलप्यारीकुनिहजारीमोगरा
॥ ५ ॥ दिपजंबुधात ॥ ॐह्रींपंचमेरुसंबंधीदक्षिणोत्तरदिग्भा
गेभरतैरावतदशक्षेत्रेभूतभविष्यवर्त्तमानकालत्रिंशत्चतु
र्विंशतिजिनेंद्रायसमग्रानविंशतिसमुदायतीर्थंकरायमहा
पुष्पंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥ खाजामोदकपाकअने

२०४ कतरहनी॥ग्राकुरपाराबतास्याज्ञपनेघरहनीका॥पेडारवुरमा
गिंदोडाफेनिसुहावनी॥घेबरबाबरबरफीजलेबीपावनी॥त्रो
टक॥पावनीमिवाईकुनिरमोईनाईधोईसोजकी॥धृतखंडमर
परचंडपटरसमंडुरचनामोजकी॥निचगातकाकिरातसातकु
धातश्रादिनहीछियो॥कलधौतथारीनरीश्रपारिनिवेवनारि
हनुरक्तियो॥३॥दिपजंबुधातु॥ॐह्रींपंचमेरुसंबंधीदक्षिण
नरदिग्भागभरतैरावतदशक्षेत्रेभूतभविष्यवर्तमानकाले
त्रिंशतचतुर्विंशतिजिनेंद्रायसमवशरणविंशतिमुद्रायती
र्थंकरायमहाअनवद्यनिर्वपामीतिस्वाहा॥नैवेद्यं॥५॥दिमर
तनमयदीपगअतिसगमगकरै॥ततदिवसकोनंदनकहुसम
रूपापरे॥चंदसुरजजिमआगबादलमेजौंछिपै॥ज्योतीरांगकल
पतरुमानुप्रनादीपै॥त्रोटक॥परनादिपैसबतमखिपैदेदी
प्यमानविराजही॥ऐसाउजालादीपमालाकनकथालाछाजि

दरो॥त्रोटक॥सुंदरोतिरथोदकसुप्रासुककनककलशनराश
के॥सुचिअंतरंगबहीरअंगसुअमरसंगमगाइके॥सुनर्नरपा
निजैनबानीतुल्यजानिअनिके॥नरिहिमसपारीवरुतप्पारीतु
रतवारीछानिके॥१॥दिपजंबुधातकिपुष्करार्द्धअढाइमेरूबी
चमा॥सुदरशनविजयअचलरुमंदरविद्युनमालिपंचमा॥ड्र
इद्वेत्रगिरभ्रतिदक्षिणोत्तरभरतऐरावतदसौं॥तहअनितअना
गतवर्त्तमानकितीसचोविसीपूजिसौं॥२॥ॐह्रींपंचमेरुसंबंधी
दक्षिणोत्तरदिग्भागभरतैरावतदशक्षेत्रेभूतभविष्यवर्त
मानकालेत्रिंशतचतुर्विंशतिजिनेंद्रायसमवशरणविंशतिम
मुद्रायतीर्थंकरायमहाजलंनिर्वपामीतिस्वाहा॥जलं॥हेमस पा
लिलसमसीतलपरमपवीतरो॥बासमवासकरीअतिचित्रवि
चीतरो॥आपसमावमहानकरैवनतरुवरो॥ऐसोपावनबाव
नचंदनडुरधरो॥त्रोटक॥डुरधरोचंदनतपनिकंदनवनअनु

नंदनमहकियो ॥ घघलाक ओलापरमप्पालामाहिघसिंग्रहा
कीयो ॥ केशरघतंगसुवर्णचंगसमानंगसुहाइयो ॥ कंचनक
टोरीनपिबहारीकपुरेरीलाइयो ॥ ध ॥ दिपजंबुधात० ॥ ॐ ह्रीं
पंचमेरुसंबंधी दक्षिणोत्तरदिग्भागभरतैरावतदशक्षेत्रसं
भूतभविष्यवर्त्तमानकाल त्रिंशत चतुर्विंशतिजिनेंद्रायस
मशतविंशति समुदाय तिर्थंकराय महागंधं निर्वपामीति
स्वाहा ॥ गंधं ॥ ३ ॥ मेरुतटपीप्ररणशालीकीमीकीरणकीधो
मुगताफलरजताचलफटीकदधीनीधो ॥ चिंतामणिकिर
यणदूधफेनहिराकनी ॥ ऐसेअक्षलतंदुलदोसरखीअनी ॥
त्रोटक ॥ सरखीअनीपरखीफुनीनिस्तुपघनीमंघाइके ॥
जिरगाकमोदशिनाअमोदमहाविनोदसुलाइके ॥ चुनिके
निहारीकणीनिकारीफुनीपखारीसफाकरे ॥ सोनरुपकिरके
बिकेबिचपुंजपुंजबक्षधरे ॥ दिपजंबुधात० ॥ ॐ ह्रीं पंचमेरुसं

ही घृतकपुरजोतबहोतहोतउद्योतमानो नारती ॥ टकनीगवि
तकंचनरचितमनिमयसुविचित्र करुआरति ॥ दिपजंबुधात० ॥ ८
॥ ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधी दक्षिणोत्तरदिग्भागभरतैरावतदश
क्षेत्रसंभूतभविष्यवर्त्तमानकाल त्रिंशत चतुर्विंशतिजिनें
द्राय समशतविंशतिसमुदायतिर्थंकराय महादीपं निर्वपा
मीति स्वाहा ॥ दीपं ॥ ६ ॥ श्रीखंडप्रचंडअखंडपरीमलो देव
दुवारउदारसीलारसनिरमलो ॥ पाचमहानलोबानउरुखसकि
सनागरो ॥ अगरतगरकुंदरुघनसारमनोहरो ॥ त्रोटक ॥ मनो
हरोबक्षमधुकरोरुनझुनकरंतनितनिंतरो ॥ दशगंधयाहि
समधूपसुगंधबाहअनंतरो ॥ निरधूमअगनिमनूरतनकनि
तेजपुंजअतीघनी ॥ धुपदानिमधुपअरतमानुषहकतिकरमननी ॥ खेवत
॥ ए ॥ दिपजंबुधात० ॥ ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधी दक्षिणोत्तरदिग्भाग
भरतैरावतदशक्षेत्रसंभूतभविष्यवर्त्तमानकाल त्रिंशत च

तुर्विंशतितिजिनेंद्रायसमसशतविंशतिसमुदायतिर्थंकरायै
महाधूपंनिर्वपामीतिस्वाहा॥धूप॥७॥फलसुरलोकतणोंन
रलोकतणोघने॥प्रासुकपक्वसुपक्वमधुरललचावने॥पिस्ता
किसमिसदाखसुकामनुकाइजा॥जाईफलकदलीफल
श्रीफलखरबुजा॥त्रोटक॥खरबुजाप्यारसुपारिसारफनस
अनारइलायची॥नारिंगमातुलिंगकेथलवंगसीताफलसुची
॥कमरकछुहारेलिंबुसारेकाजुप्यारेसोहने॥फुनिआमज्याम
बदामरामफलादिद्रिगमनमोहने॥७ण॥दिपजंबुधात०॥ॐह्रीं
पंचमेरुसंबंधीवदक्षिणोत्तरदिसाभेजरतैरावतदशक्षेत्रेभुत
भविष्यवर्तमानकालत्रिंशतचतुर्विंशतितिजिनेंद्रायसमसश
तविंशतिसमुदायतिर्थंकरायमहाफलंनिर्वपामीतिस्वाहा
॥फलं॥८॥निर्मलसीतलसलिलबकुरिहरीचंदनो॥अक्षत
अद्भुतपुष्पसुपुष्पनिकंदनो॥नेवजसुधविसुधदिपकतम

भंजनो॥धूपअनूपफलसुफलदव्यसुरंजनो॥त्रोटक॥रंजनो
वसुविधदर्वं॥सर्वअपुर्वधुंडमिलाइयो॥सुखकंदहीरावंदवंद
अनर्घ्यअर्घ्यंचढाइयो॥त्रिकालतुमबिनत्रमततातेंमरिआ
वअरदासहै॥अपनोसुपदइकदेकुमोहेअनदीकतुआस
है॥४४॥दिपजंबुधात०॥ॐह्रींपंचमेरुसंबंधीवदक्षिणोत्तरदि
साभेजरतैरावतदशक्षेत्रेभूतभविष्यवर्तमानकालत्रिं
शत्‌चतुर्विंशतितिजिनेंद्रायसमसशतविंशतिसमुदायतिर्थं
करायमहाअर्घ्यंनिर्वपामीतिस्वाहा॥अर्घ्यं॥ए॥छंददो
हरा॥चालफागभरभाकी॥रत्नत्रयजलधारदैं॥जिकाइशां
तिकरणकेकाज॥जन्मजरामृतिकोदिनी॥जिकाइमानुज
लांजलीआजे॥महाराजमनावा॥बढाफलपावापूजरचा
वस्या॥जिनराजमनाव०॥४२॥ज्यापुज्यासुखउपजेजि॥कांइ॥
उपजेपुन्यअपार॥सुरगाकासुखभोगवि॥जिकाइपावेमोक्ष

१०६ दुवारो मे महाराज मन लाया ॥०॥ वंछाफल पावा ॥४३॥ ॐ ह्रीं [illegible]
निधारात्रयंदशांत ॥४३॥ पुष्प सुनानाजाति के ॥ जिकां ॥२॥ गंध सु-
गंध महान ॥ कुसुमांजलि तासु मन की ॥ जिकां ॥२॥ देव तहू जगवा
न रे महाराज मन लावा ॥४४॥ दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत ॥४४॥
सार्थक नाम सहस वसु ॥ जिकां ॥२॥ र्ग ॥ अ संख्य अनंत ना का रि
के स्तोतर पढी ॥ कां ॥२॥ देवु अष्ट मन अरहंत ॥ पे महाराज ॥४५॥ महा-
र्घ्यो [illegible] निर्वपामीति स्वाहा ॥४६॥ ॥ अथ जयमाला ॥ छंद
दोहरा ॥ पंच मेरु पति जिनपती ॥ तिम चौविस समुदाय ॥ विंबसा
त सौ बीस की ॥ कऊ जयमाल बनाय ॥१॥ बाल माघनंदी मुनी ॥
[illegible] चतुर्विंशति तीर्थंकर के जयमाल की ॥ तथा छंद वेसरी ॥ वंदौ
निरवाणादिक दशांतं ॥ रिषभादि महावीर जिनांतं ॥ महापद्मादी
अनंत सुवीर्य ॥ नरत सुदर्शन वर्ती धीर्य ॥ पंच रूपादि विरमचन्द्र
णंत ॥ बालसु चंद्रादिक विशेषांत ॥ सिद्धार्थादिक आगनि सुदर्शनं तो

सु सुदर्शन ऐरावत ॥ रत्नप्रभादिक त्रिजय त्रिकांतं ॥ युगआदि
सुस्वादिक जिनरायं ॥ सिद्ध जिनादिक शाश्वत देवं ॥ धातकि प्राग
विजय भरत एवं ॥ वज्र जिनादि हरी श्रीराईशं ॥ अप्रमिचि अ
दि विरोचन धिशं ॥ विरन्यादि विशेषिक वृवनेत्रं ॥ पूर्व विजय ऐरा
वत क्षेत्रं ॥ पश्री हषभादि शिव प्रद्युम्नं ॥ विस्व प्रमु स्वयं काजि
त संतं ॥ रत्नक कचादिक सात्विक मूर्ति ॥ पश्चिम धातकि अचलसु
नर्ते हा ॥ सुजमेरादिक धरम सुकातं ॥ साधित आदिक चित्र सुधा
तां ॥ सुर्येंद्रादि विद्येसनिदानं ॥ अपर विजय ऐरावत थानं ॥ पु मद
नेंद्रादि विकाशन नानं ॥ श्रीजगनाथ जितनाथ जिनादिक ध्या
नं ॥ सुवसंतध्वजादि त्रिकर मारं ॥ पुष्कर पूर्व गमंदर तारं ॥ सु
कृत जिनादिक बिंबित सुदं ॥ शंकर आदिक ब्रह्मज कुंदं ॥ यशो १
धर आदि प्रदेश निरसं ॥ प्राग मंदर ऐरावत वासं ॥ ए पद्म कला
निधि आदि जिनंदं ॥ सरवांग जिनादि रतानंदं ॥ पद्मावक आ

१०७ दिकन्यातेरुं ॥ असविद्युन्मालिअरतत्रोपं ४०॥ उपत्रांतजिना
दिकपुएपांगं ॥ गांगेयादिसुजिंपरमांगं ॥ निर्दोषादिसुरार्थप्रा न
शस्तं ॥ ऐरावतविद्युन्मालसितं ४१॥ क्षेत्रअरतपनंदलसमधं
पंचैरावतउत्तरवधं ॥ वर्धमानीतइतियवर्त्तमानं ॥ दृतियअना
नागतचौविसिगानं ४२॥ आद्योपांतनामसर्वोक्तं ॥ मध्यमाग
गताक्तित्रहोक्तं ॥ नामसुथापनद्रव्यसुभावं ॥ छनकरिपूज
सदाजिनरावं ४३॥ घत्ता ॥ छंद दोहरा ॥ कोरेहीराचंदवीनती
॥ तिसचोविसजिनदेव ॥ देऊ आपकी संपदा ॥ जनमजनमकर
रुसेव ४४॥ ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधी दक्षिणोत्तरदिग्भागवर्त्तेरा
वतदशक्षेत्र भूतभविष्यवर्त्तमानकाल त्रिंशतचतुर्विंशति
जिनेंद्राय सप्तशतविंशतिसमुदाय तिर्थंकराय महाजयमा
लार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ जयमाला अर्घं ॥ ४५॥ छंद सवैया ॥
२३॥ जेजिवकूं हुकपदृतजीसुनभावनतै जिनपूजरचावै ॥ ता

जिवकेधरणेंद्रखगेंद्रनरेंद्रसुरेंद्रतणोपदपावै ॥ केरचवीमंड
लीकमहामंडलीकहलीबलिचक्रिकहैवें श्रीतिर्थंकरहोय
वैशिवसौवकरीजगमैनहिआवै ४५॥ इत्याशिर्वादः ॥ ४६॥
इतितनचौविशितीर्थंकरपूजा एकसमास ॥ छ ॥ ६ ॥ ॥
॥ अथअनंतव्रतपूजालिख्यते ॥ स्थापना ॥ छंद दोहरा ॥ श्री
अनंतभगवंतको ॥ चउअनंतविलसंत ॥ सुचिअनंतआ
चंतहैं ॥ मनअनंतहरषंत १॥ ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथतिर्थंक
राय अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं ॥ १॥ ॐ ह्रीं अत्रति
ष्ठतिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ २॥ ॐ ह्रीं अत्रममसन्निहितो भवभव
वषट् सन्निधापनं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ ३॥ अथाष्टकं ॥ चाल
गरनाछंदकी ॥ तथाख्यानरायजिकृतनंदीश्वरपूजकी ॥ य
था ॥ खिरसागरनागरनीरा ॥ कंचनभृंगभरौ ॥ परिमलमीश्रित
गंभीरा ॥ धारत्रिवारकरौ ॥ सबदेवनकेजिनदेव नाथअनंत

३०८ सहिकरुनाचवराचतसेव ॥ पावोमोक्षमही ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री अ
नंतनाथतिर्थंकरायमहाजलंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥ जलं ॥ ३
॥ अतीपावनबावनगंध ॥ केशरसंगघसो ॥ मिलिईरसुगंधस
मंध ॥ अरओआनंदसो ॥ ४ ॥ सबदेवनके० ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतना
थतिर्थंकरायमहागंधंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥ गंधं ॥ ४ ॥ तुषवं
जितरंजितचीत ॥ सरवीदोयअनी ॥ धरुअछतपुंजपुनीत ॥
मानुहिरेकीकनी ॥ ५ ॥ सबदेवन० ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथति
र्थंकरायमहाअक्षतंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥ अक्षतं ॥ ५ ॥ गुलबे
लिछबेलिविशाल ॥ जाइजुईबकुली ॥ गुलमालतिसेवतिमाल
॥ कलियाखूबखुली ॥ ६ ॥ सबदेवनके० ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ
तिर्थंकरायमहापुष्पंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥ पुष्पं ॥ ६ ॥ चरुमोद
नमोदकआद ॥ शुधविशुद्धकिनो ॥ सुखदायकलायकस्वाद
॥ अम्मचढायदिनो ॥ ७ ॥ सबदेवनके० ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथति

र्थंकरायमहानैवेद्यंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥ नैवेद्यं ॥ ७ ॥ तमा
नं खंडनमंडज्योत ॥ होतबहोततरा ॥ पिलसोतलगाइउद्योत ॥
दीपसमीपधरा ॥ सबदेवन० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथतिर्थंक
रायमहादीपंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥ दीपं ॥ ८ ॥ धूपचूरणपूरण
वास ॥ जरतधुवागमगी ॥ दपकेडरतैअघरास ॥ मानुअकास
लगी ॥ ९ ॥ सबदेवनके० ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथतिर्थंकरायम
हाधूपंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥ धूपं ॥ ९ ॥ फलचित्रविचित्रअनू
प ॥ सुरनरलोकनिके ॥ मनमोहनसोहनरूप ॥ प्रासुकपकनि
के ॥ १० ॥ सबदेवन० ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथतिर्थंकरायमहाफ
लंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥ फलं ॥ १० ॥ वसुदर्वअपुर्वमिलाय ॥ अर
पनकरुतुमकौ ॥ मतिमंदहिरांचंदगाय ॥ निजपददोहमकौ ॥
११ ॥ सबदेवनकेजि० ॥ ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथतिर्थंकरायमहा
अर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥ अर्घं ॥ ११ ॥ छंददोहरा ॥ चालफ

१०८ गमेरंस्याकी॥ रत्नत्रयजलधारदेवों॥ जिकों२॥ शांतिकारणकेकम
ज॥ जन्मजरामृतिकोंहिनि॥ जिकों२॥ मानुजलांगलिस्याजे॥ र
महाराजमनावा॥ वंछाफलपावापूज्यारच्यावस्या॥ जिनराज
मनावा॥ ०॥ ४२॥ ज्यापूज्यासुखकृपजे॥ जिकों२॥ उपजेपूरणपेज्यपा
र॥ सुरगाकासुखभोगवि॥ जिकों२॥ पांवेमोखवडवारे महाराज
मनावा॥ ०॥ ४३॥ शांतयेशांतिधाराबयंददात॥ ४०॥ पुष्पसुनाना
ज्यातिके॥ जिकों२॥ गंधसुगंधमहान॥ कुसुमांजलितासुमनकी
जिकों२॥ देवतरुनगवान॥ रमहाराज॥ ०॥ ४४॥ दिव्यपुष्पांज॥
लिंक्षिपेत॥ ४९॥ सार्थकनाममहसवसु॥ जिकों२॥ ईरत्नसंभ
अनंत॥ नाकशिकैस्तोतरपढी॥ जिकों२॥ देवुअरअआहंत॥ रा
महाराज॥ ०॥ ४५॥ महास्तोत्रार्घ्यंनिर्वपामीतीस्वाहा॥ ४२॥ छ॥
॥ अथजयमाला॥ छंददोहरा॥ हरिहरब्रह्मादिकसवे॥ गाव
तनावतपाल॥ ता अनंतजिनराजकी॥ जयजयजयजयमाल॥ १

॥ चालसोनिदामछंदकी॥ तथा भ्रमजिनवरमकुलदयालसा॥
णसमुदायजयमालकी॥ सुदेशसुकोशलदेशमझार॥ जवा॥
विनितापुरमेअवतार॥ सुरासुरज्याकिकरैनितसेव॥ यस्वामी
अनंतजिनेस्वरदेव॥ २॥ पिताजिनकोहरीशेनसुराय॥ विजेसु
रियाजननिसुखदाय॥ सुरासुरज्या०॥ ३॥ प्रभूजउपजेइखवाकसु
वंस॥ सरोवरमैप्रगटैजिमहंस॥ सुरासुरज्या०॥ ४॥ पचासधनूषउ
तंगसुदेह॥ पगौपरदच्छिणलांछनसेह॥ सुरासुरज्या०॥ ५॥ वपूदु
तितसुवर्णसमान॥ थितीतिसलाखसुवर्षप्रमान॥ सुरासुर
ज्या०॥ ६॥ धरितपजुवकेवलग्यान॥ समेदगिरीउपरीनिरवाण॥
सुरासुरज्या०॥ ७॥ लियोतिहुलोकतणोनुमराज॥ वरिसिवराणिस
रेसवकाज॥ सुरासुरज्या०॥ ८॥ निरंजनओतिचिदातमरूप॥ नयेअ
जरामरसिद्धअनूप॥ सुरासुर०॥ ९॥ घत्ता॥ छंददोहरा॥ देवअनं
तमहंतके॥ गुणकीसंख्यानाहि॥ हिरचंदकेतनेकहै॥ ज्योंतारे

११० नन्नमाहि॥१७॥ ॐह्रीं श्रीअनंतनाथतिर्थंकराय महाजयमाला
र्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ अर्घं॥१३॥ छंद सवैया॥२३॥ जेजिव
कूडपटतजीसुजन्नावनतैजीनपूजरन्आवै॥ तेजिवकैधरऐं
सुं॰ड॰ इरवांइनरेंद्रंतणोपदपावै॥ कैरववीमंडलीकमहामंडलीक
हरिबलिचक्रिकहोवै॥ श्रीतिर्थंकरहोयकैशिवसोवकुरीज
गभेनहिआवै॥१६॥ इत्याशिर्वादः॥१४॥ इति श्रीअनंतनाथ
पूजाष्टकसमास:॥ १५॥ छ॥ ॥अथ अष्टाह्निकव्रतपूजा
समुदायलिख्यते॥ स्थापना॥ छंद अडिल्ल॥ आपाटका
र्तिकफाल्गुणसुदि अष्टमिदिनै॥ नंदिश्वरसुजायवसुदिन
पुजैनै॥ हमरीतोकछुशक्तिनजाणैकीतिहां॥ तातैविधिपुर्वकअ
स्थाकरीहोरहां॥१॥ ॐह्रीं अष्टमनंदीश्वरद्वीपे द्वापंचासजि
नालये अत्रावतरावतरसंबौषट् आह्वाननं॥१॥ ॐह्रीं अत्र
तिष्टतिष्टठःठः स्थापनं॥२॥ ॐह्रीं अत्रममसन्निहितोभववव

स्वाहा॥ धूपं॥ धूपं॥ फलविनअपूरितसकरीपूरितअमोमहरिनना
हि॥ बाहाअनंतरसुखनिरंतरप्रासुकअंतरमाही॥१०॥ दीपनं
दीश्व॰॥ ॐह्रीं अष्टमनंदिश्वरद्वीपद्वापंचासज्जिनालयमहा
फलंनिर्वपामीति स्वाहा॥ फलं॥८॥ वसुविधमोहनअर्घजुमो
हनकरअरोहनआगै॥ हीराचंदनओपदवंदनआनंदकंदन
मागै॥१४॥ दीपनंद॰॥ ॐह्रीं अष्टमनंदिश्वरद्वीपेद्वापंचासज्जि
नालयेभ्यो महामहाअर्घंनिर्वपामितिस्वाहा॥ अर्घं॥१०॥ छं
द अडिल्ल॥ शांतिकरोजिनवरकेनकनकोप्रभू॥ शांतिकरो
मुनिराजतपोधनकौविभू॥ शांतिकरोअरुआरवराणकोसरा
वदा॥ शांतिकरोतिनजगकेजीवनकोसदा॥१२॥ शांतयेशांति
धारात्रयंदद्यात्॥१३॥ कमलकेतकीवेलीचंवेलीसुहावनी जा
इजुईमचकुंदकलीरलीयावनी॥ गुलछबुकगुलचंपकपाटल
मालती॥ गुलआदागुलकराणसुंदरसेवती॥१४॥ दिव्यपुष्पांज

लिं क्षिपेत ॥९८॥ ॥ अथ जयमाला ॥ छंद घत्तानंद ॥ जय
जय त्रिभुवनेश्वर पद्मपरमेश्वर देव जिनेश्वर समसही ॥ जय दिवि
अमरेश्वर सकल सुरेश्वर नमित नरेश्वर शरण गही ॥ १ ॥ चाल
सुमतिसागर कृत नंदीश्वर द्वीप के जयमाल की ॥ तथा सकला
कीर्ति कृत अष्टान्हिके जयमाल की ॥ नंदीश्वर द्वीप अष्टम ए ॥
नंदीश्वर दधि माहि ॥ महा महिमा जिन की ॥ बावन श्री जिन धा
मन ही उपमा कीन की ॥ जय जय जय जय मंगल आरतिक रा
तिन की २ इक सै त्रेसठि कोडीया ॥ जोजन लख चउरासी ॥ १
६३८४००००००॥ महा महिमा जिन की ॥ बावन श्री जिन धाम न
हिं० ३ ॥ चक्र दीश्रि चक्र अंजन गीरीए ॥ ढोलन ए आकार ॥ मह
० ॥ बाव० ॥ ४ ॥ सहस चउरासी जोजन ए ॥ ८४००० ॥ उंचा इ चौडा
ई ॥ महा ॥ बाव० ॥ ५ ॥ चौ चौ बावडी चौ दिशि ॥ लख जोजन वि
स्तार ॥ १०००००॥ महा० ॥ बव ॥ ६ ॥ बावडि चक्र अ चक्र वन ए

वपदसे विधापनं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ अथ अष्टकं ॥ चाल
ललित छंद की ॥ तथा जोगीरासा की ॥ यथा ॥ पदमसरोवर नीरम
नोहर ल्या निर्मोलक सौरन मंडी तीसतपंडित धार अरचं
तदेजु ॥ २ ॥ आचली ॥ दीप नंदीश्वर अष्टम सुंदर श्री जिन मंदर रा
जै ॥ ताकौ रमणिक ब्रत अष्टान्हिक पुजत पातिक भाजे ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं
अष्टमनंदीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो महाजलं निर्वपा
मीति स्वाहा ॥ जलं ॥ १ ॥ चंदन बावन परिमल पावन दाह मिटा
वन वाला ॥ केशर कपुर कसमि उरधरघसि कै नरक रपाला ॥
॥ ध ॥ द्वीपनंदीश्वर० ॥ ॐ ह्रीं अष्टमनंदीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिना
लयेभ्यो महागंधं निर्वपामीति स्वाहा ॥ गंधं ॥ २ ॥ सुरतरु पालित
जलकरि क्षालित कलमष टालित शालि ॥ कुनिसुन अक्षतको
मल नखत तु मदी गर अक्षत थालि ॥ ५ ॥ द्वीपनंदीश्वर० ॥ ॐ ह्रीं अष्टम
नंदिश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो महाअक्षतं निर्वपामीति

स्वाहा ॥ अक्षतं ॥ देवनिके द्रुमपुष्पनिके सुमसोअरु औरु मला
ई बकुरीबकुगुलबेलीनिके फुलसूलनअलिकुलआई ॥ ६ ॥ दी
पनंदी० ॥ ॐ ह्रीं अष्टमनंदीश्वरद्वीपे दापंचाशज्जिनालयेभ्यो म
हापुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ पुष्पं ॥ ६ ॥ नेवजरोचनदोषविमोच
नरंजनलोचनरासी ॥ विविधविराजतपटरससाजतमहिमागर्जित
खासी ॥ ७ ॥ दीपनंदीश्वर० ॥ ॐ ह्रीं अष्टमनंदीश्वरद्वीपे दापंचाश
ज्जिनालयेभ्यो महा नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ नैवेद्यं ॥ ७ ॥ सग
नं मगसगमगाकरतारतनंगऐसोदीपगआनूं ॥ ईरप्रकासकतिमिर
विनासकनिजपरभासकजानूं ॥ ८ ॥ दीपनंदी० ॥ ॐ ह्रीं अष्टमनं
दीश्वरद्वीपे दापंचाशज्जिनालयेभ्यो महा दीपं निर्वपामीति स्वाहा
॥ दीपं ॥ ८ ॥ धूपबनाकररवेवोलाकरसुरनरआकरराचे ॥ मधुक
रधावतगुंजतआवतमानोगावतनाचे ॥ ९ ॥ दीपनंदी० ॥ ॐ ह्रीं अ
ष्टमनंदीश्वरद्वीपे दापंचाशज्जिनालयेभ्यो महा धूपं निर्वपामीति

लंबेजोजनलाख ॥ १००००० ॥ महा० ॥ बावन० ॥ ७ ॥ षोडशबा
वडीयौं बिचार ॥ षोडशदधिमुखशैल ॥ महा० ॥ बावन० ॥ ८ ॥ दश
दशसहससुजोजनए ॥ १०००० ॥ उंचेचौडेगोल ॥ महामही० ॥ बा
वन० ॥ ९ ॥ बापीकुंलोडकरतिकरए ॥ जोजनएकहजार ॥ १०००
॥ महा० ॥ बावन० ॥ १० ॥ सबमीलिबावनपरबतए ॥ तिनपरइकइक
गेह ॥ महामहीमा० ॥ बावन० ॥ ११ ॥ पांचसिधनुपदमासनए ॥ इक
इकवसुमणिबिंब ॥ महा० ॥ बावन० ॥ १२ ॥ कालअनादिशास्वत
ए ॥ अकृतिमस्वयमेव ॥ महा० ॥ बावन० ॥ १३ ॥ श्यामसुपेदसुलो
चनए ॥ श्यामचवरासिकेस ॥ महा० ॥ बावन० ॥ १४ ॥ लालवरण
जिणनखमुखए ॥ बोलतमानुहंसंत ॥ महा० ॥ बावन० ॥ १५ ॥ व
सनभूषणबिनसुंदरए ॥ रविशशिकोटीदीपंत ॥ महा० ॥ बाव०
॥ १६ ॥ हितविकारशांतरूपए ॥ विकतचितंदरगत ॥ महा० ॥ बा वै
वन० ॥ १७ ॥ मुखमैंनाबोलैनहिए ॥ देखतसमकितहोत ॥ महा० ॥

५५ ॥बावन०॥४८॥ आषाढ कार्तिक फाल्गुण॥ सु आवत दिन
आठ महा०॥ बावन०॥४९॥ घत्तानंद छंद॥ जय जय नंदीश्व
र जिन जगदीश्वर ईश्वर सब के मुगट मणी॥ जय अमुलिक नं
दन हीरा चंदन वंदन करी जयमाल भणी॥५०॥ ॐ ह्रीं अष्टम नं
दीश्वर दीपे द्वापंचाशत जिनालयेभ्यो महाजयमाला॥ अर्घं निर्व
पामीति स्वाहा॥ अर्घ्यं॥ छंद अडिल्ला॥ जे विधिजुक्त सु भावन तै
पूजा करै॥ ते सब संकट विघ्न उपद्रव तै बचै॥ रिद्धि सिद्धी सुख व
द्धि होय कीरति बढै॥ सुरग सुगति कौ पंथ पकर कै चढै॥५१॥
इत्याशीर्वादः॥ इति अष्टाह्निक व्रत पूजा समाप्तं॥ छ॥ ८॥ ॥
अथ षोडश कारण पूजा समुदाय लिख्यते॥ स्थापना॥ छंद दो
हरा॥ सोलह कारण भावना जे ये सकल जिनराय॥ हम हूं
षोडश भावना॥ भावै मन वच काय॥१॥ ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्ध्यादि
षोडश कारणाये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं॥१॥ ॐ

ह्रीं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं॥ ॐ ह्रीं अत्र मम संनिहितो भ
व भव वषट् सन्निधापनं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥२॥ अथ अष्टकं
॥ चाल ललीत छंद की॥ तथा जोगीरासा की॥ यथा॥ पदम सरो
वर निरमनोहर स्वच्छ अति निवरो वरलेऊ॥ सौरत्न मंडितरी स्सतपंडित
धार अरवंडीत देऊ॥२॥ आंचली॥ तिरथंकर सुख साधन सन
मुख होत विमुख दुख सार॥ सोला कारण कर्म निवारण पूज्यो॥
तारण हारा॥३॥ ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्ध्यादि षोडश कारणेभ्यो महा
जलं निर्वपामीति स्वाहा जलं॥१॥ चंदन बावन परीमल पावन
दाह मीटावन थाला॥ केशर करपुर कशमीर इरधर घसी के नरक
रष्याला॥ ध॥ तिरथंकर सुख०॥ ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्ध्यादि षोडशा
कारणेभ्यो महा गंधं निर्वपामीति स्वाहा॥ गंधं॥२॥ सुरत रुपालि
त जलक रिद्ध्यालित कल्मष टाली तशाली॥ फु निसुन्न अक्ष
त कोमल स्वच्छ तनु मंडित रक्षत थाली॥ प॥ तिरथंकर०॥ ॐ ह्रीं

३३४ दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो महा अक्षतं निर्वपामीति
स्वाहा॥ अक्षतं॥ देवनिके द्रुमपुष्पनिके सुमसो अरचौं नमो
लाई॥ बकुरि बकुल गुलवेली नीके फुलफूलत आलीकुल आई॥ ४॥
तिरथंकर०॥ ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो महा
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥ पुष्पं॥ ४॥ नेवज रोचन दोष विमो
चन रंजन लोचन रासी॥ विविध विराजत षटरस साजत महीमा
गाजत रवासी॥ ५॥ तिरथंकर०॥ ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडश
कारणेभ्यो महा नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ नैवेद्यं॥ ५॥ जगम
ग जगमग कर रतन नग रो सो दीप अनूप उर प्रकाशक तिमि
र विनाशक निज पर भासक आनू॥ ६॥ तिरथंकर सुख०॥ ॐ ह्रीं
दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो महादीपं निर्वपामीति
स्वाहा॥ दीपं॥ ६॥ धूप बनाकर खेवौ लाकर सुरनर आकरस
चै मधुकर धावत गुंजत आवत मानौ गावत नाचै॥ ७॥ तिरथं

न धाम॥ तिनकी बिनती कहत हौं॥ करि अष्टांग प्रणाम॥ १॥ ॐ
द चौपई॥ भुवनालय सुर दश परकार॥ ताघर इक इक जिनगृ
ह सार॥ असुरणके चौसठि लख जान॥ नागतणे चौरासी ला
ख॥ ४॥ विद्युतकुमार लाख छिहत्तरी॥ सुपरणसुर के लख बह
तरी॥ अगनीतणे छिहत्तरि लख कहे॥ वातकुमार छिहत्तरि
लख लहे॥ ४॥ स्तनीतकुमार छिहत्तरी लहै॥ उदधितणे छिहत्तरि
लख वहै॥ दीपविबुध छिहत्तरि लख बसै॥ दिगकुमार छिहत्त
रि लख लसै॥ ५॥ ९॥ दश भवनतणे जिनगेह॥ सातकोड बहत
रिलख तेह॥ मध्यलोक अब जिनपरसाद॥ पंचमेरु के असी अ
नाद॥ ४॥ १॥ विमगजदंतन के है बीस॥ तीसकुलाचल के है तीस॥
देवउत्तरकुरु तरु दश धाम॥ विजयारध सो सत्तरि गाम॥ ६॥ गिरि
वक्षार जिनालय असी॥ आरिमानुषोत्तर चउ दिसी॥ ई षाका
र गिरी पर आर॥ कुंडल दीप मैं आर अगार॥ ७॥ रुचक दीप मैं आ

८२ चक्र अभिराम ॥ नंदीश्वर दीप बावन धाम ॥ या विधमध्यलो
क जिनथान ॥ सब च्यारिसै अठावन जान ॥ ८॥ अंतर असंख्या
त वसुजात ॥ असंख्यातै नभमध्य अवदात ॥ ज्योतिग असंख्या
त पुनि जात ॥ असंख्यात चैत्यालाख्यात ॥ ९॥ अब सुरलोकन
के जिनगेह जिन चैत्य ॥ तिनकी महिमा वरणौ कोन ॥ पहिले बत्ति
स लक्ष प्रतछ सही दुसरे सुरग अठाविस लक्ष ॥ १०॥ तिसरे बारह
लख मंदीर ॥ चौथे अठ सुलख गंभीर ॥ पंचम षष्टम चव लख
वास ॥ सप्तम अष्टम सहस पच्यास ॥ ११॥ नवम दशम आलिस
हजार ॥ ग्यारम बारम छसहस सार ॥ तेरम चौदम सुरगण मा
हि ॥ च्यारिशतक आलिस सकनाहि ॥ १२॥ पंद्रम सोलम दोसै
साठ ॥ अब अहमिंद्र मंदिर गाव ॥ नवग्रिवेक तिन त्रिकमध्या
र ॥ प्रथम ग्रिवेक एकसै ग्यार ॥ १३॥ इकसै सात मध्य ग्रैवेक ॥ अं
त ग्रिवेक निवै अरु एक ॥ नव उमाद नव निवानार ॥ पंच अनुव

श्री जिनचैत्यालयेभ्यो महाधूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ धू
पं ॥ ७॥ श्रीफल आम त्रिनाफल जाम चिरौंजि बदाम अ
नाम छुहारा ॥ काजु अपार कपित्थ अनार चकोतर सार अ
कोट पियारा ॥ केमरक अंगुर जंभीरी सुंदर संग नारावर खर्बु
ज सारा ॥ लौंग सुपारी इलायचि धारि पुजु फल ज्यारि मगाइ
हजारा ॥ १४॥ आवकिङ० ॥ ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंबंधी अष्टका
द्वीप द्वंद्व असंख्यात लक्ष सप्तनव तिसहस्र चतुःशत सक
त्रिअशीति श्रीजिनचैत्यालयेभ्यो महा फलं निर्वपा
मीति स्वाहा ॥ फलं ॥ ८॥ निर्मल पानिय धूप पिछानि सु चं
दन आनि सुजानि घसायो ॥ शालि सुपेद कुसुम सुनेद पवी
त्र निवेद चरुत बनायो ॥ दीप सुरंग सुगंध दशांग मिले फल च
गत मग सुलायो ॥ या विध अर्घ बनाइ अनर्घ्य चढावऊ दीर्घ
दीप वद गायो ॥ आवकिरोड० ॥ १५॥ ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंबंधी

७५ अष्टकोटीषटपंचाशतलक्षसमनवतीसहस्रचतुःशत
एकाशीतीअकृतिमश्रीजिनचैत्यालयेभ्योमहाअर्घ्यंनि
र्वपामीतीस्वाहा ॥ अर्घ्यं ॥ छंद अडिल्ल ॥ उज्वलमतीरथको
जलनीरमललायकै ॥ नामेगंधसुगंधसुद्रव्यमिलायकै ॥ प
चवरणमणिमयसारीझारीमोहनी ॥ पृथकपृथकत्रयधार
देउमनमोहनी ॥ ४२ ॥ शांतयेशांतिधारात्रयंद्यात ॥ ४७ ॥ ना
नां नावरणसुवासीतनांनातके ॥ कलहंसमंदारसुपारीजातके
॥ हरीचंदनसंतानप्रमूखविनोदसौ ॥ नापुष्पनकिपुष्पांजलि
देउमोदसौ ॥ इतिपुष्पांजलिंक्षिपेत् ॥ ४४ ॥ तीनलोकजिनगेह
सदारमणीकहै ॥ तीनलोककरीवंदनिकपुजनीकहै ॥ कंचा
नमणीमयचित्रविचीतरसोहैते ॥ त्याकोदेखतसबजनकेम
नमोहते ॥ ४५ ॥ महाशांतयेअर्घ्यंनीर्वपामीतीस्वाहा ॥ ४६ ॥ अथ
जयमाला ॥ छंद दोहा ॥ अधमध्यउरधलोकमे ॥ शाश्वतश्रीजि

रंगफूलसुगंधअतुलरहैअलिझूलपिवैरसप्याला ॥ देवगंधा
रगुलाबउदारकदंबकुसुमअहगुललाला ॥ केतकिजाइ
जुइकलिलाइयुजुजिनपाइधरिफुलमाला ॥ ८ ॥ आवकिरो
डु० ॥ ॐ ह्रीं त्रैलोकसंबंधीअष्टकोटीषटपंचाशतल
क्षसमनवतिसहस्रचतुःशतएकाशितीअकृत्रिमश्रीजि
नचैत्यालयेभ्योमहापुष्पंनिर्वपामीतीस्वाहा ॥ पुष्पं ॥ ८ ॥
पाकअनेकप्रकारभनेकबनाइविवेकसमेतसुतां ॥ केणि उंपा
मनोगजलेबिसुजोगसुमोहननोगसुहालिसुखाजुया ॥ घेवर
बाबरबर्फीमानोहरअमृतिसुंदरमोदकखाजुया ॥ उंपदारथ
सर्वजथारधरुजुमनोरथसौमहाराजुया ॥ ७ ॥ आवकिरोडु० ॥
ॐ ह्रीं त्रैलोकसंबंधीअष्टकोटीषटपंचाशतलक्षसमन
वतीसहस्रचतुःशतएकाशितीअकृतिमश्रीजिनचैत्या
लयेभ्योमहानैवेद्यंनिर्वपामीतीस्वाहा ॥ नैवेद्यं ॥ ७ ॥ रत्न

१८० अमोलनहींजिसतोलसुदीपअडोलमहाविनकरो॥आप
रकाससबैमतिनासमदाअविनासउजासघनेरो॥घीकरपु
रजुदीपकसुरकौरवकचूरअघोरअंधेरो॥दीपकपिंडरसो
परचेडमनुविजरवंडुधस्यावुमनेरो॥१०॥आवकिरोडु॰॥ॐ
ह्रींत्रैलोक्यसंबंधीअष्टकोटीपटूपंचाशत्लक्षसमनव
तिसहस्रचतुःशतएकाशितीअकृतिमश्रीजिनचैत्या
लयेभ्योमहादीपंनिर्वपामीतीस्वाहा॥दीपं॥६॥देवडुवा
रश्रीरवंडुउदारलोबानसुसारअरूवसलार॥गुगालपाच
सिलारससारचअगरकीनगरकीसनागरनार॥एदस्रांअंग
अतासनसंगसुगंधअनंगमहामदकार॥भ्रमरउटाकरिअ
ल्पटासबमानुघटाघनअंबरछार॥१०॥आवकिरोडसु
रूप्य॰॥ॐह्रींत्रैलोक्यसंबंधीअष्टकोटीपटूपंचाशत्
लक्षसमनवतिसहस्रचतुःशतएकाशितिअकृतिम

आष्टकं॥छंदसवैया॥३३॥यथा॥पंचमसागरदेसबअगर
ताकिउजागरनागरवारी॥गंगतरंगनिआदिअनंगचतुर्दश
चंगनदीजलगारि॥र्अरजुकूपतडागअनूपपियूषसुरूपत
रीमनिस्यारी॥जैजयकारकरीललकारदिवोत्रयधारत्रिवार
किं निकारी॥१॥अवरोडुजुउप्पनलायवसमानुदजारआरीसी
रक्यासी॥श्रीजिनधाममहाअभिरामत्रिलोकमेनाममदाअ
विनासि॥इंदजुचंदफनिंदमुनिंदनरेंदरवगेदसुवंद्यविका
सि॥नाचतगावतबाजेबजावतपूजरआवतकुंअतिवासी
॥ ॥ॐह्रींत्रैलोक्यसंबंधीअष्टकोटीपटूपंचाशत्लक्षसम
नवतिसहस्रचतुःशतएकाशितिअकृतिमश्रीजिनचैत्या
लयेभ्योमहाजलनिर्वपामीतीस्वाहा॥जलं॥ चंदनबावन
तापनसावनत्वमदपावनचर्चुबडेरा॥मानुश्रीरवंडुकहेगु
णपिंडकुनामसचंदुजआवतमेरा॥श्रीकहिलछमीजुतमे

८९ जनखंडसुखंडकरैमुसकेरा॥नासुअतिगितसुपद१घच
ढोतदृखंदुनिकेतोन्नलेरा॥५॥ॐह्रींत्रैलोक्यसंबंधीअष्ट
कोटीपटपंचाशलक्षसमनवतिसहस्रचतुःशत
काशीतीअष्टकृत्रिमश्रीजिनचैत्यालयेभ्योमहार्घंनि
र्वपामीतिस्वाहा॥अर्घं॥२॥शालअखंडितदीपविहंडि
तमोरअमंदितअशतप्यो॥उज्वलचंदसमानअनंदहि
येमअनंदहिदेखनहारा॥केशरिवाससमतिसुखदासक
मोदसुवासअतिअलियो॥पुंजसुपुंजअगारिधरैवकुमा
नुगिरेनजैतसवतारा॥५॥अक्षतकिरेडं॰॥ॐह्रींत्रैलोक्यसं
बंधीअष्टकोटिषट्पंचाशलक्षसमनवतिसहस्रच
तुःशतएकाशीतिअकृत्रिमश्रीजिनचैत्यालयेभ्योमहा
अक्षताननिर्वपामीतिस्वाहा॥अक्षतं॥३॥लालनिलाअ
समानिपिलासुगुलासुगुलाविहरान्सुगदासितकाला॥गो

तंगतुरंगसवारी॥नहासविलासअकामविदारी पुजो॰१६
॥नदेशप्रदेशनवेशनवेश॥नाग्रामनधामनकामकलेश पुजो
॰१७॥नावादवीवादविषादउमेद॥नछेदनभेदनवेदनखेद
पुजो॰१८॥नरंकनशाकनडंककलंक॥नदेहननेहनमेहन
पंक॥पुजो॰१९॥नहाटनबाटनघाटकघोर॥नदंडनबंडन
अंडनचोर॥पुजो॰॥२०॥नपापनतापनमापविलाप॥नधर्म
नकर्मनजर्मअतापा॥पुजो॰॥२१॥नहाकिनिशाकिनिभूतपि
शाच॥नमंत्रनतंत्रनजंत्रकुवाच॥पुजो॰ २२ नजन्मनमर्णज
रादिकदुःखअनंतनसुखंजनआतिकसुख पुजो॰२३॥घ
त्ता॥छंददोहरा॥सकलसिद्धपरमातमा सकलसिद्धिकरतो
र॥तैअमुलिकनंदको॥नमहिगलेकुनिकार २४॥ॐह्रींश्री
नाहतपराक्रमायसकलकर्मविनिर्मुक्तायश्रीसिद्धचक्रा
धिपतयेमहाजयमालार्घंनिर्वपामितिस्वाहा॥जयमाला

र्घं ॥४४॥ छंद अडिल्ल ॥ रोगशोकदुखदारिद्रनशै आपदा
पुत्रपौत्रधनधान्यलहै सुखसंपदा ॥ इंद्र चंद्र धरणेंद्र नरेंद्र जु है
सबै आमै सुगति मस्यार करम सब खोयकै ॥४५॥ इत्याशीर्वा
दः ॥ अथ ॥ इति द्वितीय सिद्धचक्र पूजा समाप्त ॥ २ ॥ अ
थ त्रैलोक्य संबंधी अकृत्रिम चैत्यालय पूजा प्रारंभ
ते ॥ स्थापना ॥ छंद अडिल्ल ॥ आठ किरोड़ बहोरी छप्पना
लाखजू सत्ताणवै हजार च्यारिसै च्यारजू ॥ इक्यासी जो जि
निनालय लोकमै ताकी करूं अह्वानन विधि दे धोक मै ॥१॥
ॐ ह्रीं त्रैलोक्य संबंधी अष्ट कोटि षट्पंचाशत् लक्ष सप्तन
वती सहस्र चतुःशत एकाशीति अकृत्रिम श्री जिन चैत्या
लय अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ॥१॥ ॐ ह्रीं अत्रा
तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ॥ स्थापनं ॥२॥ ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहितो
भव भव वषट् सन्निधापनं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत ॥३॥ अ

मन समान सुमन किन्न अंजुलि बौ सुदा ॥४२॥ इति पुष्पांजलि
क्षिपेत ॥४३॥ सिद्ध प्रसिद्ध विसुद्ध बुद्ध अविरुद्ध देहे पूरणबु
द्धसरूप अनुपम मृद्ध है ॥ तिर्थंकरा सरिखे जिन कौ नितप्रत
नवै ॥ ता गुण की महिमा कवलग हम वरणवै ॥४४॥ [illegible]
त्रार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४५॥ अथ जयमाला ॥ छंद दोह
रा ॥ ध्यान अगनि करि कै महा करम काष्ठ वसु जारी ॥ वसु गुण
जुत वसु गुण वसे ॥ नमुं वसु अंग सुधारी ॥१॥ [illegible] जिन
द्वा दास कृत द्वादशांग समुदाय जयमाल [illegible] ॥ छंद मोती
दाम ॥ सुमोह निघात सु सम्यक प्राण ॥ निजातम मम अन्यय ज्ञा
न आम ॥ पूजों नवी सिद्ध निरंजन देव ॥ जै हे मन वंछित सो रस
सुमेव ॥२॥ सुग्यान अनाय वर्णिग ताड़ गतन्यान सुसैनु तनावीआ
रु वृतमान ॥ पूजौं नवि० ॥३॥ सुदर्शन आवर्ण गये लहीदर्शो ॥ ता
रमा सब लोक अलोक जु सर्व ॥ पूजौं न० ॥४॥ हुय अनंत आय

सुविर्यपराम नदापगटीनिजआतमप्रकासि ॥ पुजो० ॥ ५ ॥ सुना
मगायेगुणसुक्षमलक्षु ॥ अमुर्तिकहोजिवइंद्रियदग्ध ॥ पुजो
०६ ॥ सुअगुणयेअवगाहनपाये ॥ इकेकमेसिद्धअनंतसा
माय पुजो० ॥ ७ ॥ सुगोत्रगयेअगरुलघुगुण ॥ निचानउंचासम
वतुल्यनिपुन ॥ पुजो० ॥ ८ ॥ सुवेदनीनाशगुणबाधाबाध न
सुरकनडुरकस्वर्गमोक्षअगाध ॥ पुजो० ॥ ९ ॥ नयमअवहारसु
यगुणअष्ट सुनिश्चयतेगुणअनंतसमपष्ट ॥ पुजो ॥ १० ॥ गोयागा
लिमोमस्तुसुसीमस्यारि ॥ निराहतिसाहतिमोपत्तुधारि ॥
पुजो० ॥ ११ ॥ कत्तुकमीवर्मशरिरत्नुमाहि ॥ बसेशिवमेजिमद
र्पनछाहि पुजो० ॥ १२ ॥ नक्रोधनमाननमायनलोभ ॥ नरागवि
रागनसोगनछोभ पुजो० ॥ १३ ॥ नतातनमातनभ्रातनपित्र ॥
नपुत्रनपोत्रकलत्रनमित्र ॥ पुजो० ॥ १४ ॥ नरोगनसोगसंयोग
वियोग ॥ नखाननपाननग्लानमनोग ॥ १५ ॥ पुजो० ॥ १५ ॥ नतुंगम

तिरथंकरहोयवरैशिवयोवकरीजगमैनहीआवे ॥ १९ ॥ इ
त्याशिर्वादः ॥ इतिप्रथमअर्हंतपूजासमाप्तः ॥ १ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ अथ
द्वीतियसिद्धपूजाप्रारम्भते ॥ स्थापना ॥ छंद अडिल्ल ॥ अष्टकर
मकुनसायअष्टगुणपायकै ॥ अष्टमिवसुधामाहिविराजेजा
यकै ॥ ऐसेसीधअनंतानंतमनायकै ॥ संवौषटआह्वाननकरु
हरखायकै ॥ १ ॥ ॐह्रींणमोसिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठि [illegible] वतराव
तरसं[illegible]षट्आह्वाननं ॥ २ ॥ ॐह्रींअत्रतिष्ठ [illegible] ठः ठः स्थापनं
॥ ३ ॥ ॐह्रींअत्रममसन्निहितोभवभव [illegible] सन्निधापनं ॥ ४
पुष्पांजलिंक्षिपेत् ॥ ४ ॥ छंदत्रिभंगी ॥ [illegible] ॥ हेमाचलगंगा ॥
आदिअनंगातिर्थउत्तंगासुरवंगा ॥ आलियसुरसंगासलिल
सुरंगाकरिमनचंगानवअंगा ॥ हेत्रिभुवनस्वामीअंतरजामी ॥
सिद्धप्रभुनामीअनिगामी ॥ शिवपुरविश्रामीकरुणाधामीनिजशि
रनामीअरजामी ॥ ॐह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविनि

८५ मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये महाजलं निर्वपामीति स्वाहा ॥
जलं ॥ हरिचंदन लायो अति महकायो घसि सुहायो मन भायो
जल संग घसायो लैकर आयो चरणों चढायो सुख पायो ॥ हे त्रि
भुवनस्वामी ० ३ ॥ ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविनि
र्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये महागंधं निर्वपामीति स्वाहा ॥
गंधं ॥ २ ॥ मुक्तागनहारे तंदुल सारे शशि दुति टारे अनियारे ॥ जि
व जंतु निवारे जल सुपखारे पुंज तुसारे ढिग धारे ॥ हे त्रिभुवनस्वा
मी ० ४ ॥ ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविनिर्मुक्ताय श्री
सिद्धचक्राधिपतये महाअक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ अक्षतं
॥ ३ ॥ सुरतरुकी वारी प्रित विहारी कलियां प्यारी गुलज्यारी ॥ न
सं रीकंचनथारी मालसँवारी तुम पदधारी अतिन्यारी ॥ हे त्रिभुव
नस्वामी ० ५ ॥ ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविनिर्मु
क्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये महापुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ पु

ष्पं ॥ ४ ॥ पकवान निवाजे मोदक साजे घेवर खाजे कर ताजे ॥ ब
रुस्वाद विराजे अमृत लाजे पूजन काजे धरु आजे ॥ हे त्रिभुवन
स्वामी ० ६ ॥ ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविनिर्मुक्ता
य श्रीसिद्धचक्राधिपतये महानैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ नैवे
द्यं ॥ ५ ॥ आपापर नासै ज्ञान प्रकासै चित्त विकासै तम नासै
ऐसै विध खासै दीप करासै धरु तुम पासै उल्लासै ॥ हे त्रिभुवन
स्वामी ० ७ ॥ ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविनिर्मुक्ता
य श्रीसिद्धचक्राधिपतये महादीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ दी
पं ॥ ६ ॥ लोबान बिशाला लाकपुर साला चंदन कालागरु वाला
इसादीक ज्वाला नीतरढाला नारिन माला धुम आला ॥ हे त्रि
भुवनस्वामी ० ८ ॥ ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सकलकर्मवि
निर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये महाधूपं निर्वपामीति स्वा
हा ॥ धूपं ॥ ७ ॥ श्रीफल अति नारा पिसता प्यारा दाकबु दारा

८६ सहकारा॥ रितुरितुका मारा सफल सारा अपरंपारा लेधारा॥
है त्रिभुवन स्वामी अं०॥१०॥ ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सक
लकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये महाफलं निर्व
पामीति स्वाहा॥ फलं॥ ८॥ जल आदिक वसु द्रव्य अर्घ अमंदा
यजत अनंदा सुखकंदा॥ मेटो भव फंदा जब दुख वृंदा हीरा
चंदा तुम वंदा है त्रिभुवन स्वामी०॥१०॥ ॐ ह्रीं अनाहतपराक्र
माय सकलकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये महा
अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ अर्घं॥ ९॥ छंद अडिल्ल॥ सिद्ध
चक्र सुमरीजे निज कारज करै॥ नानरके मनवांछित काम सबै
सरै॥ वे सिद्ध निको जलधारा दो मन रली॥ आवागमन जलांज
लि मानु दिनी न ली॥ ३३॥ [illegible] नयेत्रां निधारा त्रयं ददान॥१०॥
॥ लोकसिखा पर सिद्ध अनंतानंत है॥ निसनिरंजन अंजन
रहित महंत है॥ अजर अमर अवीनासि अविकारी सदा सु

हान॥ कुसुमांजलि तासु मनकी॥ जिकां २॥ देव तक्ष भगवान॥
रे महाराज मनावा॥ वंछा फल फैलै पावा॥ ०३॥ ज्यापूज्या० इति
पुष्पांजलिं क्षिपेत॥४४॥ सार्थक नाम सहस्र वसु॥ जिकां २॥ गिरा
अ संख्य अनंत॥ ताक रिके सो तरपती॥ जिकां २॥ देव अर्घ अर
हंत रे महाराज॥ ४५॥ ज्या पुज्या सुख०॥ महा स[illegible]र्घं पा
मीति स्वाहा॥४६॥ अथ जयमाला॥ छंद दोहा॥ घातिकरम व
अघातिया नाम लीयो अरिहंत॥ षट् आलिस गुण जुत नमूं अठ
रा दोष निहंत॥१॥ चाल माघनंदि मुनी कृ[illegible] निर्ग्रंथ
रके जयमाल की॥ ताथा छंद वेसरी॥ [illegible] नाम
अमल जल मल॥१॥ मूत्र न ही कायं॥२॥ मांस रुधिर खीर वरण सु
हायं॥३॥ सम चतुरस्र संस्थान गहीरं॥४ वज्र वृषभ नाराच [illegible]
शरीरं॥५॥ अद्भुत रूप॥६ वपु वास सुवासं॥७ अति प्रिय हि
तमित वचन विलासं॥८॥ तनकि हद बल अतुल विशेषं॥९॥

८२ जौंन्यारासिसीगजरूपधुवंशं ॥२॥ एकसद सवसुलछनदेहं ॥३०॥
जनमतदशअतिशयसुनयेहं ॥ दशकेवलज्ञानअतिशयनं
म ॥ धनुपनसहस ॥५००॥ चलंतसुरीखं ॥१॥ शतजोजनचकुदि
शिसुरभिखं ॥२॥ सबविद्या ऽ धिपतं ॥३॥ वकुमुखइसं ॥४॥ नख
नपलक ॥५॥ ननछायनयनस्यं ॥ नखशिरकेशनहद्धिनवंतं ॥
७॥ सोघगटेसबधानुअंतं ॥८॥ जिववध ॥९॥ उपसर्गा ॥१०॥ अनपानं
१०॥ अतिशयदशायहकेवलज्ञानं ॥ चतुर्दशदेवकृतअतिश
यनाम ॥ सकलार्थमागधिभाषाशोभं ॥१॥ सबजियमैत्रीयभावय
शोभं ॥२॥ ३ ॥ छहऋतुकेफलफुल्लफलंतं ॥ बिरखवनयेमनुपचनु
कुनमंतं ॥ मनिमयमहिदर्पणकाचसमंतं ॥४॥ विहरतप्रभुसबज
नआनंदं ॥५॥ ६ ॥ प्रभुपिछपौनसुगंधवहंतं ॥ ह ॥ जैपौंधनीपिछेदां
सचलंतं ॥ करतमरुतसुरनूरजदूरं ॥ ७ ॥ गंधोदकवरषेघनसूरं ॥
८ ॥ पगलगतिकृतकमलविबुधं ॥ आगुपिछेचौदहनवम

धं ॥१०॥ सबधान्यफलितभुवगनकृं ॥११॥ मनुरोमांचनरपभु
हं ॥१२॥ निरमलदसुदिशगगनयाथार्थ ॥१३॥ सुरकुबुलावना
सुरपुजनार्थ ॥१४॥ जिनअग्रधर्मचक्रचलंतं ॥१५॥ सुरवसुमंगल
द्रव्यधरंतं ॥१६॥१०॥ अष्टमंगलद्रव्यनाम ॥ छत्र ॥ चमर ॥ धुज ॥
३॥ घट ॥ धनंगारं ॥५॥ सुप्रतिका ॥६॥ दरपन ॥७॥ ताल ॥८॥ जुसारं ॥ इहां
चौदहअतिशयकृतदेवं ॥ सबमिलिअतिशयचौतिसयेवं
॥३४॥ अष्टप्रातिहार्यनाम ॥ वृक्षअशोकहरतजनशोकं ॥१॥
उन्नतमनुपरसतनलोकं ॥ तरुतलमणिसिंघासननीकं ॥ ना
पेअधरचतुरंगुलजीनं ॥२॥३॥ तिहुंजगपतितिहुंछत्रफिरंतं
॥४॥ त्रिभुवनप्रभुपनमनुप्रगटंलजकुन चौसटचवरढुरंतं ॥
॥५॥ गंगापहूतहिमगिरगुदिशांतं ॥६॥ नामंडलद्युतिमैनवसा
तं ॥ दिसनभदानेदनदीनरातं ॥७॥ दिमध्वनीसबनाथसुशंतं
॥८॥ जैपौतरुसौंघनजलप्रावंतं ॥९॥ सादेबारकिरोडसुवादे

देव बजावत दुंदुभि आदं ७ नचते सुरपुष्प सुवरखतं ८ समवसु
रनि द्वारा अशोकं तं ९१ ॥ अनंतचतुष्टयनामा ॥ दरशन १ ग्यान
२ विरिय ३ सुखनंतं ४ ये अनंतचतुष्टयमतं ऐसे है या लिय
गुणवंतं दोष अठारह रहित नगवंतं ॥ ३ दै ॥ अष्टदश दोष ना
मा ॥ राग १ रुदोरव २ त्रस्ना ३ अरति ४ खेद ५ ॥ मोह ॥ ६ ॥ सुशोक ॥ ७ ॥
भिती ॥ ८ ॥ मद ९ खेद १० जन्म ११ जरा १२ मरण १३ क्षुधा १४ प्या
स १५ विस्मय १६ चिंता १७ निद्र १८ विनासं ॥ १९ ॥ घना छंद दोह
रा तिन लोक कि संपदा रहि समवशरण आनि ॥ सोधो ही रा
चंदकौ मै ज्याचक नुम दानी ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं अर्हन्मदकमलेश्यो म
हा जयमाला अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ जयमाला र्घ्यं ॥ २१ ॥ छं
द सवैया ॥ २२ ॥ जे जिव कुड कपट तजि सुनन आवन तै जिनपु
र आवै ते जिव के धरनेंद्र खगेंद्र नरेंद्र सुरेंद्र तनो पद पावै ॥
फेर चक्रवी मंडलीक महामंडलीक हरी वली चक्री कहावै ॥ श्री

॥ २३ ॥ मचकुंद कुंद कमल अमंद यज जवजि नंद दीनंदकौ ॥ अलि
वृंद होय सुछंद परमानंद पियम करंदकौ ॥ गुणवंत षट० ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मदकमलेश्यो महापुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ पुष्पं ॥
४ ॥ पकवान नाना न्यान मिष्ट महान अमिय समान है निरमान
सुरुच सनान सराम विधान करि अमलान हैं ॥ गुणवंत षट० ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मदकमलेश्यो महानैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ नैवे
द्यं ॥ ५ ॥ तम नास घट पट नास मन उल्लास नयन विकास नो मनि
रास अधिक उजास दीपक जास पास प्रकास नो ॥ गुणवंत षट० ॥
७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हन्मदकमलेश्यो महादीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ दी
पं ॥ ६ ॥ सर वंग चंदन चंग अगर सुरवद संग करि मन रंगसौ ॥ दव सं
ग जर तउतंग परिमल चंगले तउ मंगसौ गुणवंत षट० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं
अर्हन्मदकमलेश्यो महाधूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ धूपं ॥ ७ ॥ वि
जपूर पुंगि खजूर लिंबु पचूर दूर सुलाइये ॥ कंगूर अनार कदलि

मधुरअम्रिफलहृन्स्रूरचवढाइये॥गुणवंतषट॥८१॥ॐह्रींअर्ह
मदकमलेभ्योमहाफलंनिर्वपामीतिस्वाहा॥फलं॥८॥पय
गंधअक्षतकुलानचरुबलगु दीपमालधुपैफलै॥नमिनालबिरद
बिशालहीरलालअम्रधरचैनलै॥गुणवंतषट॥१०॥ॐह्रीं
अर्हम[illegible]भ्योमहाअर्घ्यंनिर्वपामीतिस्वाहा॥अर्घ्यं॥
९॥[illegible]॥जयमालफागमेरआकी॥रत्नत्रयजलधार
द्यो॥जिकांइ॥शांतिकरनकेकाजे॥जन्मजरामृतिकोदिनी॥
जिकांइ॥मानुजलोजलिआजेर॥महाराजमनावांवंद्याफल॥
पावा॥पूजरआवसा॥जिनराजमनावा॥वंद्याफलफैलैपावा॥पू
जरआवसा ४४ ज्यापूज्यासुखउपजे॥जिकांइ॥उपजेपुण्यअ
अपार॥सुरगाकासुखनोगवि॥जिकांइ॥पावैमोखइकवारमहा
राजमनावा॥वंद्याफलपावा॥पूजर॥४२॥शांतयेशांतिधारा
वयंदद्यामि॥४०॥पुष्पसुनानाजातिके॥जिकांइ॥गंधसुगंधम

॥सिस्तबुबुधिसारवेगंमागुश्रीसा।कलकीरति।गुरु[illegible]

ॐनमःसिद्धं॥अथापंचपूजाभाषादीरचंद[illegible]कृता[illegible]॥
॥प्रथमनमस्कार ॥छंददोहरा॥पंचपरमगुरुकौ आदिनमू
पंचअंगनूलगाय॥पंचपूजाभाषारचौ॥पंचमगतिसुखदाय
॥१॥प्रथमपुजाअरिहंतकी॥द्वतियसिद्धकिजोय तृतियअरह
तिमधामकी॥तुरियसरस्वतिहोय॥२॥पंचमश्रीमुनिराजकी॥
पूजाहैनवतार॥देशभाषामयकहतहौ॥आगमकेअनुसार॥३॥
अथप्रथमअर्हंतपुजाप्रारंभते॥स्थापना॥अडिल्ल॥धा
नखडगकरिघातिकरमअरिखंडिया॥केवलदरशनज्ञान
विरियसुखमंडिया॥सोअरिहंतमहंतनमोमदछाण्डिके॥पुष्पा
जलिद्योखडत्रिवारअरिके ३॥ॐह्रीं[illegible]अर्हंत[illegible]
ईस्यअवतरअवतरसंवौषट्[illegible]आह्वाननं॥ॐह्रीं॥

८३ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहितो भ
व भव वषट् सन्निधापनं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत ॥ ३ ॥ अथाष्ट
क ॥ छंद गीता तथा हरिगीता तथा रूपमाला ॥ यथा ॥ अविका
रवार मधुर अपार सुधवल हार तुषार ते ॥ जरि सार सम निजिंगार मै
नयधार द्यौ अति प्यार तै ॥ गुणवंत अष्ट चउ तंत दोष निकंत
वसु दर्शनंतकजू अरिहंत संत जिन्यौं महंत अनंत महिमावंता
जू ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हन्मदकमले श्री महाजलं निर्वपामीति स्वा
हा ॥ जलं ॥ १ ॥ सिरिखंड रंजन दहत्तं जनन वरांजन परचियो ॥ दा
॥ करिद्रा न अंजन देह मंजन नवर नक्कंजन चरचियो ॥ गुणवंता
पठ० ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हन्मदकमले श्री महागंधं निर्वपामीति स्वाहा
॥ गंधं ॥ तंदुल सुअर्जित खंड वर्जित चंद्र तर्जित राजही ॥ भु नगंध
न जित भृंग गाजित पुंज धर्जित छाजही ॥ गुणवंत पठ० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं
अर्हन्मदकमले श्री महाअक्षतं निर्वपामीति स्वा ॥ अक्षतं ॥

कितमुक्त काम निमोहै ॥ उपसमसंड अजुहार्थे ॥ तीनि गुप्ति मढी माहि पैसे ॥ सम
ता जोगिनी साथे ॥ २६ ॥ वर कछोटी सील समोटी ॥ संजम सत्रमी अंगे ॥ करुणा की
गुरिया मनुलावै ॥ रुचि चिदानंद संगे ॥ २७ ॥ दसलाक्षण गुण चक्रफिरावै ॥ आग
म दिष्टि निहालै ॥ पंचसमिति जंगोटा कसि कसि ॥ परमारथ पंथ चलावै ॥ २८ ॥
॥ संवर सर वरि पालि हिवैगे ॥ मदजा मन गरावै ॥ परमानंद कलोल सिनाइ ॥ न
व आताप बुझावै ॥ २९ ॥ तप गिरि खरच ढि जग गुरु देखै ॥ अलख नीरंजन जोवै
॥ जा देखें तहां अवर न देखै ॥ परम पराप तिसोई ॥ ३० ॥ सत्व गुफा माहि बसु निरं
तर ॥ चेतन दीपग जोवै ॥ मिथ्या बल तम दूरि करे विण ॥ परम समाधि हसोवै ॥ ३१
॥ जो लहियो यो सो मई मूकित ॥ मूकि मूकित औसो लहिउ ॥ काल अनादि फि
रंत फिरंत हि ॥ सो इं सहज दल हियौ ॥ ३२ ॥ जो लहियो सो दिढ करि गहियौ ॥ मू
लि न मन न तो षो ॥ संकत णे गुरकी परि राखो ॥ सम ड सम डहैं जो वै ॥ ति सतहि आ
रति कंडु न मो पहि ॥ धर्म सुध्यान हि ध्यावै ॥ ३३ ॥ सुकल ध्यान परिपूरण पूरि वि
॥ केवल सीगी गावै ॥ अति समचेला जा हित नहीं ॥ सुरनर फणि लेआवै ॥

५८ ॥३४॥ जैजैपषकरहितेदेखेहि ॥ मुझगोरखगुनगावहि ॥ ज्ञानराजिहौवै
८० गोरखनाइ ॥ छत्रत्रयंसुधरावुं ॥ ३५ ॥ आखवअनंतीसंपतिविलसुंआणत्रि
लोकफिरावौ ॥ पंचप्रकारआवनअवनजिवि ॥ पंचप्रसिषदपावु ॥ ३६ ॥ पं
चलघुअक्षरकालक्षीतरि ॥ पंचमगतिजंजावुं ॥ लोकसिखरितहांपरमनी
रंजन ॥ निवसहिसिद्धमहंत ॥ ३७ ॥ आवागमणजलंजलिदेकरि ॥ अहि
कालअनंता ॥ दुषमिक्षेत्रकालनवंनजिविजहिवातिगुनविस्तूरइ ॥ ३८ ॥
पंचकारणजंकवजंकवजं ॥ लहिसुकवमुहिवंछतपूरइ ॥ ध्यानजिनेसर
मारगजोवुं ॥ निरमलमतिजोध्यावुं ॥ ३९ ॥ सोनरवांछितपरमपदारथ ॥ अरी
जियकाहिनपावइ ॥ छोडिअचेतनअंधपडा ॥ सोनरशिवपुरपावे ॥ ४० ॥ जो
गीरासोमीखेहाआवका ॥ दासुनकोइआवे ॥ जोजिणदाससुविविधिहित
विधिहि ॥ सिद्धिहिसुमिरणकीजइ ॥ ४१ ॥ इतिश्रीजोगीरासोसमाप्तः ॥ छ
॥ श्री [illegible] जीवनकथादरिवसेवासु
श्रीवीरजिनवरधिरजी नवर पायप्रणमिसुं सरसपती मालानेया

इईदुःखकेरे ॥ दीरघडोरिनटूटै ॥ ६ ॥ कोइकोपरमेडनपायो ॥ विषयविलासुन
साग्यो ॥ रामारिसामधनुषनसंध ॥ तापरिगहगहरनलागो ॥ ७ ॥ कामुक्तुयंगमुडस
तनयाके ॥ विरहलहरिचडिआवे ॥ विहलेघुलुहोइरह्या ॥ चिदानंदकहिकैसे
सुखपावइ ॥ ८ ॥ मेघरुघरणीमेधनुधरणी ॥ मेसुतमेपरिवारा ॥ अत्रपटलधरि
वातसबूकै ॥ जानतनलागीबारा ॥ ९ ॥ किसकीसंपतिकिसकामंदिर ॥ किसका
इरुघरबासो ॥ पंचदिवसकोमेलतुंरसाई ॥ अंतिमसाणहवासो ॥ १० ॥ जिउज
गसूत्याविउजगुसूत्या ॥ जाणिउजातनकालो ॥ जिजमछहतिउमाणसुरूपरि
॥ पडइअचिंतउकालो ॥ ११ ॥ चेतनपडिअचेतनकी ॥ वंदिजहिकैचेतहिजाइ
॥ मोहहफंदुगलेमहिसाई ॥ मेमेमेविललाइ ॥ १२ ॥ माणुसतउअरुआवगऊलवि
णु ॥ अवरुनकोईपावे ॥ दरसनज्ञानचरणतपुतपि ॥ करिलेजसुलेजसुडाइ ॥
१३ ॥ पद्मुमरालंपटुवचनसुचरपटु ॥ कायालागपगरोगो ॥ पंचमहाव्रतडडरसाई
॥ लेणमराकोजोगी ॥ १४ ॥ जहिकारणिदोनावणसावो ॥ होविषयधअजोगी ॥ जि
निघरुवासाछोडनिरासा ॥ कवरुकहांसोजोगी ॥ १५ ॥ जोगीरुहोईकरिजोगुनि

५८ रोधो॥सुरनिकेरोगुरुसिष्या॥दिविजुगंतरजाउरवडंडहि॥तेउनिरीहनतिष्या॥
१८ १६॥होउसंतोषीनीरसभोगी॥मोहंसबदसुणावु॥समाधारीकंधेमेरै॥पंचघरह
फिरीआवु॥१७॥ऊंचानीचागेहनदेखुं॥निर्धनधननविचारुं॥दोइकरपिथर
आगेमांडी॥एषनलेउआहारो॥१८॥होउएकाकीपरमउदासी॥आराधनागु
णरासी॥होकोईकोदीहैतोउपदेही॥उजुकोइनपासी॥१९॥रयणत्रयधनम
गुनंडारहि॥बिलसानआनंदनआवे॥चारअहोनिसिसिनाकत॥जागवलेमन्न
पावे॥२०॥नाहउराधउनाहउबिरचउ॥नाकनुचानितनआएु॥जीउसबेकोइके
वलनाणी॥अप्पसमानेजाणु॥२१॥मोहमहागिरिपोदिवहीवे॥इंद्रियधूलिम
रीवे॥कंदर्पसिष्यनिदर्पकरेपिए॥विषयविषमविषनारीवो॥२२॥बारहअ
नुप्रेखाजरमेरी॥तेनिसिदिविसिमनभूलो॥उत्तिमरिवमनिजमंत्रपटविएु॥क्रो
धपिसाचहिटालो॥२३॥माननगरकीबाटनबूझु॥मायाबेलिनरोपुं॥लोभनदी
माहिपाउनबोलुं॥श्रीगुरुसिष्यानलोपुं॥२४॥पंचमहाव्रतकंथामेरी॥भूलिनत
नतहिरवोवुं॥मूलउत्तरगुणपालीमेती॥सुरतिकेरीकारीधोवु॥२५॥सम॥

अपारपरमजिनेंद्रवंदित॥सिद्धपदजिमपाईये॥१०॥चाल॥पुरुषाकारेत्रि
लोककह्यो॥माटलदोढसमानोजी॥तिनसेत्रेताळस्यो॥रजुलोकपरमाणोजी
॥११॥त्रोटक॥प्रमाणजाणोजिनेंद्रभाषित॥अनंतआकाशावचिरह्यो॥अधो
भागीनरकपुरित॥मध्यदीपसमुद्रकह्या॥उपरिदेवविमानसोहे॥माथेमुग
तिवधुरही॥असालोकमध्यजीवअनंता॥सुखलवकिहानविलह्यो॥११॥चा
ल॥मानवजनमअतिदोहिलो॥चिंतामणिसमहोयजी॥आर्जखंडअतिदोहि
लो॥श्रावककुलतुजोयजी॥१२॥त्रोटक॥जोयजिवडाअतिदोहिला॥भेद
बोधजिनकह्या॥संसारसायरमाहिभमता॥आजपहिलानविलह्या॥सारद
र्शणज्ञानचारित्र॥रयणतीनपालिये॥ध्यानअग्निकर्मईंधन॥जिमवेग
जालिये॥१३॥चाल॥धरमतेधरीयेधुरिवलि॥धर्मछरूणीभेचंगजी॥धरमेध
रमेतेपामीये॥धरमेसुरपदचंगोजी॥१४॥त्रोटक॥संगरंगअनंगकेरा॥भोग
जोगतेअतिघणा॥ईंद्रचंद्रजिनेंद्रपदवी॥सुखकेरीनहिमणा॥संसारछेदि
कर्मभेदिसरववेदिथाईये॥अस्याधरमफलवळिवेग॥सिद्धपदजिमपाइये॥

५७ ॥ ढाल ॥ सारखे बारणा भावना ॥ फुलडा के रे रे हारो जी ॥ नवि यण भावे रे पे
५८ हमिये हैडे सुखदातारो जी ॥ १४ ॥ त्रोटक ॥ दातार सार श्री विजयकीर्त्ति ॥ चरा
णसी सिनमावि ये ॥ अभचंद्र सुरि वर सकल सौख्य करा ॥ नामेन वनिधि पामीये
॥ मूलसंघ सोहे नयमाहे ॥ चंद्रकीर्त्ति मुनिवर तणो ॥ असिबार भावनाजी व तु
नावे ॥ ग्रारतार हिजे श्री जिनतणो: ॥ १४ ॥ इति अनुप्रेक्षा समाप्त: ॥ अथ श्री जो
गीरासलि ग्रंथ ॥ आदिपुरुष जो आदि जिन गोत्तम ॥ आदि जती आदि नाथो ॥ आ
दि जग तगुरु जो गुणपयामित ॥ जय जय जय जय जगन्नाथो ॥ १ ॥ तासु परंपर मुनिवर
उवा ॥ दिगंबर सद्गुनाणी ॥ कुंदकुंदाचारिज गुरु मेरा ॥ पाखंड कदियनकाहाणी ॥
२ ॥ तो परि अप्पा अप्पु न जाणइ ॥ पर सिउ प्रेम घणेरा ॥ जीव धजो गुण याने हि न
टइ नव तु विशेगी केरा ॥ ३ ॥ सरूप अप्पि सचनापन बरा ॥ सत अधिक सरोसु ॥
जो जल सरवरु रहइन तर मेघ किसा को दोसु ॥ ४ ॥ श्री गुरु तउ पद्म सिरोम
णि ॥ जिहि जिन भाषित कहियो ॥ भेमति गूढ अनिष्ट अयाणो ॥ समकित रयण
नाहियो ॥ ५ ॥ अवे मेडरीसो जाणि तरे नाई ॥ मिथ्या गंठि न छूटे ॥ आमन मरण

व बहु दुख पाइयो ॥ संसार रहित सिद्ध स्वामी ॥ ध्यान आपा सुरमी ॥ संसार छो
डि कर्म मोडि ॥ सुगति काम निम न गामि ॥ ४ ॥ ढाल ॥ एकलो जिव डो रे अवतरे ॥
एकलो मरे रे गमो जी ॥ कुटंब निकारण पाप करे ॥ एकलो दु:ख सहे तो रो जी ॥
५ ॥ त्रोटक ॥ सविवा दुख सहे नरक गति जीव ॥ ना पतो डन एकलो ॥ छेदन भे
दन सुभारो पण ॥ यंत्र करवत दुख निलो ॥ स्वर्ग राजा थाय एकलो ॥ एकलो जि
व सुगति रहि ॥ अस्स जाणि जीवडा एक आप्पा ॥ ध्यान धरि जिम सुख लहे ॥ ५ ॥
ढाल ॥ भीन्न सहा वे रे जिवडो ॥ जिम जल पोयण पानो जी ॥ कर्म थकी एवेग को ॥
केवल दर्शन ज्ञानो जी ॥ ६ ॥ त्रोटक ॥ ज्ञान मूर्ति सुद्ध आप्पा ॥ राग रहित ज्ञाणि
ए ॥ अकलंक निर्मल सकल सुंदर ॥ आठ गुण वखाणिये ॥ तिन काया भिन्न
माया ॥ भीन्न जायाजो व लि ॥ मोह तेवायो ॥ कमान ॥ छिरनी रनी पेरमलि ॥ ६ ॥
॥ ढाल ॥ अशुचि सहा वे शरीर ॥ सात धातनर कभंडारोजी ॥ नव द्वारे निरमझ
रे ॥ तेह रंग धम्म सारोजि ॥ ७ ॥ त्रोटक ॥ ससार श्यारिर एचरम बांधु हाडपिंजरो
गे भस्यो ॥ गोरस्व रमेटे हवे ह्यो ॥ देखि जिव कां मोह करे ॥ मळमूत्र पूरित जडाजु

५६ रो ॥ सुखदुःखनंजाणि ॥ आपोइहदेखिअमलआप्पा ॥ जोगजिनवरवाणि
११ ये ॥ ७ ॥ चाल ॥ आश्रवसंघलोरेजाणि ॥ भेदसतावनहोयेजी ॥ मिथ्यावरति
कषायण ॥ योगकहेसहुकोअजी ॥ ८ ॥ त्रोटका ॥ सहुकोयजाणिकरमकारण
॥ एहआश्रववारिण ॥ संसारसागरबुडता ॥ आपोआपजनागिये ॥ कांयीआ
लिनारोससदाखो ॥ आपराखोवसकरी ॥ सत्वरुंधिजिनध्यावो ॥ जिमजावोतन
वतरी ॥ ८ ॥ चाल ॥ आठकरमआडनालछो ॥ पुहुतनिनिवारोरेआजोजि ॥ क
रमतेआवनारुंधिये ॥ संवरसरसेरेकाजोजी ॥ ९ ॥ त्रोटका ॥ काजसेरसंवर
करतां ॥ पंचईंद्रिनिनदमो ॥ समकीतपालोदोषटालो ॥ सकलपरिसहेवखि
खमो ॥ चारित्रतेरप्रकारधरिने ॥ मनमाकडथिरकरो ॥ धर्मध्यानेतत्वध्यावो
॥ मुगतिनारिजीमवरो ॥ ९ ॥ चाल ॥ कर्मतणीदोयनिर्जरा ॥ सविपाकअविपा
कजाणोजी ॥ सहुजेसविपाकनिर्जरा ॥ बळेतेअविपाकआणजी ॥ १० ॥ त्रोटका
॥ अविपाकनिर्जराकरतुप्राणी ॥ कर्मजोयेजमगळी ॥ सारबारतपयेतपता ॥
णहनिर्जराहोयवळि ॥ चीदानंदमुर्तिसिद्धचिद्रुप ॥ सहजआप्पाध्याईये ॥

दशाकामकुंमार ॥ उठकोडवंदुभवपार ॥ १२ ॥ वडवाणीवडनयरसुचंग दक्षण
दिशागीरिचूलउतंग ॥ ईंद्रजितकुंभकरण ॥ तेवंदुभवसागरतरण ॥ १३
॥ श्रवणनदआदिमुनिसार ॥ पावागीरिवरशिखरमुझार ॥ चेलणानदितिनके
पाश ॥ मुगतिगयेवंदुनितनास ॥ १३ ॥ फलगोडीवडगामअनुप ॥ पश्चमदिशाड
रणागीरीरुप ॥ गुरुदत्तआदमुनिश्वरजिहा ॥ मुगतगयेवंदुनितनहां १४ वा
ळीमाहावाळीमुनिश्वरदोय ॥ नागकुंमारमळीयातरहोय ॥ श्रीअष्टापदमुग
तिमुझार ॥ तेवंदुनितसुरतसंभाल ॥ १५ ॥ अचलपुरकीदिशाईशान तींहांमेर
गीरिनापरधान ॥ साढीतिनकोडमुनीराय ॥ तिनकेचरणनमुचितलाय ॥ १६ ॥
वदलथलमलकआडधहोय ॥ पश्चमदीशाकुंथागिरीशोय कुलभुषण दे
शभुषणनाम ॥ तिनकेचरणकरुपरीणाम ॥ १७ ॥ जसोदरराजाकेसुतकहे
जेशकलकलापाचसेलहे ॥ कोडशिलामुनिकोडप्रमाण वंदनकरुंजोडि
जगुपान ॥ १८ ॥ समवशरणश्रीपासजिनेंद ॥ रसंदगुरुनयणानंद वरदत्तआ
दिपंचरुषिराय ॥ तेवंदुनितधर्मजहाज ॥ १९ ॥ तिनलोककेतिरथजिहां ॥

५४ ॥नितप्रतवंदनाकिजेतिहा॥मनवचनावसहितवरणाय॥वंदनकरितविक
७५ गुणगाय॥२०॥समतसमतरग्रेएकताल॥आग्रोग्रदद्यामीसुविशाल॥वहि
यावंदनकरोत्रिकाल॥जेनिरवाणकंडगणेमाल॥२१॥इतिनिर्वाणकांड
भाषासमाप्तः॥७॥ ॥७॥ ॥अथमनोरथमालालिख्यते॥जिनवरा
स्वामीमनधरी॥जिनवाणिनिश्चयकरि॥सारमनोरथमालागाइस्युं॥जिन
जी॥१॥अनादिकालनोजिवरुळो॥कुगुरुकुदेवकुधर्मफलो॥सतमारगवि
जणोबापडोए॥जिनजी॥२॥काललब्धीपामीकरी॥जीनधरमदृढधरी॥कु
गणवळेदर्शणमोहनिर्जराए॥जिनजी॥३॥उपशमवेदकक्षायिक॥सम
कितअतिनिर्मल॥चौथेगुणस्थानककहिहुंशोभिसुए॥जिनजी॥४॥भात
वशणकहिटालिसु॥आठमूलगुणपालिसु॥त्रिविधवैरागकहिहुंचितवसु
ए॥जिनजी॥५॥श्रावकनाव्रतआचरी॥दानपूजामहोत्सवकरी॥निर्ग्रंथपद
विकहिहुंपामीसुए॥जिनजी॥६॥तेरप्रकारचारित्रधरी॥घोरवीरतपआच
री॥त्रीकालनायोगधरीनयपरहरिए॥जिनजी॥७॥गीरीकंदिरअटविवन॥

रहियेएकाकिथिरमन॥मयणतणामानकहिहुंमोडस्युए॥जिनजी॥८॥रागद्वे
षसर्वपरहरि॥शत्रुमित्रसमोवडकरि॥निर्मळभावनाकहिहुंभावस्युंये॥जिन
जी॥९॥आतमध्यानकहिहिदिपस्युं॥बाविशपरिसहजिपस्युं॥समतासरोवरक
हिहुंझिलस्युए॥जिनजी॥१०॥परमादसर्वेदुरेकरि॥आहारविहारविकल्पहरी
॥मोहवैरिसुकहिहुंझुजस्युए॥जिनजी॥११॥क्षपकश्रेणिआरोहिए॥कर्मतणा
मलधोइस्ये॥निर्मळनाअनंतगुणकहियाइस्युए॥जिनजी॥१२॥शुकलध्यान
शस्त्रेकरी॥घातिकर्मसर्वनिरजरी॥केवलज्ञानकहिहुंप्रगटस्युए॥जिनजी॥
॥१३॥तमजीवनेउद्धरी॥शेषकरमनोक्षयकरि॥मुगतिनयरिकहिहुंजाइ
स्युए॥जिनजी॥१४॥हेवामनोरथजेकरे॥तेसहिमुगतिरमणीवरे॥सेवक
नेहतणागुणमनधरो॥जिनजी॥१५॥इतिमनोरथमालासमाप्तः॥७॥
॥अथअनुप्रेक्षालिख्यते॥विरजिनेश्वरपदनमी॥मभुवळिजिनवरदेवो
जी॥अनुप्रेक्षानेदगाईस्युं॥जिमहोयकर्मनोछेदोजी॥१॥त्रोटक॥छेदहोय
कर्मकेरो॥धर्मभावतेउपजे॥बारअनुप्रेक्षापगती॥मुगतिमारगनिपजे॥ज

५५ गजुगतीजोगीजाणजाणे ॥ मुनिवरवाणिनितसुणे ॥ नरअमरखेचरसूर
९६ अपामी ॥ जेअनुप्रेक्षाभणे ॥ १ ॥ चाल ॥ प्रथमतेभावनाभाविये ॥ अनीमदी
मेरेराजोजी ॥ हिरचिरवरचंचल ॥ अथिरआकोमलकायोजी ॥ २ ॥ त्रोटक ॥
कायकेश्रीरकमलकमला ॥ कनककलशकळावका ॥ जोवनधनधनपति
धराधर ॥ ईद्रईद्राणिसक ॥ प्रजातिराजाराज्यकरतो ॥ संध्याधुमनतसरख्यो
॥ एकरामरावणअथिरदिसे ॥ मुगतिसिद्धथिरजिनकह्यो ॥ २ ॥ चाल ॥
असरणदिशेरेसकवलि ॥ शरणनकोरेकोयजी ॥ छिणछिणखुरेरअ
युष ॥ राखिनशकेरेसोयजी ॥ ३ ॥ त्रोटक ॥ मोयीमृगलोसिंघग्रसियो ॥ ता
सशरणनहिकोयबळी ॥ तिमजिवनेजमराजदेखसलेईजायनेबळि ॥ मं
त्रतंत्रनेजडियमुळि ॥ कटकसुभटसहुदेखतां ॥ जन्ममरणजरादिपिड्या ॥
सिद्धशरणजवेखतां ॥ ३ ॥ चाल ॥ पंचप्रकारसंसारण ॥ सारनांसोरूपलगा
रोजी ॥ मकणनागळजगगळो ॥ केवलदुःखअपारोजी ॥ ४ ॥ त्रोटक ॥ अप
रमारारहितसंसार ॥ नमतामनेनाकाइयो ॥ द्रव्यक्षेत्रसुकालभावि ॥ न

यपूजासमाप्तः ॥ छ ॥ छ ॥ अथचतुर्थसरस्वतिपूजाप्रारभ्य
ते ॥ स्थापना ॥ छंदअडिल्ल ॥ श्रीजिनकीधुनिअद्भुरविन
घनसमखिरी ॥ गोतमआदिमहामुनिजनतणेकरलेपरी ॥ स्यादहा
अंगचतुर्दशपूर्वस्वेतिनी ॥ तेनासतिमेपूज्योंजगचूडामणी
१ ॥ ॐह्रींअर्हन्मुखोत्पन्नसरस्वतिश्रुतदेविएकादा
शअंगचतुर्दशपूर्वद्वादशांगश्रुतस्कंधायअत्रावतरा
वतरसंवौषटआव्हाननं ॥ १ ॥ ॐह्रींअत्रतिष्ठतिष्ठठःठः
स्थापनं ॥ २ ॥ ॐह्रींअत्रममसन्निहितोभवभववषट्स
न्निधापनं ॥ परिपुष्पांजलिंक्षिपेत् ॥ छ ॥ अथाष्टकं ॥ चाल
ललितछंदकी ॥ तथाजिनदासकृतजोगिरासाकी ॥ यथा
॥ देवनदीजलचंदनकुंकुमपरिमलशीतलधारा ॥ कंचन
झारीभरिकेसारीधोंत्रयधारीधारी ॥ १ ॥ आचलि ॥ तिर्थंक
रधुनिगणधरनेसुनिअंगरचेचुनिचारा ॥ सोजिनवाणीश्रि

वसुखदानीपूजनप्राणीसारा॥२॥ॐह्रींअर्हन्तमुखोत्पन्न
सारस्वतिसारदादेवीएकादशअंगचतुर्दशपूर्वद्वादशांग
श्रुतज्ञानमहाजलंनिर्वपामीतीस्वाहा॥जलं॥बावनचंदना व
कदलीनंदनदाहनिकंदनलायो॥नवदुखफंदनमुलतेख
दनपूजनवंदनआयो॥धातिरथंकर०॥ॐह्रींअर्हन्तमुखो
त्पन्नसरस्वतिसारदादेविएकादशअंगचतुर्दशपुर्वद्वाद
शांगश्रुतज्ञानमहागंधंनिर्वपामीतिस्वाहा॥गंधं॥२॥हिम
करलज्जितमोरतनसज्जितषटपदगुञ्जितसोरे॥नयनारञ्जित
जलकरिमज्जितअच्छतजज्जितप्यारे॥धातिरथंकर०॥ॐह्रीं
अर्हन्तमुखोत्पन्नसरस्वतिसारदादेवीएकादशअंगचतु
र्दशपूर्वद्वादशांगश्रुतज्ञानमहाअक्षतंनिर्वपामीतीस्वाहा॥
अक्षतं॥३॥सुमनसुमनसमगंधअनूपमबहुविधिउत्तम
मोहे॥पंचवरणकेसुरनाबनकेआचौमनकेमोहे॥धाति

नपंचपिओतर॥४॥सबसुरगनओंहाशीलाख॥सहसमा
सागवनेरसमसाख॥तीनलोकमंदिरइकगैर॥आवकोउहप
नलखवर्जेर॥ऊप॥समागवैसहसरमणिका॥आरिसयएकया
सिअधिक॥जोजनपछिमलंबेसार॥चौडुजोजनसाडैबार
॥८हा॥ऐचपुणागगणिसजोजन॥हमविजयारधपांडुकवंन
पचासजोजनकीलंबाइ॥पचीसजोजनकिचौडाइ ३७॥
साटासैतिसजोजनतुंग॥इहवक्षारकुलाचलचंगसोजो
जनकेलंबअवास॥चौडाईजोजनपंचास ३८ पचहतरि
जोजनउंचाई॥ऐसेविधिबाकीसबगाइ॥शिखरवंधमणिमा
यजोनंत॥इकसैधमुवसुमतिमाजोंत॥३९॥पांचपांचसैधनु
कीवई॥पदमासनपंचवरणमई॥अबसवजिनबिंबकोजो न
डा॥नौअरबअरु [illegible] विसकिरोडु॥४०॥तेपनलाखसहस सता
इसा॥नापरनोसैअडतालिस॥समवसरणमंडितजिनदेव॥व

९२ नै सुप्रातिहार्यादिक स्वयमेव ॥२१॥ अनंतचतुष्टय आदि अ
नंत गुण परगट जिम नीवसंत ॥२२॥ बकृत रचना विस्तार
तुच्छ बुद्धि किम पावै पार ॥२२॥ कृतिमाकृतिम चैत्य गृह चार
बार बार बंदौ कर जोर ॥ रतनको पार पवै जोय ॥ ताघर रिधि सि
धि सब होय ॥२३॥ घत्ता ॥ छंद दोहरा ॥ रहत अविनासी दे
वरा श्री जिन बिंब समेत ॥ हित चंद बंदन करौं ॥ आपने आत
म हेत २४ ॥ ॐ ह्रीं त्रैलोका संबंधी अष्ट कोटि षट् पंचाशत ल
क्ष सप्तनवति सहस्र चतुःशत एकाशीति अकृतिम श्री जि
नचैत्यालयेभ्यो महाजयमालार्घं निर्वपामिति स्वाहा अ
र्घं ॥ छंद अडिल्ल ॥२५॥ होऊ क्षेम कुशल राजा परजा तणी
होहु जैन धरम की वृधि अति घणी ॥ होहु जल वरषा सुर नि
त्यादिक यथा ॥ होहु सुगति मुगति सुख ज्ञाता सर्वथा ॥२६॥ इ
ताश्री वांदा: ॥५४॥ इति त्रैलोक संबंधी अकृतीम चैत्याल

जे पाम्या भवनो पार ॥१९॥ ग्या कपिल मुनिश्वर धीर ॥ जसु बाल रीजालो शरीर
॥ ग्या पांच पांडव जगि ओर ॥ जिने उपसर्ग जित्यो घोर ॥ २० ॥ ग्या सुकोशल जगि
वीर ॥ श्री सकुमाल स्वामी धीर ॥ ग्या नागकुमर जगी सार ॥ जिने पंचमी कियो उद्धा
र ॥ २१ ॥ ग्या देशभूषण जगि चंग ॥ कुलभूषण ध्यान अभंग ॥ ग्या सकलभूषण
गुणवंत ॥ श्रीलभूषण अतिजयवंत ॥ २२ ॥ ग्या गजकुमार जगि विर ॥ ते स्वामी
साहस धीर ॥ ग्या नविकदत्त जगि सार ॥ ते धर्मतणा भंडार ॥ २३ ॥ ग्या चारुदत्त
जगि वीर ॥ जेह नवकार सिखो धिर ॥ ग्या साहस सुदर्शन चंग ॥ जिने पाल्यो शील
अभंग ॥ २४ ॥ ग्या जंबुस्वामी कुमार ॥ जिणे रण भूमि जिस्यो मार ॥ ग्या अमितग
ति मुनिराय ॥ जिने पाम्या शिवपुरि ठाय ॥ २५ ॥ ग्या बालि मुनिश्वर देव ॥ जिने रा
वणो अष्टापद देव ॥ ग्या सुग्रीव आदे विर ॥ नल नील पाम्या भव तीर ॥ २६ ॥ ग्या श्रें
णिक रणो जगि मल्ल ॥ जिने दैयन रा रखु सल्ल ॥ ग्या ईड जित मेघकुमार ॥ जिने ला
धो मुक्ति द्वार ॥ २७ ॥ ग्या विभिषण गुणवंत ॥ श्री हणवंत अंजनी पूत्र ॥ ग्या भरत
शत्रुघन विर ॥ लवणांकुश साहस धीर ॥ २८ ॥ ग्या सप्तऋषि मुनिराय ॥ जे सिद्धी

५२ वंतगुणकाय ॥ ए विश्नुनंदिगुणवंत ॥ अपराजितस्वामीजयवंत ॥ ३९ ॥ ए
९३ गोवर्धनभद्रबाहु ॥ श्रुतज्ञानिगुणगेह ॥ ए कुंदकुंदाचारीज ॥ जिने सम
सारकियो बिज ॥ ४० ॥ एउमास्वातिभवतार ॥ जिने कियो तत्वारथसार ॥ ए
अनरुषिब्रह्मचारी ॥ जिने संबोधि वंडमारि ॥ ४१ ॥ ए सकलकिर्त्तिगुणमा
ल ॥ जिने जिसो पंचमकाल ॥ ए अनेक मुनिश्वरराय ॥ जिव तेना कह्या नजाय
॥ ४२ ॥ होइ एक सुणो जयवंत ॥ हवे नहोशे वजयवंत ॥ होइ एक कर्म तृखपि ॥
आपण पुरण तृभिशे पि ॥ ४३ ॥ ए बाविश परिसहा वीर ॥ तेजसा आआ धीर ॥
ए मुक्तिनयरको राय ॥ तु जलेवा नहि दिसे आज ॥ ४४ ॥ एआठकरमसरवाय ॥ ए
आगलसुरकिराजाय ॥ एसबलइणे संसार ॥ ईणि त्रिभुवन आणि हार ॥ ४५
॥ तु शिलसंभाराहवेलेई ॥ उपशमगजआरोहि ॥ तपखडगकरे धरी ॥ तृधीर
पणुबकककरि ॥ ४६ ॥ तुआराधनालेआरी ॥ तेच तुरंग समाविचारी ॥ लक्ष चोरा
सीगुणसार ॥ तेलेतूं बहुपरिवार ॥ ४७ ॥ हवे संमारणतु मिजावो ॥ तह्मे पाछो
छेणि धरे पाव ॥ एपरिषा छेबलवंत ॥ तह्मे जावु जयवंत ॥ ४८ ॥ होराउतमां

डु काढि ॥ पाई छडि रणतुमी वाटी ॥ होराउतत्ंआतिसुर ॥ हवे जिपो रिपुदल पुर
॥ ४९ ॥ होराउत तृहसार ॥ मत आवे तु जेने हार ॥ होराउत साहसधीर ॥ तुं आरिआ
रणी वीर ॥ ५० ॥ करे ध्यान धनुष लेई जाण ॥ रत्नत्रय तिक्षण बाण ॥ ते बाण मुको
निरुताई ॥ जिम रिपुदल नागा जाई ॥ ५१ ॥ तुजलाधोजिनवरधर्म ॥ हवे छेदि सय
लडः कर्म ॥ हवे क्षमा करि जे ताई ॥ जिम जिपो सयल कषाय ॥ ५२ ॥ निजामणि क
हि सार ॥ ते सयल सुखनंडार ॥ जे क्षपक सुणो ये चंग ॥ तें सीख्य पामे अनंग ॥ ५३
॥ श्री सकलकिर्त्तिगुरु ध्याउ ॥ मुनि त्रिभुवनकिर्त्तिगुणगाउ ॥ ब्रह्मजिणदास नणे
सार ॥ निजामणि भवतार ॥ ५४ ॥ इतिश्री ब्रह्मचारी जिणदासकृत विनेक्षप
कनिजामणि समाप्तः ॥ ॥ छ ॥ ॥ अथ निर्वाणकांडलिख्यते ॥ डुका ॥ श्री
वितरागवंदु सदा ॥ भावसहित सीरनाम ॥ कहुं कांड निरवाणकु भाषाविवि
ध बनाय ॥ १ ॥ चोपाई ॥ श्री अष्टापद आदिश्वरस्वाम ॥ वासपूज्य चंपापुरि नाम
॥ नेमनाथस्वामी गीरनार ॥ वंदु भावभगत उरधार ॥ २ ॥ सर्व तिर्थंकर समशरीर
॥ पावापुरिस्वामी माहावीर ॥ सिखरसमेदजिनेश्वर विश ॥ भावसहित वंदु जगदी

५२ आ॥२॥ वरदत्तरउअरआणंदमुनिंद॥ सायरदत्तआदिगुणवंत॥ नगरीतारापु
९४ रमुनिउठकोड॥ वंदुंभावसहितकरजोड॥३॥ श्रीगिरनारसिखरविख्यात
कोडबोहोत्तरअरुसातसात॥ संबुप्रद्युम्नकुमारदोयभाई॥ अनुरुद्धआदि
नमुनसपाय॥४॥ रामचंद्रकेसुतदोयवीर॥ लाडनरेंदआदिगुणधीर॥ पंच
कोडमुनिमुगतिमुझार॥ पावागीरीवंदनिरधार॥५॥ पांडवतिनद्रवडराजान
॥ आठकोडमुनिमुगतिप्रमाण॥ श्रीशेत्रुंजासिखरकेथान॥ भावसहितवं
दुजगदिश॥६॥ जयबलिभद्रमुगतमेंगये॥ आठकोडमुनिओरहूनये॥ श्रीगज
पंथसिखरसुविशाल॥ तिनकेचरणनमुत्रिकाल॥७॥ रामहणूंसागरवस
नील॥ गवगवाख्यनिलमहानिल॥ कोडनवाणुमुगतिप्रमाण॥ तुंगीगिरवं
दुनिर्वाण॥८॥ नंगअनंगकुंवरसुजाण॥ पंचकोडनेउधप्रमाण॥ मुक्तिग
येशोनागिरिशिश॥ तेवंदुंभवनापतिईश॥९॥ रावणकेसुतआदिकुमार
॥ मुगतगयेरेवातटसार॥ कोडपांचअरुलाखपचाश॥ तेवंदुंधरिपरमउ
ल्लास॥१०॥ रेवानदिसिधवरकोट॥ पंचमदिशादोअनागरिछोट॥ दोयचक्री

दुखनअछेद॥४६॥ हवेमानवगतिदुखप्राय॥ नाधीछेसाधुआप॥ होयासंयो
गवियोग॥ चिंतादुखआरतिरोग॥४७॥ हवेदेवलोकदुखहोय॥ तेजाणोविरला
कोय॥ होमनमांदुखअतिशाले॥ पणपुण्यविनासुखकोनविआले॥४८॥ हवे
मुक्तिस्थानसुविचार॥ जीहांसौख्यअनंतअपार॥ ताहांअजरामरसिद्धहोय॥
सहिकालअनंतासोय॥४९॥ एकांतरहोयनकाली॥ आपणपुरवमनीपालि॥
तुंपरमहंसपरदेव॥ तेध्यावोकरइसेव॥५०॥ होआप्पादंसणणाण॥ होआप्पा
संजमजाण॥ होआप्पागुणगंभीर॥ होआप्पाशिवपदधीर॥५१॥ परमाप्पापर
मवछेदि॥ परमाप्पाअकलिभेदी॥ परमप्पाकेवलदेव॥ ईमजाणिअप्पासेवु॥
५२॥ हवेदेहेजाणविचार॥ घणुकहीयेकेमोअपार॥ लेईअणशणदीक्षाजाण
॥ संथारेछांडेप्राण॥५३॥ संथारातणाफलजोय॥ होस्वर्गरिधीसुखहोय॥ वली
आकमुकुलपामी॥ लहियेनिर्वाणमुक्तिगामी॥५४॥ जेनरसुणेनरनारि॥
तेजायभवनेपार॥ श्रीदीगंबरयतिकह्योविचार॥ आराधनाप्रतिबोधसार॥५५॥
॥इतिश्रीआराधनाप्रतिबोधसमाप्तः॥छ॥ ॥छ॥ ॥श्री॥ ॥छ॥

५० ॥ अथ श्री निजामणि लिख्यते ॥ श्रीसकलजिनेश्वरदेव ॥ कुंतस्यपाये करुं
९३ सेव ॥ कर्वे निजामणि कज सार ॥ जिम स्वपक तरे संसार ॥ १ ॥ होस्यपक सुणो जि
नवाणि ॥ संसार अथिर तु जाणि ॥ इहां रह्या नहि को इथिर ॥ हवे मन दृढ करो
निज धीर ॥ २ ॥ ग्पा आदिश्वर जगीसार ॥ ते जुगला धर्म निवार ॥ ग्पा अजित जिनेश्व
र चंग ॥ जीने कियो कर्म नो भंग ॥ ३ ॥ ग्पा संभव भव हर स्वामी ॥ ते जिनवर मुक्ति
हि गामी ॥ ग्पा अभिनंदन आनंद ॥ जिणे मोड्यो भव नो कंद ॥ ४ ॥ ग्पा सुमति सुम
ति दातार ॥ जिने रणानुमी जिसो मार ॥ ग्पा पद्मप्रभ जगि वास ॥ जे मुक्ति तणा निवा
स ॥ ५ ॥ ग्पा श्रीपार्श्व जिन जगीसार ॥ जस सुपास न रहियो सार ॥ ग्पा चंद्रप्रभ जगी
चंद ॥ जिने त्रिभुवन कियो आनंद ॥ ६ ॥ ग्पा पुष्पदंत जगी राय ॥ जिने लिधो शिव
पुरि ठाय ॥ ग्पा शीतल इणो जगि जाण ॥ जस मधुरी अशीतल वाण ॥ ७ ॥ ग्पा श्रेयां
स जगी देव ॥ जस सुर नर करे बहु सेव ॥ ग्पा वासपूज्य जिनराय ॥ तस सुईंद्र पुजा
पाय ॥ ८ ॥ ग्पा विमल जिनेश्वर राय ॥ जिने निर्मल किधी काय ॥ ग्पा अनंत जिनेश्व
र वीर ॥ ते अनंत ज्ञान गंभीर ॥ ९ ॥ ग्पा धर्मनाथ देई धर्म ॥ तीर्णे छेदिया शीयल

दुःकर्म ॥ ग्पा शांति जिनेश्वर शांति ॥ तिर्णे त्रिभुवन भाजी भ्रांति ॥ १० ॥ ग्पा कुंथुनाथ
दयावंत ॥ जिने पाळिया अति बहु जंत ॥ ग्पा अरनाथ जयवंत ॥ जिने जिसो रति
पति कंत ॥ ११ ॥ ग्पा मल्लिनाथ जगि मल्ल ॥ जिने जिस्यो ते निस सल्ल ॥ ग्पा मुनीसुव्र
त जगि सार ॥ जिने पाल्यो महाव्रत भार ॥ १२ ॥ ग्पा नमि जिन स्वामी धीर ॥ तस वन
मे सुरासुर वीर ॥ ग्पा स्वामी नेम कुमार ॥ जिने राख्यो जिव संघार ॥ १३ ॥ ग्पा पास
मुक्ति निवास ॥ जिने तोडियन भव निश्वास ॥ ग्पा जिनवर स्वामी वीर ॥ ते त्रिभुवन
तारण धीर ॥ १४ ॥ ग्पा चक्रेश्वर जगी वार ॥ तूं सांभल इणो संसार ॥ ग्पा भरतेश्वर
गुणमाल ॥ जिने स्थाप्या ब्राह्मण विशाल ॥ १५ ॥ ग्पा सगर नरेश्वर जाण ॥ जिने के
वल कियो निर्वाण ॥ ग्पा मघवा सनतकुमार ॥ श्री शांति जिनेश्वर सार ॥ १६ ॥ ग्पा कुं
थुनाथ अरस्वामी ॥ ते मुक्ति नारि जिने पामी ॥ ग्पा पद्म षेण हरिषेण ॥ सुभुम मर
क माहि षीण ॥ १७ ॥ ग्पा जयसेन गुणवंत ॥ ते मुक्ति रमणि वर कंत ॥ ग्पा ब्रह्मद
त्त चक्रधर ॥ तेणे पाम्यो नरक ते घोर ॥ १८ ॥ ग्पा बलिभद्र जगि नव ॥ तुं सांभल
मन करि षेव ॥ ग्पा विजय अचल श्री धर्म ॥ सुप्रभ सुदर्शन जिस्या कर्म ॥ १९ ॥

५९ एनंदिहलधरचंग । बलिनंदिमित्रउत्तंग । एरामचंद्रगुणवंत । तेत्रिभुव
७२ नदिवाजयवंत ॥ २० ॥ एपद्मबलिनरजुचंग । आनेपांम्यास्वर्गउत्तंग । एवा
सुदेवजगिनव । तुम्हांनलमनधरीषेव ॥ २१ ॥ एत्रिपृष्टद्विपृष्टस्वयंभु । पुरुषो
त्तमत्रिखंडस्तंभ । एनरसिंहपुंडरिक । दत्तलक्ष्मणनीशंक ॥ २२ ॥ एकृ
ष्णयादवसहित । नृपकसांभलेजयवंत । एप्रतिनारायणनव । तुम्हांन
लमनकरिषेव ॥ २३ ॥ एअश्वग्रीवकतारकसार । मधुसुदनगुणधार । ए
मधुक्रिडनगुणवंत । प्रहराणबलिजयवंत ॥ २४ ॥ एरावणजरासंघराय ।
तेत्रिखंडपालणकाय । एत्रिषष्टिशलाखाचंग । एपुरुषोत्तमउत्तंग ॥ २५ ॥
एचौदसेबावन्न । श्रीगणधरजीकियमन्न । एगणदशजगिरुड । जिनेमं
दकिधीनिजबुद्ध ॥ २६ ॥ एनवनारदशीलवंत । नृपकसांभलेजयवंत । ए
कामदेवचौवीश । तेलक्षणछेबत्रीश ॥ २७ ॥ एबाहुबलिसुजाण । जिणेप्र
थमकीयोनिर्वाण । एश्रीयांसदेईदांन । जिनेपाम्योत्रिभुवनमान ॥ २८ ॥
एजयकुमारजयवंत । तेगणधरऊवाबलवंत । एसंयायतनजगिसार ।

हिसिकोइ । हवेछेमापहरोसंमास । जिमकर्मनलागेघाय ॥ २६ ॥ तेयात्राकरि
जगमांहि । संभारेतेमनमांहि । गीरनारेगयोतूंधीर । संभालेहवडांविर ॥ २७ ॥
पावागीरपुण्यभंडार । संभालेहवडांसार । सेत्रुंजोगीरसुखधाम । संभालेहवडां
नाम ॥ २८ ॥ तारंगोतारकहोय । संभाळेहवडांजोय । अष्टापदगीरिकैलास । सं
भाळेपुरवेआश ॥ २९ ॥ रत्नत्रयव्रतकरहोय । संभाळेहोसुखसोय । उत्तमोला
कारणसार । संभाळेवारंवार ॥ ३० ॥ होदशलक्षणिधुरिधर्म । संभालेजीमहोण
कर्म । हवेअनुपेक्षाछेबार । संभाळेसमरेसार ॥ ३१ ॥ हवेसुगटसुणोरणंग
रखेनीमनणोहोयभंग । तेनिमलियोगुरुसाखे । हवेदोहिलिवेळाराखे ॥ ३२ ॥
तेसंघसाखिलियोनिम । हवेजांजीवुतांसीम । तुजअपछरपांडुरवइवारि । ह
वेजिसोतंमाहारि ॥ ३३ ॥ होसाधुसुभरणसार । तंजिसोकरिजयकार । होराउ
नपुटगाळपेलि । नाडूघरपडसुमेलि ॥ ३४ ॥ तेदेहपालीअतिदीश । हवेछांडेआ
रिजगीश । होक्षपनकसादसरवेलि । हवेकोककळेवरमेल्हि ॥ ३५ ॥ तंवैदवा
सिमांथाये । स्वाधीनपणुआराहि । हवेकाटनुकीछांडी । परमार्थमनलेईमां

४९ डी ॥४६॥ जे धूणइ ते सविधाय ॥ ते जाजइ दुर्गति वाय ॥ जे पूछइ कतारण रवाणि ॥ ते कु
५० डा पाखंड जाणि ॥४७॥ धन्न माय बाप तु जसार ॥ जुजी वृतइ संसार ॥ हेम्रावक
नाक्षि वेश ॥ पण वा नगरई पर देश ॥४८॥ हवे लेइ पांच वृत सार ॥ जिम पामो सुख
भंडार ॥ तु जिव दयाप्रतिपालि ॥ प्रमाद कहं साटालि ॥४९॥ जे जिव हींसा नं कि
ध ॥ हवे अनयदान ते हदीध ॥ जे हचगति मांहि छे जीव ॥ ते सर्व दुःख मा वोम्र हि
व ॥५०॥ हवे बीजु वृत मन आणि ॥ तु सत्य वचन सहि जाणि ॥ जे कूड्यां कर्क
स कठोर ॥ ते टालि वचन तू सार ॥५१॥ हवे त्रीजु वृत लेई धीर ॥ धन आराम मुको
शरिर ॥ धन फल लिजे निजहाथि ॥ जिन पूजा करो आवे साथि ॥५२॥ हवे चोथु
वृत लियेसार ॥ महिशील रयण सिणगार ॥ तु नारि शील पलई मजाण ॥ मनी मा
य बेन सम आण ॥५३॥ हवे पंच मु वृत प्रतिपालि ॥ तु परिग्रह दुरि टालि ॥ क्रोध
न कंकण मोह मेलि ॥ संतोष साह सखेलि ॥५४॥ हवे चउगति फेरो टाल ॥ मन
जा तु सकज दिशिवार ॥ क्षो नरक दुख न विपार ॥ ते केता कज विचार ॥५५॥ हवे प
रगति परवश होय ॥ तु देहे विचारि जोय ॥ सहे तु खन तरष बजने द ॥ वहेनार

करि जब ताश ॥६॥ हवे सर्व परिसह जीपी ॥ अनंतर ध्यान दीपी ॥ वैराग्य धरे मन
माहि ॥ मन मा कड गाढूं साहि ॥७॥ सुणे देह रोग अपार ॥ नव लाध्यो रयण मा
हान ॥ हवे भोजन पाणि छांडि ॥ मन लेई मुक्ति मांडि ॥८॥ हवे सण ठण खूंट आ
य ॥ संथारे छांडो काय ॥ तुं ईन्द्रिय वसि करि धीर ॥ करं वमोह मेले वीर ॥९॥
हवे मन गज गाढूं बांधि ॥ तूं मरण समाधि साधि ॥ जे साधुं मरण सुनेय ॥ त्या स्व
र्ग मुक्ति गणेय ॥१०॥ त्या जिनवर युग चोविस ॥ मांरहिया बार चक्रीश ॥ त्या बल
भद्र नव वीर ॥ नव नारायण त्या धीर ॥११॥ त्यारे तेश्वरे दईदान ॥ जिन शासन रा
खि मान ॥ त्या बाहुबलि जगि मल्ल ॥ जेणे हैये नां राख्यु शल्ल ॥१२॥ त्या पांडव चवि
परलोय ॥ जे हजमलिन तिजयणि कोई ॥ नाति मां कळगळे घालि ॥ तो हे तिण
न गया त्या नीम ॥१३॥ त्या रामचंद्र गुणिरंग ॥ जेणे साध्यो नसज अनंग ॥ त्या कंमक
रण जगी सार ॥ जेणे धर्यो महाव्रत भार ॥१४॥ त्या लंका नविषण राय ॥ जेणे कै
ये धर्यो सम भाव ॥ त्या ईन्द्रजित मेघनाद ॥ जेणे जित्यो कर्म विवाद ॥१५॥ त्या वे
टांग सुग्रीव ॥ जेणे हास्य मनाव्यो टव ॥ त्या वालि मुनिश्वर मोटा ॥ जेणे तप क

५८ रिकायासोष ॥ १६ ॥ ग्याहणमंतपवनजअपूत्त ॥ जेआपकाजिनविस्तुत्त ॥ ग्या
६९ लवज्रकुआरामकुमार ॥ शिलासुमजतिसार ॥ १७ ॥ सुकुमालसुकोमलसा
र ॥ जिणेसह्यापरिषानार ॥ जेजंबुअधन्यकुमार ॥ तेहछोडिरिद्धिअपार ॥ १८
॥ श्रीपालसुदर्शनधीर ॥ ग्याशीलफलेनवतीर ॥ ग्यागौतमगणधरसार ॥ जे
हेरचियाशास्त्रअपार ॥ १९ ॥ श्रीशकलकिरतिगुरुसार ॥ जिनमानकरयाउ
दार ॥ हवेजेतागयाजगमाहि ॥ सहिनेताकह्यानजाये ॥ २० ॥ होतपरातनरवं
डकाढि ॥ हवेकर्मतणिभूमिवाढि ॥ होसुनटसंजमकरिबेल ॥ हवेथोडुआय
दिवेल ॥ २१ ॥ लेईतपधनुषध्यानबाण ॥ जिमवेगेजायनिर्वाण ॥ होधोरिय
धुणमांसिरा ॥ ग्याजखियावजलादीरा ॥ २२ ॥ होधोरियधुणमांबंध ॥ हवेडर
गयोनवबंध ॥ होधोरियधर्मसांमेह्ल ॥ आणंदहैडेखेले ॥ २३ ॥ होरागद्वेषम
हिछांडि ॥ आपणपूधर्ममांडि ॥ होधोरियधर्मसंमालि ॥ तमापडेशमायाजालि
॥ २४ ॥ होधोरियदशलक्षणीलेवि ॥ रत्नत्रयतपधनसेवि ॥ होधोरियथिरक
रिहाष्टि ॥ हवेहैडेधरपंचपरमेष्टि ॥ २५ ॥ होधोरियधर्मसंयोगे ॥ जमडर्जनन

वणोतोघरमारहेके ॥ सबसेहोयनिराला ॥ मातपीतासुतत्रीयाकुसुंपे ॥ मित्र
परीग्रहआदेकारा ॥ ८ ॥ कुचचईतालेकुचआवकजन ॥ कुचउरवीयाधन
दई ॥ क्षमाक्षमासबसुकरके ॥ आशमनकिसबनाही ॥ ९ ॥ शत्रुनसुनीजा
मीलकरजोडे ॥ मीबोतकरिबुराई ॥ तुमसेमाजनकुंडरवदिना ॥ तेसबबकसोजा
ई ॥ १० ॥ धनधरतिजोमुखसुंमागे ॥ सोसबदेसंतोसे ॥ छजेकायकेप्राणीउपर
॥ करुणाभावजरारवे ॥ ११ ॥ निजघरबईंठाकजगाकछु ॥ भोजनकछुपयले
॥ डधाधारक्रमक्रमतजके ॥ छाशआहारहीले ॥ १२ ॥ छाशलागकेपाणिराखे
॥ पाणितजसंथारा ॥ भूममाहीथीरआसनमाडे ॥ साधरमीढिगप्यारा ॥ १३ ॥
जबतुमजाणएहनिजपदजबजिनवाणिकहियो ॥ येकहमोनलीयोसंन्या
सी ॥ पंचपरमपदगहियो ॥ १४ ॥ आरुआरधनमनध्याव ॥ बारभावनाभाव ॥ दश
लक्षणमुनधर्मबीचार ॥ रत्नत्रयउरलाव ॥ १५ ॥ पसीसजोलारवटपाणआसो
॥ दोणकबरणबिचार ॥ कायातेरीडरवकीदेरी ॥ ज्ञानमईतुसार ॥ १६ ॥ अजर
अमरनिजगुणगणपुरे ॥ परमानंदसुभावे ॥ आनंदकंदचीदानंदसाहेब ॥ तीन

५७ जगतपतधाबु ॥१७॥ छुधातृषादिक होयपरीसा ॥ सहेभावसंखेरा ॥ अतीचा शरव
६८ रपांचुसबत्याग ॥ ज्ञानसुधारसचाखव ॥१८॥ हाडचरमरुजाअसुकेतव ॥ धरम
लिनतनत्याग ॥ अद्भुतपुन्यउपायहोयजव ॥ मेजउभोजाग ॥१९॥ हाभआ
वेशीवपदपाव ॥ बीलसोसुखअनंत ॥ दानतमोगतहोयदमारी ॥ जिनधरमज
ईवंता ॥२०॥ इतिसमाधिमरणसमाप्तः ॥छ॥ अथआराधनाप्रतिबोधा
लिख्यते ॥ श्रीजिनवरस्वामीनमवि ॥ गुरुनिग्रंथपायप्रणमी ॥ कहुंआराध
नासुविचार ॥ संक्षेपेसारोउधार ॥१॥ हेक्षपकवयणअवधार ॥ हवेचाल्योतु
भवपार ॥ होसुभटकाजतुजनेट ॥ धरिसमकितपालोनेह ॥२॥ हवेजिनव
रदेवआराहि ॥ तूंसिद्धसमरमनमाहि ॥ सुणजिवदयाधुरिधर्म ॥ हवेछांडे
अनेरांकर्म ॥३॥ मिथ्यातकुशंकाटालि ॥ गणधरगुरुवचनपालि ॥ हवेज्ञान
धरेमनधीर ॥ ल्योसंजमदुर्नविर ॥४॥ तपप्रायश्चीतकरीउतशोधी ॥ मनव
चनकायनिरोधि ॥ तूंक्रोधमायामदछांडि ॥ आपणपूंशीलेमांडि ॥५॥ हवे
क्षमाक्षमावोसार ॥ जिमपामोसुखभंडार ॥ तूंमंत्रसमरिनवकार ॥ धीरातन

परिहानिनकीजै ॥१७॥ जिनसासनतपग्यानध्यान ॥ प्रभावनाकीजै ॥ वात्सल्यप
रवचनपालीये ॥ मननीश्चेआणी ॥१८॥ सोलहभावनाभाविकरी ॥ गुरुपाशेवा
रवाणी ॥ दिनदिनप्रतेजिनपूजिये ॥ निशिजापजपीजै ॥१९॥ दोषसेउप्पन्नउजाव
णो ॥ मोदकधोईजै ॥ मुनिवरअर्जिकासघलसंघ ॥ पूजाकरीजै ॥२०॥ चारणगु
णो ॥ मोटकधोईजै ॥ ...
रूपायनमी ॥ व्रतदृढकरीलीधो ॥ अंतकालसंन्यासकरी ॥ दृढमरणविशुधो ॥
२१ ॥ रविप्रभनामविमानजांण ॥ विद्युत्प्रभदेव ॥ सोलमेस्वर्गदेवलोक ॥ उपनो
तेदेव ॥२२॥ बावीससागरआयुकह्यु ॥ तीनहाथशरीर ॥ आठरिद्धिउपानति
हां ॥ मनभोगसुवीर ॥२३॥ जिनचैत्यालेपूजाकरे ॥ तेमुनीसववंदे ॥ सुखनिरंत
रभोगवे ॥ चिरकालअनंत ॥२४॥ जंबुदीपेमेरुथकी ॥ पूर्वविदेह ॥ अमरावति
देशमांहिसोहे ॥ अमरमनमोहे ॥२५॥ गंधर्वसीसोहामणो ॥ राजासिमंकर ॥ महा
देवितशानारीसार ॥ पुत्रगुणधर्म ॥२६॥ तीर्थंकरपुत्रजांण ॥ जीवंधरतशानाम ॥
पंचकल्याणकभोगवे ॥ सुखकोगुणधाम ॥२७॥ अनेकउपदेशविहारकरी ॥ त
वियणप्रतिबोधा ॥ आठकर्मनिहांणीकरी ॥ गयामुक्तिअबाध ॥२८॥ एकचित्त

५६ जेव्रतकरे।।नरअथवानारि।।तीर्थंकरपदजैलहे।।तेसमकीतधारी।।२९।।
६७ सकलकीर्त्तिमुनिरासकीयो।।जेसोलहकारण।।भणेसुणेजेसांभले।।तेह
नेस्वर्गवासे।।३०।।इतिश्रीषोडशकारणव्रतकथालघुसंपूर्णः।।छ
।।अथसमाधिमरणलिख्यते।।गौतमस्वामीवंदसिरनामी।।मरणसमाधि
भलाहै।।मीकयपाउनीसदीनधाउ।।गाउवचनकलाय।।१।।देवधरमगुरुप्री
तमहादीढ।।सातव्रसनव्रहिजाण।।सागबावीसअभषनहीअसंजम।।बारव्रत
नितगाणु।।२।।चक्रीउखलचूलाबुवारी।।पाणिअज्ञानबीराधु।।बनजकरहु
परद्रवहरहुंनहि।।कर्मलुनईससाधु।।३।।पूजाशास्त्रगुरुकिसेवा।।संजम
तपचउदानी।।परउपकारिअलसअहारी।।सामायिकविधज्ञानी।।४।।जाप
जपुतीहुंजोगधरथिर।।तनकीममताटालु।।अंतसमयवैरागसंभालु।।ध्यान
समाधिविचारहुं।।५।।आगलगेऊरनावजडुबे।।धर्मबिघनजबआवे।।चार
प्रकारअहारत्यागकर।।मंत्रसुमननेमध्यावो।।६।।रोगअसाधजोराव्रदेखे
।।कारणऊरनिहारे।।बातबडीहैयेजोबनिआवे।।भारसुवनकोटाले।।जोन